ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३६१ म अंक ०१ नवम्बर २०२२ (वर्ष १५ मास १७९ अंक ३६१)

(विदेह www.videha.co.in)

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।


Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

 भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html कन रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*
ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

 विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत

छथि, संगहि ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठौताह। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ओ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यांतरण आ ताहि वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ओ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ओ सभ बिना कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha e-Journal: Issue No. 357 at www.videha.co.in



समानान्तर परम्पराक विद्यापति-
चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनूमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्षर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मान आखर नुपी खास निर्माण कऽ अध्ययन (*गद्य-पद्य नुपी*) मंच ॐ नौ वाइल जाय गँ ऐ त्रिभुवननुपी उत्तम ठाकुर कीर्तिनुपी लक्ष्मी कला परसना।

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.४.कनुप्रिया- हमर बड़ी मौसी

२.५.मुन्नी कामत- मैथिलीक सशक्त रंगकर्मी प्रेमलता मिश्र प्रेम

२.६.जया झा- हमरा लेल प्रेमलता दी

२.७.उषाकिरण खान- हमर बड़ी (प्रेमलता)

२.८.हरिनाथ झा- ओ दिन ओ पल : प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

२.९.शुभनारायण झा- मैथिली रंग मंच क पितामही प्रेम लता मिश्र 'प्रेम'

२.१०.विभा रानी- 'रंगमंच स नाता कियो नहिं तोड़ैत छै'

२.११.डॉ शिव कुमार मिश्र- मिथिलाक विदुषी परम्पराक अनुपम-स्वरूप श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

२.१२.आशीष अनचिन्हार- कला लेल वरिष्ठता नै दक्षता मायने छै

२.१३.आभा झा- रंगकर्मी प्रेमलता मिश्रक साहित्यिक छवि- डा दिन डा यल

२.१४.मनोज झा- नारी सशक्तिकरणक अग्रदूत, मैथिली नाट्य मंचक पहिल सशक्त महिला रंगकर्मी आओर मैथिली फिल्म मे ममता क साकार प्रतिमूर्ति डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

२.१५.प्रेम कान्त चौधरी- डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' : मिथिलाक विलक्षण विदुषी आ प्रेरणात्मक व्यक्तित्व- जेना जनलियैन्ह

२.१६.कमलेन्द्र झा 'कमल'- मिथिलापुत्री

२.१७.लक्ष्मण झा सागर- प्रेमलता बहिन

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क वन्दन

२.१९.अजित कुमार झा- मैथिली रंगमंचक प्रेरणास्रोत: श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम

२.२०.प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'सँ साक्षात्कार जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' द्वारा

२.२१.उदय चन्द्र झा 'विनोद'- प्रेमलता प्रसंग

२.२२.प्रदीप पुष्प- मैथिल नारीक सांस्कृतिक- साहित्यिक स्वप्न - प्रेमलता मिश्र प्रेम

ऐ अंकक अन्यान्य रचना

३.गद्य खण्ड

३.१.उमेश मण्डलक ७ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.२.उमेश मण्डलक ७ टा कथा- कथा-२ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.३.उमेश मण्डलक ७ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.४.उमेश मण्डलक ७ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.५.उमेश मण्डलक ५ टा कथा- कथा-५ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.६.कुमार मनोज कश्यप- १ टा लघुकथा- श्रद्धा-सम्मान

३.७.जगदीश प्रसाद मण्डल- अपन रचित रचना

३.८.जगदीश प्रसाद मण्डल- माटपर (धारावाहिक उपन्यास)

३.९.रोशन जनकपुरी- बुढ़िया आ मन्ताक खिस्सा

३.१०.प्रेमशंकर झा 'पवन'- जनकवि 'मैथिली पुत्र प्रदीप' (प्रेम शंकर झा 'पवन'क मैथिली पुत्र प्रदीपपर आबैबला निबन्ध भावात्मक अंश)

३.११.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- १४म खण्ड

३.१२.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (भाग- ८)

३.१३.डा. विपिन कुमार झा- महाकवि भास प्रणीत कर्णभारम् मैथिली अनुवाद (भाग-५)



ऐ अंकमे अछि:-

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३५६ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१

ई अंक प्रमिला मिश्र 'प्रेम' पर विशेषांक अछि। ओ विषयपर सम्पादकीय कने नम्हर भऽ गेलै तेँ अलगसँ डाकना देल जा रहल अछि। साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी आ संगीत नाटक-अकादेमीक सम्मान/ पुरस्कारसँ बेसी महत्वपूर्ण विदेहक विशेषांक भऽ गेल अछि से उद्घोष पाठक लोकनि सोशल मीडियापर व्यक्त कएलन्हि अछि। सभ सहयोगी आ पाठकगणकेँ धन्यवाद।

२

उमेश मण्डलक ७ टा कथापर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Parallel Literature

The references to parallel literature are found in Vedas, where Narashanshi is referred to as parallel literature.

Parallel Literature in Maithili

The need for parallel literature in Maithili arose due to the constant onslaught on literature and dignity by the Public and Private Akademies, for example, Maithili-Bhojpuri Akademi of Delhi, Maithili Akademi of Patna, Sahitya Akademi of Delhi, Nepal's Prajna Pratishthan, all of which are government Akademies. In addition to these Akademies the onslaught on Maithili Literature and dignity was constant done by the so-called literary associations which were recognised by the Sahitya Akademi and were the main tool for usurping all the literary space meant for this language. Besides these, the funding to these and other parochial associations and organisations led to the presentation of an interface in the name of Maithili, which was mediocre and non-representative.

VIDEHA MAITHILI LITERATURE MOVEMENT AND A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE

Therefore, the missing portions, the ignored and non-represented aspects of society, were started to be chronicled. It led to the depiction marked by the richness of vocabulary and experiences and was a revolution in literature and art as far as people speaking Maithili are concerned. The quality now not remained mediocre. The real power of Maithili language was realised by the native speakers, mediocrity was replaced by excellence. This attempt of writing of History of Parallel Literature for the Maithili Language arose as the mediocre agency (private and governmental) funded so-called mainstream literature, which has no readership, and no acceptance among the speakers of Maithili continued to be presented by these Akademies as representative literature. The literary journals like Museindia (www.museindia.com) were also used for their sinister design. The mediocre interface of Maithili literature was presented by the government radio and television stations also.

The Short-Stories by Umesh Mandal

Umesh Mandal is short story writer of parallel tradition. His language is rich with vocabulary, which is essential for presentation of intended thoughts and narratives.

He has adjudged the following five stories as his best, which are mentioned below and have been presented in original side by side.

1. Kajak Satah Par (Evaluated on the basis of real work)

2. Bal-Bodhak Aagu Sikki Mauni (Who see our culture only in Sikki-Mauni crafts)

3. Jita ma Guha-Bhata aa Muila ma Doodha-bhaata...! (Disrespecting while alive and Idolising after death!)

4. Loke Chauppatt Achhi (The people themselves are hopeless)

5. Chaudaho Devan (The fourteen saviours)

Kajak Satah Par (Evaluated on the basis of real work)

The protagonist is trying to write a new short story to be read at the periodic nightlong story recitation assembly of Maithili Language short-story writers. During this endeavour, he plans and re-schedules those plans and in this exercise reproduces experiences and meetings.

Bal-Bodhak Aagu Sikki Mauni (Who see our culture only in Sikki-Mauni crafts)

Again the protagonist explains the characters, the ones who are good only at talking but the others who are really good.

Jita ma Guha-Bhata aa Muila ma Doodha-bhaata...!

(Disrespecting while alive and Idolising after death!)

The discussion ensues at the teashop regarding the relevance of feast upon the death of a person and ends with ill-treatment of the person while alive.

Loke Chauppatt Achhi (The people themselves are hopeless)

The discussion again ensues at the teashop regarding freebies offered by the government. It is making people incompetent. However, the same is true regarding the ownership of ancestral property.

Chaudaho Devan (The fourteen saviours)

The discussion ensues regarding seasonal unemployment. In cities, one may survive through a single skill but in villages, you need more skills for livelihood, a single skill is not enough.

१.२.अंक ३७६ पर टिप्पणी

मनोज पाठक

विदेह आब ब्राह्मी लिपिमे। एकटा आर उपलब्धि।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भ

२.२.डा.(श्रीमती) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क परिचय - (प्रस्तुति श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल')

२.३.कुणाल- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

२.४.कनुप्रिया- हमर बड़ी मौसी

२.५.मुन्नी कामत- मैथिलीक सशक्त रंगकर्मी प्रेमलता मिश्र प्रेम

२.६.जया झा- हमरा लेल प्रेमलता दी

२.७.उमाकिरण खान- हमर बड़ी (प्रेमलता)

२.८.हरिनाथ झा- ओ दिन ओ पल : प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

२.९.शुभनारायण झा- मैथिली रंग मंच क पितामही प्रेम लता मिश्र 'प्रेम'

२.१०.विभा रानी- 'रंगमंच मे नाचा किओ नहिं छाड़ल छै'

२.११.डॉ शिव कुमार मिश्र- मिथिलाक विदुषी परम्पराक अनुपम-

स्मृति श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

२.१२.आशीष अनचिन्हार- कला लेल वरिष्ठता नै देखल जाइत छै

२.१३.आशा झा- रंगकर्मी प्रेमलता मिश्रक साहित्यिक छवि- ओ दिन ओ पल

२.१४.मनोज झा- नारी सशक्तिकरणक अग्रदूत, मैथिली नाट्य मंचक पहिल सशक्त महिला रंगकर्मी आओर मैथिली फिल्म मे ममता के साकार प्रतिमूर्ति डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

२.१५.प्रेम कान्त चौधरी- डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' : मिथिलाक विलक्षण विदुषी आ प्रभावात्मक व्यक्तित्व- जेना जनलियैन्हि

२.१६.कमलेन्द्र झा 'कमल'- मिथिलापुत्री

२.१७.लक्ष्मण झा सागर- प्रेमलता बहिन

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क वक्तव्य

२.१९.अजित कुमार झा- मैथिली रंगमंचक प्रेरणास्रोत: श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम

२.२०.प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'सँ साक्षात्कार जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' द्वारा

२.२१.उदय चन्द्र झा 'विनोद'- प्रेमलता प्रसंग

२.२२.प्रदीप पुष्प- मैथिल नारीक सांस्कृतिक- साहित्यिक स्वर - प्रेमलता मिश्र प्रेम

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

विदेह द्वारा 'जीवैत मृदा उर्वरित' शृंखला केर अंतर्गत अगस्त 2022 केँ विदेह प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' आ शरदिन्दु चौधरी विशेषांक प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा कएलक आ प्रस्तुत अछि ओही विशेषांक जे कि केन्द्रित अछि प्रेमलता मिश्रजीपर। एहि सूचनाकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा।

एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह 6 टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छै। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि हमरा लेख एकत्र करएमे। मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जतेक लेख केर उम्मेद कएने रहैत छी हम ततेक नै आबैए, जतेक लोक लिखबाक लेल गछैत छथि से सभ अंत-अंत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारण छै, किनको ई लागै छनि जे आलेख लिखब से हम अपन रचना किए ने लीखि लेब, किनको लग समय नै रहै छनि, कियो विदेहक समानधर्मी रूपसँ दुखी छथि, तँ किनको मित्रकेँ विदेहसँ दिक्कत छनि तँए ओ नहि देता। एकरा हम संकट बूझै छियै जे सभ फेसबुकपर लंबा-लंबा लेख वा कमेंट टाइप कऽ लै छथि सेहो सभ विदेह लेल हाथसँ लिखल पठबैत छथि। जे सभ कहियो फेसबुकपर टाइप कऽ लीखै छथि तिनकर आलेख हम सभ टाइप करैत छी। खएर पहिने कहलहुँ जे संकटसँ बेसी समर्थन अछि तँए आइ पहिलसँ

लऽ कऽ सातम विशेषांक धरि पहुँचलहुँ हम। 2015 सँ लऽ कऽ 2022 धरि सात टा विशेषांक प्रकाशित भेल मुदा वर्तमान एकटा। निश्चित समर्थन बसी भेटल हमरा। जखन कि विदेहक ई सात विशेषांक कोन अलाव आन विषयपर विशेषांक प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त ईहो बात सांप्रदायिक अछि जे विदेहक हनक विशेषांक अभिनंदनग्रंथ हेबासँ बाँचि गेल अछि। मुख्यधारा जकाँ विदेहकेँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दुआरे नै चाही जे ओहिसँ लेखक वा जिनकापर निकालल गेल छथि तिनकामे सुधारक गुंजाइश खतम भऽ जाइत छै। तेँ विदेहक विशेषांकमे आलोचना-प्रशंसा सभ भेटत।

विदेहक ई विशेषांक महिलाक ऊपर अछि। एहि विशेषांककेँ हम पहिल महिला विशेषांक कहब मुदा ओँ हमर सबहक प्रयास सफल भेल नहैत तँ ई दोसर विशेषांक नहैत। विदेह 2016 मे यनमश्वन कायति, कमला चौधरी आ नीलम्बर मल्लिक जीक ऊपर विशेषांक निकालबाक घोषणा कोन नहैत जे युवा नै भऽ सकल आ किछु न भऽ सकल से करबासँ बसी नीक जे हम अपनेकेँ दोषी मानी। एहि प्रयासकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी आ एकर रूपरेखा निश्चय सेहो देल गेल अछि****।

लेखक कोन मूल्यांकन बहुत असान छै मुदा कोनो ओकर रचनाकेँ मुद्रित हेबाक साधन बहुत छलै मुदा अभिनय कोन मूल्यांकन कठिन नहि कोनो निकार्तिग कोन सुविधा बहुत बादमे एलै। अभिनय कोन त्वरित मूल्यांकन संभव छलै। से चाहे रंगकर्मी पुरुष होथि वा कि

महिला। मैथिलीमे उपलब्ध महिला रंगकर्मीक आधुनिक इतिहास कम्मे दिन अछि (प्राचीन कालमे महिला रंगकर्मी छलथि वा कि नै से हमरा ज्ञात नै)। प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' रंगकर्मी छथि तँइ हम ई मानि कऽ चलि रहल छी जे हिनक 90% मूल्यांकन वर्तमानमे संभव नहि। तखन बाँकी दस प्रतिशत मूल्यांकन ओहन लोक सभ द्वारा कएल जा सकैए जे कि प्रेमलताजीक अभिनय पहिने वा कि एखन देखैत छथि। हुनक अभियन कर किछु निर्णायक सत्य छै जाहिसँ नव लोक सेहो मूल्यांकन कऽ सकै छथि। एकर अतिरिक्त प्रेमलताजी रचनाकर्मी सेहो छथि जाहिसँ लेखक वर्ग हुनक मूल्यांकन सेहो कऽ सकै छथि।

एहन नै छै जे प्रेमलताजीपर लिखल नै गेलै मुदा ओ सभ एकठा नै भऽ सकल छै तँइ ओकर प्रयान हएत गेल छै। एहि संदर्भमे हम कहि सकै छी जे विदेहक ई प्रस्तुत विशेषांक एहन पहिल प्रयास अछि जाहिमे ई वृहत प्रयास कएल अछि जे प्रेमलताजीक अभिनय वा रचना करैत छनि। ई अलग बात जे हम सभ कतेक सफल वा असफल रहलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक कर अनुभाग विदेहक आन विशेषांक जकाँ अछि। संग-संग ई क्रम ने तँ उम्रक वरिष्ठता कर पालन करैत आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एकर ध्यान जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसरंग नहि टुटैन आ से विश्वास अछि जे रसरंग नै टुटनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से साफ-साफ

हमर सन्देह गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई (ध्यान रखबाक बात जे विदेह शुरुहेसँ हरक वर्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए। तेँ मानकता अपन स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमर सन्देह गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बसिया रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा सोचियौ जे 72-80 पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै तहिमे लगभग आधा सामग्री पुरान रहैत छनि, तसन हालमे लेखक कने किछु नवका रहैत छनि आ बाकीमे हालमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करए पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधाराक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी। मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा ढेर पाइ लागि जेतै) तेँ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट होबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा समाप्तिए बसिया रहत तँ सही वर्तनी रहितो नव अध्याय नै खुजि सकत तेँ हमरा लोकनि वर्तनी बला मुद्दापर समझौता कएलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, करयलनि ओ कएलनि बीनू शुद्ध

मानैत छी, ओकर शुद्ध मानैत छी ओकरे रचनाम गीतु रूप रहि जाएत। आर शब्दक लेल ओहने बूझू।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आर विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ यदि एकरा नीक-बेजाए अपन सुझाव देताह। विदेह अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप "स्वर्गारोहण" केर नामसँ प्रकाशित हएत उम्मेद जे हरिश्चन्द्र प्रेमलताजीयन कतेक एहि विशेषांक केर पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा 'जीवैत मृत्यु उपविभाग' शृंखलामे प्रकाशित हएल आर विशेषांक सभहक लिंक देल अछि)एहिठाम जे अंकक लिंक देल गेल अछि ताहि अंकपर क्लिक करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत-(

1) अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक 189 म अंक 1 नवम्बर 2015 (ई विशेषांक 2020 म पोथी रूपमे सेहो आएल अछि(

2) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक 191 म अंक 1 दिसम्बर 2015

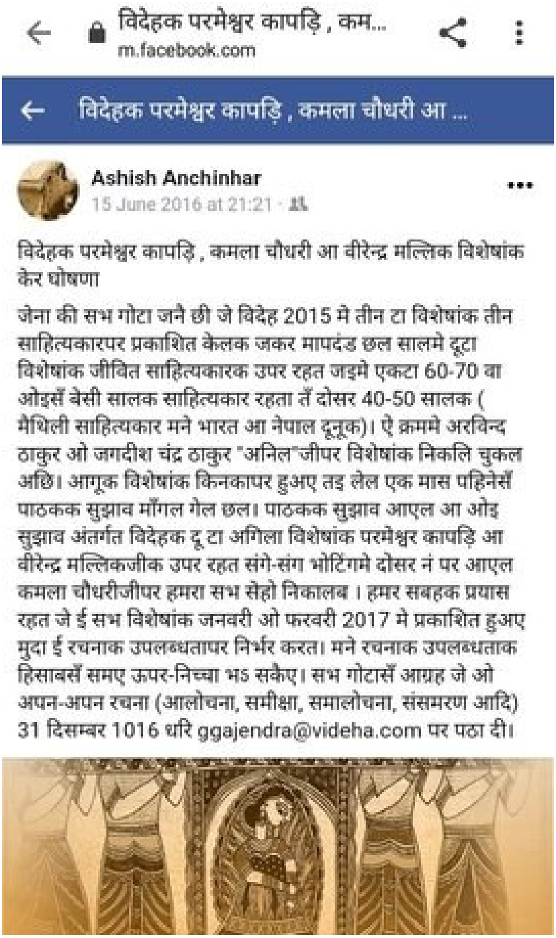
3) रामलोचन ठाकुर विशेषांक 319म अंक

4) राजनन्दन लाल दास विशेषांक 333म अंक

5) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक 15 जून 2022

6) केदारनाथ चौधरी विशेषांक 15 जून 2022 अंक 352

****



विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कम...
m.facebook.com

विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कमला चौधरी आ ...

Ashish Anchinhar
15 June 2016 at 21:21

विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर घोषणा

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह 2015 मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा 60-70 वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर 40-50 सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक दू टा अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि आ वीरेन्द्र मल्लिकजीक उपर रहत संगे-संग भोटिंगमे दोसर नं पर आएल कमला चौधरीजीपर हमरा सभ सेहो निकालब । हमर सबहक प्रयास रहत जे ई सभ विशेषांक जनवरी ओ फरवरी 2017 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना (आलोचना, समीक्षा, समालोचना, संसमरण आदि) 31 दिसम्बर 1016 धरि ggajendra@videha.com पर पठा दी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.डा.(श्रीमती) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क परिचय - (प्रस्तुति श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल')

डा.(श्रीमती) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क परिचय - (प्रस्तुति श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल')



नाम : प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

माता : स्व. वृद्धा देवी

पिता : पं. दीनानाथ झा (वैद्यजी)

जन्म : 29.09.1948 स्थान : नेहर - रहिका (मधुबनी)

सासुर : सिरसी (सीतामढ़ी)

पति : स्व. महेश्वर मिश्र

अन्य पारिवारिक सदस्य :

पुत्र : प्रथम : मनमोहन मिश्र (मुन्ना), द्वितीय : रवि रंजन मिश्र (मन्नू). तृतीय : सत्यजीत मिश्र (नन्हा)

पुत्री : अनुपमा (अन्नू)

पुत्रवधू : प्रभा मिश्र, नीलिमा मिश्र आ नूतन मिश्र

पौत्र : मानवेन्द्र, मानस आ मुकुन्द

पौत्री : मेघना आ पीयूषी

शिक्षा : मैथिलीमे स्नातकोत्तर, बी.एड., पी.एच.डी.

सेवा : व्याख्याता, बाँकीपुर राजकीय बालिका द्वादशीय विद्यालय, गोलघर, पटना

(सितम्बर 2008 मे अवकाश प्राप्त)

साहित्य सृजन :

प्रकाशित पोथी :

एगो छलीह सिनेह (कथा संग्रह / 2005)

उ दिन उ पल (संस्मरण संग्रह / 2005)

शेखर प्रसंग (शोध प्रबंध)

अनेक पत्रिका / स्मारिका आदिमे कथा आ लेख प्रकाशित

सम्पादन :

'सांझ गोष्ठी' (अनियतकालीन पत्रिका)

रंगिमा (नाट्य विषयक अनियतकालीन पत्रिका)

जानकी (मैथिली महिला संघक स्मारिका)

सामाजिक \ सांस्कृतिक संस्था सभसँ सम्बद्धता :

चेतना समिति, पटना

रंगिमा, पटना

अनिपन,पटना

मैथिली महिला संघ, पटना

वंदना नारी कक्ष आदि संस्था सभमे अध्यक्ष \ उपाध्यक्ष \ सचिव \ कोषाध्यक्ष आदिक रूपमे समय-समयपर कार्यरत

बिहार संगीत नाटक अकादमी,पटनाक कार्यकारिणी सदस्यक रूपमे कार्य सम्पादन

मैथिली अकादमी,पटनाक सांस्कृतिक एवं लोकमंच समितिक सदस्याक रूपमे कार्य सम्पादन

प्रसारण :

आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ अनेक कथा, वार्ता, परिचर्चा आदिक प्रसारण

रंगकर्मक उत्तम योगदान :

200 सँ अधिक नाटकमे अभिनय

संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत अछि :

रेडियो नाटक : पं. सुधांशु शेखर चौधरी लिखित नाटक :

'आँखिक परदा', 'जय सोमनाथ', 'चाकरी', 'बहुरन', 'परिवार', 'सख-सिहन्ता', 'कतहुँ जाऽऽछी उगन- उगन', 'सोनाक टुकड़ी', 'पहल काज', आ बीस सूत्री कार्यक्रमपर नाटक 'उगन-खटोला', 'उझौरि', 'नव आँखि' आदि

गौरी कान्त चौधरी 'कान्त' लिखित नाटक 'महर्षि विश्वामित्र'

राघव नारायण झा लिखित नाटक 'सोनक ममता', 'पहिली तारीख' आदि

रेडियो धारावाहिक : 'सिंहासन बत्तीसी' (लेखक - रवीन्द्र नाथ ठाकुर)

रंगमंचीय नाटक :

सुधांशु शेखर चौधरी द्वारा लिखित नाटक-'लगक दुनी', 'पहिल साँझ', 'भफाइत चाहक जिनगी', 'लेटाइत आँचर' आदि

प्रो. हरिमोहन झा लिखित नाटक 'ग्रेजुएट पुतोहु', 'निकट पाहुन' आदि

प.गोविन्द झा लिखित 'लोढ़ानाथ', 'अंतिम प्रणाम','पागक मनुक्ख'(डा. अरविन्द अक्कू द्वारा कथासँ नाट्य रूपान्तरण) 'रुक्मिणी-हरण' (एहि नाटकक 17 बेर मंचन भ' चुकल अछि)आदि

राजकमल लिखित 'ललका पाग'

दिगम्बर झाक लिखल नाटक 'टूटैत लोक'

महेन्द्र मलंगिया लिखित नाटक 'एक कमल नोरमे', 'काठक लोक' आदि

छत्रानंद सिंह झा (बटुक भाइ) लिखित नाटक 'प्रायश्चित' (परिवर्तित नाम 'सुनु जानकी')

उषा किरण खान लिखित नाटक 'फागुन', 'चानो दाइ' आदि

डा. अरविन्द अक्कू लिखित नाटक 'अन्हार जंगल', 'आगि धधकि रहल अछि' आदि

स्व.श्यामा वल्लभ लिखित नाटक एसगर-एसगर

विभूति आनन्द आ कुमार शैलेन्द्र लिखित नाटकक सेहो मंचन भेल

अछि

नतिया सीरियल :

मैथिली --सिंहासन बत्तीसी (लेखक- रवीन्द्र नाथ ठाकुर)

दूरदर्शन,बिहार पर प्रसारित धारावाहिक : (हिन्दी) -पर्व रंगा मिथिला, वीर कुँवर सिंह, निगाह, एक कहानी आदि

<u>मैथिली फिल्म :</u>

'ममता गावय गीत', 'सस्ता जिनगी महग सिनूर', 'ललका पाग', 'मिथिला मखान', 'बबीतिया' आदि

<u>हिन्दी फिल्म :</u>

प्रकाश झा द्वारा निर्मित फिल्म 'दामुल' आ टेली फिल्म 'कथा माधोपुर की' (पंचायत राजपर), अन्य टेली फिल्म -'मर्यादा', 'जहाँ चाह वहाँ राह', 'देहाती दुनिया', 'रागिनी' आदि

भोजपुरी फीचर फिल्म : 'दुल्हा गंगा पार के', 'बबुआ हमार'

भोजपुरी सीरियल : 'साँची पिरीतिया'

<u>**सम्मान :**</u>

साहित्य,कला,संस्कृति,अभिनय आदि उत्तम उल्लेखनीय योगदान हेतु निम्नलिखित संस्था सभ द्वारा अभिनंदित आ सम्मानित :

1985 मे मैथिली रंगमंचमे विशेष योगदान हेतु चेतना समिति, पटना द्वारा सम्मानित

1987 मे मैथिली रंगमंचमे विशेष योगदान हेतु मिथिला विकास परिषद्, कोलकाता द्वारा

1988 मे चेतना समिति, पटना द्वारा 'शैलबाला पुरस्कार'

1988 मे अखिल भारतीय मिथिला संघ,दिल्ली एवं अरिपन, पटना द्वारा संयुक्त रूपसँ सम्मानित

1992 मे बिहार आर्ट थिएटर, पटना द्वारा प्रख्यात रंगकर्मी 'अनिल कुमार मुखर्जी प्रथम शिखर सम्मान'

1992 मे बिहार प्रदेश भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन, पटना द्वारा 'कलाश्री'क उपाधिसँ सम्मानित

1992 मे भानु कला केन्द्र, विराटनगर (नेपाल) एवं अरिपन, पटनाक संयुक्त तत्वावधानमे आयोजित सप्तम नाट्य प्रतियोगितामे सर्वोत्तम चरित्र अभिनेत्रीक पुरस्कारसँ सम्मानित

1996 मे हिन्दी रंगमंच 'प्रांगण', पटना द्वारा आयोजित द्वादश पाटलिपुत्र महोत्सवक अवसरपर विशिष्ट रंगमंचीय योगदान हेतु 'पाटलिपुत्र एवार्ड'सँ सम्मानित

2000 मे विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान'

2000 मे 'प्रयाग सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद' द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान'

2004 मे 'रोटरी पटना मिडटाउन', पटना द्वारा रंगमंचक माध्यमसँ समाज सेवा हेतु सम्मान

2007 मे अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, दिल्ली द्वारा सम्मानित

2007 मे कला कुंज, पटना द्वारा 'कलाकुंज सम्मान'सँ सम्मानित

2009 मे हिन्दी नाट्य मंच 'प्रयास' द्वारा 'नून हालिमा एनाति'सँ सम्मानित

2011 मे दिल्लीक नाट्य संस्था 'मैलोरंग' द्वारा प्रथम 'ज्योतिरीश्वर रंगशीर्ष सम्मान'

2011 मे अष्टम अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन एवं मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी द्वारा सम्मानित

2012 मे मैथिल समाज, रहिका द्वारा 'महेन्द्र झा सम्मान'

2012 मे अखिल भारतीय मिथिला संघ,दिल्ली द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान'

2016 मे बिहार राज्य फिल्म फिल्म विकास एवं वित्त निगम, पटना द्वारा -फिल्म विकासक क्षेत्रमे उत्कृष्ट योगदान हेतु सम्मान

2021 मे भिनम् प्रोडक्शन प्रा. लि. द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट

अनाति'

2013 मे 'रिखानी ठाकुन (नंगमंच) वनिष्ठ पुनस्कान'

2018 मे सांस्कृतिक समिति, अग्नवाठाढी द्वाना 'नामनी स्नी सम्मान'

2022 मे 'नटनाज सम्मान'

2022 मे मैथिली साहित्य कला, नंगमंच महासनम उत्कृष्ट सहयोगिता हेतु सम्मान

आवास : फ्ल. 2/33 , पी. आई. टी. कॉलानी, कंकड़वाग, पटना —800020,

मो. नं. —09931024819,

ई. मेल. - premlatamishraprem@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.कुशाल- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

कुणाल

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' जीक नाम हम कलकत्ता (सन् १९७७) सँ सुनने छी। पटनामे रहल नाटक आ कनिहार लोकनिक ठामसँ चर्चा होइत। खास कऽ विद्यापति पर्व देखि कऽ गेलाक बाद। से पटना आबऽ सँ पहिने बुझल छल जे औसुका नाटक-कर्मी सब के छथि आ कहन नाटक करै छथि। 'विद्यापति पर्व समारोह' चेतना-समिति, पटनाक सिंहवन-प्रांगण छल आ चेतना समिति दऽ हम मामाजीव (जीवकान्त) सँ सुनने छी। ओ रहल ब्लासम बाजल छलथि जे जी संस्था '□रिहर्स क्लब' छी। एतऽ ओ सब मैथिलीकेँ युग आ एनर्जीकेँ कानऽ जाइ छथि!.. अइजनतः सम नवन छलैन मशीवक। अन्त, २०२२ तक अवी-अवी जी संस्था '□रिहर्स क्लब' सँ आगू निकास कऽ कऽ पूर्णकालिक-अल्पकालिक नाजनीतिकर्मी लोकनिक 'मैथिली-तिथ्या-नैय..' रऽ गेल-ए। नितम्बना जी जे एकटा साहित्यिक-संस्कृतिक संस्था करैत जाइ छथि। मान 'मन किछु आन, नवन किछु आन, करनी पुनि किछु आन... प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' एहि संस्थाक अपनिहार्य अंग छथि। किछु सत्र सँ एकटा उपाध्याय पदकेँ सुशोभित कऽ नहल छथि।

१म अप्रैल १९८४ म पटना एलौं आ मित्र सभ संग छी। 'रंगिमा' सांस्कृतिक चेतनाक संवाहक नाम नाट्य-दल बनल जे पूर्णतः कलाकारक संस्था छल। संस्थाक पंजीकरण भेलै आ कार्यालय पता भेलै एल २/३३, पी.एण्ड.टी. कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-२०। ओही प्रेमलता जी क आवास छी। आइयो ओएह पता छन्हि! अर्थात् ३८ वर्ष पुरान एहि संस्थाकेँ अपन कहबा वला किराया पर्यन्तक स्थल नहि छन्हि। रिहर्सल-मीटिंग करक लेल 'विद्यापति भवन'क बलिधंगरा व्यवस्थापन आश्रित अछि। नाटकक पोस्टर आ कस्ट्यूम, पत्रिका, स्मारिका (जे लगभग एक दशककेँ रंगमंचक प्रतिमाक्षम छल) पहिने (पटना-जलमग्न होयबा) हिनक डेरापर (गैरेज नहि छल। बादमे गगनक डेरा (सरकारी आवास) पर राखल गेल। आ आब ताऽ जखन गगन स्वयं नहि रहला ताऽ ओ सामान सब जाऽ ताऽ हेतै! जहिना हो, जेहन हो... संतोष करऽ पड़ै छै...

कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता

कहीं ज़मीन कहीं आसमाँ नहीं मिलता

(निदा फ़ाज़ली)

रंगिमा अनवरत अछि। बहुत रास नव लोकक प्रवेश होइत-रहबाक अछि। अनेक आत्मीय सऽ जुड़ल लोक आब नहि रहला.. कुमार शैलेन्द्र, रमण-नन्दन, लक्ष्मी रमण मिश्र 'नादान', कुमार गगन, बटुक राय.. सौभाग्यक बात छी जे 'रंगिमा'केँ प्रेमलता जी क अभिभावकत्व अद्यावधि प्राप्त छन्हि! मुदा ओ एकहि तक सीमित

(वनिता-समिति, महिला समिति, रंगिमा...) नहि छथि। एहि सब संस्था सँ आगू, समस्त मैथिली नाट्य प्रतिष्ठानक आर ओ 'माँ' भऽ गेल छथि। वएह छलीह, 'प्रेमलता' कहैत छलथिन। हम दीदी कहैत छियन्हि। ओ, सब नारी-रंगदूतिया दिन रात कऽ कऽ मान प्राप्त भेल छथि। हिनक संग रहला पर हमरा भेटलाह 'महेश्वर मिश्र'। विशुद्ध श्रोता, दर्शक आ पाठक। बड़ जिद्द कला पर अपन बबाक अस्मिता राखऽ बला। हम 'मिसर जी' कहैत छलियन्हि। ओ सरआम हमरा 'नटराज' कहैत छला.. स 'मिसर जी' सेहो नहि रहला..

ओहो.. हम गऽ 'ताउन द ममानी लाइन' पर चलल जा रहल छी। मुदा सम्पादक कँ गऽ संस्मरण नहि चाही.. परन्तु..

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' म सऽ मिश्र आ प्रेम ऑफिसियल टा छैक। आर ओ माँ, दीदी, काकी, दादी, नानी आ प्रेमलता जी सऽ सम्बोधित होइत छथि। हिनका लग आबि कऽ प्रतिष्ठानक अर्थ आ सीमा टूटि जाइत छैक। प्रायः प्रत्येक मैथिल घरक ओ प्रतिष्ठित व्यक्तित्व छथि। ओ मिथिला रंगमंच मैथिली-कला-संस्कृति सऽ छूटल नहि स हिनका सऽ संयुक्त अछि। बिलकुल पारिवारिक-अनौपचारिक व्यवहारक संग। बड़ पैघ प्रतिष्ठान छथि हिनकर... एहि अद्भुत लोकप्रियता सऽ आनन्द आ ईर्ष्या (ईर्ष्या) दुनू संगहि होइत... एहि अर्थमे ओ हनिमारेन मा आ रवीन्द्र-महेन्द्रक समकक्ष छथि... हम, शारदा सिन्हाक (कोना रामराम) गायनक ध्वनि 'मैथिली-ध्वनि' मानैत छी।

गहिना, कामकाजी संस्कृति कर्मीक मैथिल-प्रतिमान छथि दीदी प्रमलता जी!

प्रथमतः दीदी, अभिनय-शिल्पी छथि। नटिया आ रंगमंच सऽ आरम्भ कऽ कऽ टेलीविजन आ सिनेमा तक विस्तारित। हमरा तऽ लगैत अछि जे एखन धरि बहुत रास तीन मैथिली सिनेमामे हिनकर निर्जल-रोल रहल छन्हि। ... एहन व्यक्तिकेँ सम्मानक कोन कठिन रहल छैक। वैह काल औ माथ चढि बैसल छैक। मुदा दीदी बस सहजता सऽ तकरा सम्हारने छथि। आर एकर एकटा खास कारण छैक। ... मैथिलक 'कला-संस्कृति', 'मातृत्व' 'वैभव आ नॉन-मानिटरी' रहैत। लोक टिकट लऽ कऽ नाटक-सिनेमा-कन्सर्टमे नहि जाइत, पुस्तक-पत्रिका नहि कीनत। अपवाद छैक, मुदा से नियम छी। एहिठाम, कला-संस्कृति-कर्मीक लेल कोना सम्यक सम्मान नहि छैक। जे सब छैक से नितान्त व्यक्तिगत छी।

दीदीक दासन नुप अछि संगठनकर्ता का। अभिनयमे तऽ दासन नाटककारक लीखल आ गसन (निर्देशक- यमनियाक गसन) क अनुसार करैत-करैत छथि। से किछु एना रहलैक जे ओ 'नुठ-टाउन' रऽ ललीहल। हिनक अभिनयमे अहाँकेँ विविधता आ प्रयोगधर्मिता नहि रहत। असलमे एहन कोना अपना मैथिली नाट-जगतमे छथिहे नहि। प्रकाशान्तर सऽ एहन कोना अपना मैथिलीमे वा मैथिलीक नामपर होइत जावँत आयोजनमे सन्निहित नहि छैक। मुदा से नियम छियैक।

वहुत पहिने वाग-वागम अनिल अंशुमन (जसम) कहलक ज ओ गS पूर्णाः अक्तिनिस्ट छओथ। सग ददना। दीदी मैथिल अक्तिनिस्ट छओथ। परनाम महिला सवर्कं मंच गक आनS वाली म सS प्रमुख छओथ। चाना समितिक उपाध्यक्ष छथिह । रंगिमाक अहिसानक छओथ। अथ नढदलक अथन लाक छओथ। सन् २००० सS अयन उनयन एकटा पाजिक आपाजन कनओ छथि- सांख गोष्ठी नाम सS। एहिम मैथिलीक अगिनिक हिन्दी, मगही, राजपूनीक नवनाकान लाकओन सहयोगिता कनओ छओथ। 'सांख-गोष्ठी' नाम सS पत्रिका सहो वहान कनओ छओथ। किछु पूस्तक सहो प्रकाशित छओन। अहाँकँ ओझा हो गS पूस्तक-पत्रिकाक विक्रीक माद पूछवओना। उा वस सहजता सS कहनी ज 'पंशन'क पाओ लूट कनओ छी। सैह कS नहल छओथ- छूटनी नहीं है मुँह स य काफन लगी हुओ। ((गख ओव्राहीम जौक))।

आव, वयस, पनिस्थिति आ कालक माओन हिनकन गतिशीलताकँ कम कS दलकओनओ। मुदा सांख-गोष्ठी अननगत छओन। मिसन जी, एहि गोष्ठीक अहिसानक-स्वागताध्यक्ष आ श्रोता होओ छलाह। हिनका गेलाक वाद हम काना सांख-गोष्ठीम राग नओ लS सकल छी। मुदा दीदी सूचना दनाओ नओ विसनओ छओथ..

शर्त छओ ज संस्मनण नओ हो। पनन्तु नंगमंच गS छीह श्रुति-स्मृतिक निधा। संगठनक वानम सहो ओएह पनिघटना लागओ छओ। की आना काना उपाय निकासित कन छी हमना लाकओन जाहि सS

अभिनय-शिल्पी, कला-कर्मी, संगठन-कर्त्ता-व्यक्तित्व सबहक कृतिकेँ आगूक पीढ़ीक परिचितिक लेल संरक्षित कएल जाए?

- कुणाल- संपर्क-पटना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.कनुप्रिया- हमर वद्री मोरी

**कनुप्रिया**

हमर वद्री मोरी

हमरा लेल थियेटर बालपनसँ शुरू भऽ गेल। माँ-बाबूजी कुमुद शर्माक बाल रंगमंचमे हमरा ६ बरखक आयुमे पहिल बेर पठओलखिन। पटनाक कॉन्वेंट स्कूलमे पढ़ए वाली हम तीनू बहिन कखनो एक मुखी नय रहलहुँ। हाँ, शिक्षा अंग्रेजी माध्यमसँ अवश्य रहल मुदा नृत्य,संगीत,साहित्यिक गोष्ठी,नाटक बाबा ठाकुरबाड़ीक प्रवचन,दुर्गा पूजाक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम,मैथिल महिला संघ कर आनंद मेला सेहो विशेष रूपसँ मैथिली नाट्य

संगठन 'रंगिमा' हमर सभक व्यक्तित्व के गढ़बामे विशेष भूमिका निभेलक।

अन्तिम प्रमुख भूमिका भेलनि बड़ी मौसी केर। आन लोक छल 'प्रमिला मिश्र प्रेम'

हमर सभक 'बड़ी मौसी' नामसँ माँ (उषा किरण खान)केर छोट बहिन छथिन। साँचमे अपन स्थूलसँ साहित्यसँ भरल रंगमंच मौसीक आकृति, माँ के 'बड़ी आउ आउ' कहनाइ आ हुनक अँगनाक चाय आ गुड़ाक नाश्ता, अँगनहीन विषयपर गप हमर मानसपर आइयो अंकित अछि! हमरा सभकेँ मैथिली मंचपर लागि ९-१० वर्ष धरि निरंतर रंगकर्मक ठाठ के एक महत्वपूर्ण कारण बड़ी मौसी छलखिन। बड़ी मौसी माँ,पत्नी,पुत्री सँ ऊपर उठि अपन मंच पर एक टा अपूर्व अनुभवी और प्रतिबद्ध अभिनेत्रीक रूपमे मिथिला समाजमे प्रसिद्ध छथिन।

हमरा ई मान अछि कि कखनो मौसीक मूल्यपर ध्यान या एकर स्वावलंबी होएबाक बातचीत करितहुँ देखल होएत। सदिखन दासनाकेँ आगू बढ़ाबएमे संलग्न हमर सभक बड़ी मौसी स्त्रीत्व केर एकटा अनुपम उदाहरण छथिन। आइ हम गर्वसँ कहि सकैत छी कि पटना केर हमर कला यात्राक शुरुआत हमर बाबूजी, माँ आ बड़ी मौसीक कारणे भेल और आइ हम मात्र कलासँ अपन जीवन यापन कए रहल छी और करैत रहब एहन आशा अछि।

प्रमलता मिश्र प्रम उ८६ वर्षी मौसीकँ स्वस्थ क्रियाशील जीवन लल अशेष शुभकामना।

- कनुप्रिया- संपर्क-पटना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.७.मुन्नी कामत- मैथिलीक सशक्त रंगकर्मी प्रमलता मिश्र प्रम

मुन्नी कामत

मैथिलीक सशक्त रंगकर्मी प्रेमलता मिश्र प्रेम

मैथिलीक ओहि धरा पर कतेको विदुषी जन्म लेलैथ। ओ अपन कर्म आऽ सामर्थ्य, सँ समाज कऽ नव बाट देखौलैथ। 60 बरस आकाश तखन छवि परैत अछि जखन ओऽ आकाश दिस मात्र निहारि शान्त होयत बदलामे ओकरा लपैक कऽ छुबैयक अथक प्रयास मऽ दिन - राति लागल रहैत अछि। 40-50 कऽ दशक मऽ बाल विवाह सँ ग्रसित ओहि समाज मे स्त्री रनाय पाप छल। ओहि समयमे स्त्री क रंगकर्मी होनाए असंभव छल। मुदा जखन मन सूर्य छुबैए लेल आतुर होय तँ आगि सँ दहकैत दिनकर अपन तेज कम कऽ लैत अछि। अहिना रहल प्रेमलता मिश्र प्रेम संगे ओ अपन प्रारम्भिक शिक्षा समाज सँ लुका-चोरा कऽ ओहि समाजक बिच केलैथ। सब कलुषित देबाल कऽ ढाहैत उच्च शिक्षा हासिल केने अनेक अनपढ़क जीवन मे ज्ञानक दीया जरौलैथ। माय - बाबू क एकमात्र सन्तान ओ अपन बाबूजीक सपना संगे उठैत छल आऽ कर्मपथ पर चलैत छल। ओऽ अपन बाबूजीक कंधा तखन बनलैथ जखन सरकारी शिक्षिका बैन राजधानी पटना मऽ बारहवीं कक्षा तक क बच्चाक पढ़ौनी करौलैथ।

लाग कि कहला उाहि वाण कनं याछां छाउेण अयन नुचि संग धननी नायँ लागल। वाल्यकाल सँ निद्यालयक प्राअम मS नाद्य प्रस्तुण कन लागल। अहि सँ यहिल महिला याग्र कS अहिनय यून्नुष कनैण छलैथ यन आव प्रमलणा मिश्र प्रम अहि साव मS वदलान अयन अहिनय सँ अनलैथ।

29 सिणम्बन 1948 ई0 ग्राम नहिका मS जन्म लैनिहान *प्रमलणा मिश्र प्रम* नाम्नन मS प्रमक सागन छथि। हुनकन नाढी कS मधुनणा सहजणा यूर्वक ककना अयना वना लैण अछि। सहल अहिनय मS सिद्धहस्त अहि प्रणिष्ठिण नंगकर्मी कS निनाह 12 सालक अनस्था मS सौना0 सत्ता सँ स्वर्गीय महश्वन मिश्र ज 2018 मS दीदी कS असगन छाडि यनलाक नासी रहलखिन हुनका संग रहल छला। सुख -सम्पयन्न हुनकन दाम्ययत्य जीनन वहुण खुशहाल छल। संयूक्त यनिनान मS ब्याहल दीदी चानि संणानक माणृसुख प्राप्त कलैथ। नैहन सँ सासुन णक अयन मृदुल स्नभान कानध सवहक दिल मS नाज कलैण। नर्णमानम सत्ता दीदीक यनिनान निस्णा आS जैणक दवाल ढाहैण वहुण येघ रS गेल अछि। जणय दीदी कS सवकाय दीदी माँ कैह संवोधिण कनैण अछि। अहि सँ येघ सम्मान जैन कि रS सकैण अछि। हिनकन अहिनय मं उाS शक्ति अछि ज श्रोणा हिनकन अहिनय संग 0ाढ रS जैण अछि। ज्यो कलाकानक ई0 वहुण येघ उयलब्धि अछि।

दीदी माँ मैथिली छली हुनका लग समयक अभान छला। मुदा नाटक प्रणि अयान प्रम। हुनकन नस - नस मS अहिनय निद्यमान

छला। स्कूलक समयक बाद ओऽ कतेक नाटकक निर्देशन कैल नहि छली वा कतेक नाटकक मंचन। नाटक प्रति हिनकर स्वभाव आऽ बेटी - सँ - बेटी महिला कऽ मंचन लेल प्रोत्साहित करबाक मैथिली नाट्य साहित्य लेल हुनका द्वारा कैल अनुपम योगदान अछि। हिनका सँ प्रोत्साहित भऽ माता -पिता अपन बेटी कऽ सब उम्र संग नाटक उम्र मऽ सेहो आगा बढ़बैं लागल। नैं तँ अखन धरि हमर समाज नाटक कऽ महिला पात्र मऽ पुरुष कऽ देखै नहि। प्रेमलता मिश्र प्रेम शायद समाजक सोच बदलैय लेल अहि धरा पर अवतरित भेलि। जाय ओऽ ठाम भेली सब हुनकर स्थायी बड़ा समर्थन कलैथ। आब समाजक नुय रेखा बढैल नहल अछि। नाटियैल देवाल टुटि गेल अछि।

दीदी सबसँ पहिने आकाशवाणी पटना सँ प्रसारित नाटक द्वारा अपन कैरियरक शुरुआत कलैथ। हिनकर सफलताक मूल आधार आकाशवाणी पटना छल। अगाँ सँ हुनका अनेका मंच पर मंचनक अवसर प्राप्त भेल। दीदी अनेका नाटकक मंचन कलैथ जहि मऽ नुक्कड़ नाटक ओ पतित गोविन्द झा द्वारा लिखित अछि दीदी अहि नाटकक 17 शो कलैथ। हिनका द्वारा अभिनित प्रसिद्ध नाटक कऽ नाम तँ बहुत अछि पर ओहि मऽ सँ ओ अखनो सबहक सामाँ ठाम भऽ जेत अछि ओऽ नाटक अछि- सुनु जानकी, रक्ताक्त बाहक जिनगी, पहिल साँझ, याचक, मनुक्ख, अंतिम प्रणाम आदि। बाल्य कलाकारक माध्यम सँ बाल्य नाटक मऽ हिनकर योगदान सेहो अतुल्य अछि। राष्ट्रिय पुरस्कार सँ सम्मानित मैथिली सिनेमा *मिथिला मखान* मऽ माँ क पात्र मऽ हिनकर अभिनय पात्रक मनक अपन गहनाई

मं अनंग काल गक घूसल नहला। गहिना राजयूनी सिनमा *दुल्हा गंगा यान* मं सहा हिनकन अभिनय सनाहनिय अछि। * सांवि यिनिगिया* धानानाहिक मं हिनकन अभिनय क विसेन सकेग अछि। मैथिली, राजयूनी सँ लऽ हिन्दी सिनमा * दामूल* संगे अनका सिनमा मऽ सहा अयन अभिनय सँ श्राताक प्रिय कलाकानक सूचि मऽ अयन नाम स्थायिग कैली।

हिनकन गीन टा याथी सहा प्रकाशिग अछि। जहि मऽ

१. शखन प्रसंग (शाध यत्र)

२. उाऽ दिन उाऽ यन(संस्मनण)

३. एकटा छलि सिनह (कथा संग्रह)

नर्गमानम *सांख गाष्ठी* 2008 मं शुनू रल ऽौ यत्रिका ज अध्यगकालिन अछि उाकन संयादक छैथ। रंगिमा यत्रिका कऽ किछ दिन सहा संयादन कन छैथ आऽ चगना समिगि यटना सँ जुडल अछि। अखनां मिथिला मैथिली कऽ सना मऽ समर्यिग छैथ। नव यीढी लल हिनकन संघर्ष आ अयन कर्मक प्रगि निष्ठा वाट दखा नहल अछि।

-मुन्नी कामग- संयर्क-दिल्ली

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.६.जया झा- हमरा लेल प्रमिला दी

जया झा

हमरा लेल प्रमिला दी

प्रमिला मिश्र हमरा लेल एक अनजान शख्स छलीह।

हम विद्यापति स्मृति विद्यापति प्रोग्राम गेल रही। हम हॉलमे पहुँचलहुँ तँ अपन संगी-साथी सबकेँ ताकए लगलहुँ, ओ (प्रमिलाजी) हमर बगलमे बैसल छलीह ,ओहि समय खाना कर बन भऽ गेल छल। तँए प्रमिला दीदी बड़ प्रेमसँ कहै छथि, पहिले खा लिय, संगी-साथी रहिते जेतीह। हमहूँ खाना लऽ कऽ एलहुँ, आ हुनक बगलमे खाए लगलहुँ। ओ हमरासँ हमर नाम, हमर बाबूजीक नाम, गाम-घर सब पूछलथि। ओकर बाद हम हुनका लगसँ विदा भऽ कऽ प्रोग्राम देखऽ लगलहुँ। हम घर आबैत काल एकटा पत्रिका किनलहुँ "मैथिली अकादमी पत्रिका"। घर आबि कऽ जखन पढ़ै छी, तँ हुनका बारेमे लिखल छल, तखन बूझलहुँ जे हमरा कतेक नमहर शख्स आ कतेक प्रसिद्ध व्यक्तित्व कर लोक भेटल रहथि। फेर 2020 कर बाद

अछि। एखन आब गँ जखन भेंट होइत छी, हुनकर आशीर्वाद जरूर लै छी।

संयोगसँ ओ कंकड़बागमे रहै छथि, आ हम राजेन्द्र नगरमे जे हुनकर घरक नजदीक अछि। हिनक प्रारम्भिक रंगमंचीय जिनगीमे "टूटैत लोक", "लटाक्षण आँचर" आदिमे हिनक अभिनय बड़ प्रशंसा पओलनि। 1981 मे मैथिलीक पहिल फिल्म "ममता गाबय गीत" मे विधवा भाउज केर भूमिका कयलथि। फेर "सस्ता जिनगी महग सेनुर" कयलथि। डी डी पटना के लेल प्रसाद चौधरी द्वारा निर्मित धारावाहिक "पर्व एला मिथिला", शिव पूजन सहाय केर देहाती दुनिया मे काज कयलथि। मैथिली फिल्म ललका पाग लेल पहिल बेर कांट्रैक्ट साइन केने छलथि। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारसँ सम्मानित मैथिली फिल्म "मिथिला मखान" मे दीना केर माय बनल छलथि। अभिनयक संग प्रेमलता मिश्र दी सुपरिचित साहित्यकार सेहो छथि। हिनक रचना बहुत रास पत्रिका सबमे प्रकाशित भेल छनि। महिला रंगकर्मीक रूपमे प्रेमलता दी बहुत रास संस्था सबसँ जुड़ल छथि जेना कि रंगिमा, अरिपन, चेतना समिति, मैथिली महिला संघ आदि।

- जया झा- संपर्क-पटना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

𑓒.𑓑.𑒅𑒭𑒰𑒏𑒱𑒩𑒝 𑒐𑒰𑒢- 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒲 (𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰)

**𑒅𑒭𑒰𑒏𑒱𑒩𑒝 𑒐𑒰𑒢**

𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒲 (𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰)

"𑒋𑒧.𑒋" 𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒂 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒲.𑒙𑒲.𑒋𑒮 𑒯𑒰𑒮𑓂𑒙𑒪 𑒧𑒰𑒢 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒫𑒰𑒮 𑒖𑒹 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒏𑒿 𑒮𑒥 𑒏𑒰𑒼𑒪𑒹𑒖 𑒏𑒹 𑒢𑒰𑒧𑓂𑒯 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒫𑒰𑒮𑒧 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒏𑒰 𑒯𑒧𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒪 𑒑𑒰𑒩𑓂𑒖𑒱𑒨𑒢 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒋𑒐𑒢 𑒏𑒏𑒰𑒏 𑒞𑒢𑒰 𑒢𑒰𑒢𑒲 𑒒𑒰𑒙𑒧 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢𑒱। 𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒢𑒯𑒻 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒕𑒳𑒙𑓂𑒙𑒲 𑒢𑒥𑒱

दिन बितायब आसान नहि रहैक। एम.ए. क छात्रा सभ पूछापूछीक संकट नै रहए। रात्रि विश्राम सँ बाहर कनी सँ सूचना देबाक रहए। ओहू दिन ओ गेलहुँ नानी घर सँ काकी मंदी-मंदी सजमनि कटै छलीह आ लकड़ी वला चुल्हियन लागियाम ओ लड़की दूध औंटै छलै स दूध सन उज्जर छलै। हम काकी क गोर लागि ओहि ठाम बैसल मचियापर बैसि गेलहुँ। ओ जानि चुल्हिसँ बरतन कऽ आँच कम कली आ आबि हमरा गोर लगली।

"मिनी यै, ई बच्ची छथिन, हिनकर रमीजी" काकी कहए लगलीह ओ कान आँगनक हिनकर बच्ची सास-सास ममियौत रहथिन कि पितियौत। नौनी क पुत्रक आँगनक चर्च काकी गना कनथिन हमरा लग जना बूझाऊ ओ हमरा जन्म ओही ठाम रल हो। ई गप्प जनुन छै ओ जानए हमर अपन ममियौत हुनकर ओठ जमाए रलनि आ सद्यः जाउत ननदासि पानए हम सौंस बड़की टालक संबंधी क, क कहए, पारखनि-पाँखनि, बाड़ी-माड़ी, गाछ-बिरिछ आ तिरबान धनिकँ चीन्हि गेल नहियनि। कका-काकीकँ नहि नहलायन ओ गेलहुँ सँ निपट सून नौनीक उजड़ल-उपटल आँगन सर कल्पनाम जीबंत रऽ गेल छल। "आ ई बच्ची छथि.." काकी हमर पनिचय रुनी पाहिसँ पहिल बच्ची बाजि उठली "हम चीन्हि गेलियनि, ई मिन्नी बहीनि छथिन। अहाँ कान्हिसँ कतक बन कहलियै काकी ओ नवि दिन मिनी औतीह।" बच्चीक चंचल स्नेन हुनक उमनि लायक छलनि। ओ पंद्रह-सालह बर्षक रहथि आ हम बीस-एकैस क। बच्ची अपना पूत्रकँ माए लग छाड़ि परना पढ़ए आ जीवन आँगा बढ़बे क उद्यथसँ आएल छलीह। हमर बटी सहो हमरा माए लग छल, हम

एम.ए कएने छलाह नहि। ओ हमरे जकाँ पितृहीन छलथि। हमर लालन आ ओकर पालन गार्जियन यात्री कका छलथिन। (शोभाकांत, सुकांत, श्रीकान्त, श्यामाकांत हमरा सबहक अनुज आ उर्मिला मंजुल बहिन। स सदा निमहल अछि। ओ मैट्रिक पास छलथि, मिसरजी बी.ए पास छलथिन। सुदर्शन, गंभीर युवक। किछु दिनुका बाद ओ एकटा पैघ किताबक दोकानमे काज कयलनि। ओ काना स्कूलमे पढ़बा संग ट्यूशन, बी.ए, एम.ए आ पी.एच.डी धरि क' लेलनि। मिसरजी सेहो ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन केर स्थायी काजमे लागि गेलाह। ओ क दु टा आन पुत्र आ एकटा पुत्री अनुपमा छलखिन। ओ एकटा घर पटनाक कंकड़बागमे बनओलनि। प्राथमिक, माध्यमिकसँ हाइस्कूल ट्यूशन स्कूलक शिक्षिका भ' रिटायर कलीह। ओहो सब उच्च पदस्थ अधिकारी छलनि। एक गोट प्रायः अध्यवसायी मैथिल कन्या कहबए गुजना। तखन एक टा निन्दानलीक की अर्थ? आ कका यात्रीजी, काकी अपराजिता देवीक आशीष काना हलिग हाइस्कूल? ओकर माँ त छलखिन स कहिया-कहिया नहिकासँ अबथिन। हम आइ धरि ओहि काकीसँ सुन्नरि-सलज्ज स्त्री नहि देखलहुँ। ओइ निराहन्न स्त्री क मुखमंडल तेजोमय दूसाइ छलै। हमर स्वयं मात्रिक आ सासुर सबहक लड़की-स्त्री, वृद्धा अपरूप छलथि मुदा काकी सन नै। काकी क जीवन छोट छलनि। बहुत जल्दी चल गेलीह।

हम आकाशवाणीमे कविता पाठ करए सन् १९६० सँ जाए लागल छलहुँ। ओ १९६१ मे कका केर कहलासँ आकाशवाणीमे मैथिली नाटकमे भाग लेबए लगली। स एक नीक जकाँ मनोयोगसँ करए

लगलीह कि कइएक बर एकटिंग आ प्रसारण सेहो करथि। आस्ते-आस्ते जखन मैथिली नाटक पटनामे मंचपर आबए लागल, तखन बच्ची मंचपर उतरि गेलीह। मंचपर सबसँ पहिल आदरणीय सुभद्रा झा (हरिमोहन झाजीक धर्मपत्नी आ राजमोहन झाक माँ) उतरल रहथि स्वस्थ का लल रकाठे मुदा रहलनि आ ओ प्रसन्ना स रहलखिन। समय आगाँ बढ़लै, मुदा नुक्ताचीनी, मीन-मेख तँ निकालल जाइत छै। तइसँ की मिसरजीक उदार मान आ यात्री ककाक -काकीक संग सब बाधा खारिज कलकै। हमरा सन लोक समर्थनमे रहब करी। हम स्वयं मंचपर ककाक संग कविता पढ़ए विहानक अनेक नगरमे संग जाइ।

बच्चीमे अभिनयक गजब के प्रतिभा रहनि। बच्चीक दुआरे लोक अपन बेटीकेँ नाटक करए देथिन। मैथिलीमे महिला कलाकार आगाँ जे एलीह तकर श्रेय हिनकहि देल जाइ। हमर बेटी सबहक आदिगुरु मंचपर बच्ची मौसी रहथिन। मैथिली मंचक सतत सतत अभिनेत्री बच्ची कुशल संगठनकर्ता सेहो रहलीह। अरिपन नामक नाट्य संस्थाक संग छलीह। रंगिमा नामक नाट्य संस्था प्रारंभ कलनि, पररार चलौलनि। मैथिली-राजपूती सिनमा सबमे बच्ची एक टा विशिष्ट अंग छथि। "ममता गावय गीत" सँ लऽ कऽ मिथिला मखान धरि।

बच्ची यानी प्रमलता मिश्रा कुशल सामाजिक कार्यकर्ता रहलीह। रतना समितिमे शुरुएसँ सक्रिय रहलीह एवं आइयो उपाध्यक्ष छथि। रतना समितिक महिला शाखा के रूपमे कतेक दिन काज कलीह। हुन

मैथिली महिला संघक संस्थापक मंत्र सञ्चालिका रहल छथि। आइयो धरि सक्रिय छथि।

बच्ची साहित्य केर अनन्य प्रेमी कतेक ने रहलीह, यात्री ककरो किछु सँ प्रभावित रहै। कतेक पोथी बहराएल छनि। साँझ गोष्ठी नामक अनियतकालीन पत्रिका प्रकाशित करैत छथि, सहजहिं गोष्ठी होइत छनि। कतेक बालक-बालिकाकेँ रक्षा देखलनि बच्ची बिनु कोनो श्रेय लेने। समाजसेवा, संस्कृतिसेवा,साहित्यानुरागी बच्ची सन निरंहकारी, निर्लोभी स्त्रीक बलपर आधुनिक मिथिला चलै छै। एहन लोकक सँ काज छै। हमर सभक दृष्टि ध्यान नहि चलि रहल अछि हिनका राज्य सरकारक संगीत नाटक अकादमीक पुरस्कार देबा लेल अथवा एकर प्रतिनिधि चुनबा लेल। तेँ ओ चुपचाप अपना कर्त्तव्यपथपर चलैत जा रहल छथि तँ दायित्व छै मैथिलजनक कि हिनका लेल अवाज उठाबथि।

एहन अपना छोट बहिन बच्ची के हार्दिक आशीर्वाद।

- उषाकिरण खान- संपर्क-पटना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.विश्वनाथ झा- ओ दिन ओ पल : प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

**हरिनाथ झा**

ओ दिन ओ पल : प्रमिला मिश्र 'प्रेम'

बात कोनो बहुत पुरान नहिं, लगभग 1961क, मात्र उनसठि वर्ष पूर्वक। एक गामक स्कूल छात्राक माँ-पिताक अनुमति भेटलाक बाद, शिक्षकक प्रोत्साहन आ मार्गदर्शनक अछैत, ओहि छात्राक पिताक मना कयलापर, गामक लोकक एक विधान होयब आ शिक्षक लोकनिकेँ मारि-पीट करबाक हेतु एक जुट भय जमा होयबाक बात जखन कानोकान स्कूल तक आयल तँ ओहि अबोध किन्तु नाट्यमंचन हेतु तैयार बालिकाकेँ बिना नाटक खेलनहिं, विद्यालयक पछुआत बाटेँ गामपर पहुँचा देल जयबाक घटना, ओहि बालिकाक मन मस्तिष्कपर कतेक प्रभाव पड़ल होयत, से स्वतः अनुमान लगा सकैत छी। बात ई भेल रहैक, जे पहिने नाटकमे महिलाक पात्रक मंचन पुरुष कलाकार द्वारा कराओल जाइत छल, किन्तु ओहि बेर ओहि बालिकाक प्रतिभा आ कलाक प्रति समर्पणकेँ देखैत, प्रधान शिक्षक चण्डिका प्रसाद जी निर्णय लेलनि जे एहि बेर महिलाक पात्र महिलसँ मंचित कराओल जायत।

ओ बालिका किया आन नहि, मैथिलीक चिर-परिचित रंगकर्मी, सैकड़ा नाटक तथा अनेक मैथिली, हिन्दी, भोजपुरी, फीचर फिल्म, टेलीफिल्म आ धारावाहिकमे अभिनय कयनिहारि, ततेक नाटकमे सहभागी, अनेको महिला कलाकारकेँ प्रशिक्षित कए मंचपर अननिहारि, सम्मानसँ सरल, सहज, कतिपय साहित्यिक, सांस्कृतिक, नाट्यसंस्थाक निवर्तमान आ वर्तमान पदाधिकारी डॉ० प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'।

घटनाक एक दिनक प्रवासक क्रममे आइ अपन मित्रक ओहिठाम एक किताबपर ध्यान गेल, एकहि बैसकमे पढ़ि लेलहुँ, से स्मरणक छल, नाम *ओ दिन ओ पल *, लेखिका प्रेमलता मिश्र प्रेम। 2005क प्रकाशन। 15 वर्ष पुरान किताब तखन हमरा एक कलाकारक संघर्षक कथाक स्मरण एतेक त आकर्षित कयलक, संगहि शीर्षस्थ कलाकारक ई स्वीकारब जे बिना निर्देशकक नव कलाकारक संग नाट्यमंचन उपयुक्त नहि, से हमरो मनसँ अस्वीकार कयलनि, मैथिल समाज नहिकाक प्रस्ताव। लेकिन ओ पल हुनकर जीवनक तेहन महत्वपूर्ण छल जहल होइतनि, जाय अपनहिं नैहरमे, अपन स्कूलसँ पाछूक दरबाजा होइत पठा देल गेल छलनि, ओतहि विशाल मंचपर उद्घाटन करबाक अनुरोधकेँ स्वीकारैत ढोलक-ढोलक दुसाधटोली होइत मंचपर अयलीह आ उद्घाटन भाषण देलनि।

हिनक अभिनय काका बेर देखने छलियनि, पहिल बेर ओकर आँगनक बारहमासासँ लय जे 1973मे चेतना समिति पटना द्वारा

मंचित भेल छल आ एहिमे महिला कलाकार नृत्य अभिनय करैत छलीह।

स्वाभाविक अछि, नाटकसँ जुड़ल लोकक कारणसँ अधिकांश संस्मरण ओही दिशाक लोकसँ भेलनि, किन्तु से नहिं, ई नीक कथाकार छथि, संपादिका छथि, संगठनकर्मी सेहो छथि, वृत्तिएँ शिक्षिका सेहो आ सर्वोपरि समर्पित गृहिणी। एक संग एतेक कार्यक सफल संपादन कोना करय लैत छथि, से किछु झलक तँ एहि पुस्तकमे भेटिये जैत।

खण्ड-खण्डमे अपन रंगकर्मीक नृत्य यात्राक दर्शन, संगहि नव महिला/पुरुष कलाकारकेँ एहि दिस आकर्षित करब आ मातृता ठाकुर रविनिष्ठक विषयमे सोचब, एकरहि प्रतिफल अछि पटना आ आरा शहरक एहि नृत्य अपना नाट्य संस्था आ अपना प्रतिष्ठित कलाकार।

श्री विभूति आनन्दक बेर-बेर आग्रह आ पीठियापेठक तगादा पर ई संस्मरण लिखलनि अछि, से बेर-बेर स्मरण करबैत छथि आ नाटकक वहन अपन संघर्षक कथा तँ छनिहें, उपकारक आदान प्रदर्शन सेहो अछि, ठाना ई स्वीकार करैत छथि, उपकारक कृतज्ञता तँ मानक चाही ठीक, प्रकटक नहिं।

यात्रीजी हिनकर कक्का। कक्काक हिनका प्रति स्नेह, 1964मे ई पटना अयलीह। यात्रीजीक आशीर्वाद हिनका सदति भेटैत रहलनि, हिनक प्रतिभाकेँ ठा चीन्हि, हिनका बहुत प्रोत्साहित कयलखिन, अपना संग कतोक ठाम लय गेलखिन, से श्रीमती प्रमिलाजी बहुत ठाट संस्मरणमे

बहुत नव बात कहलनि अछि। नीकर सङ्कार क दुर्बल झा पाँजि कहि दायक पूट सेहो कौ -कौ अछि।

हरिमोहन बाबूक संग हिनक सान्निध्य सेहो रहल, ओहो पारिवारिक। सुख-दुःख सभमे। हरिमोहन बाबू जीवन आ साहित्यमे बहुत रसूक छलाह। ओ हुनका संग रहल अछि, हुनका संग तथ्य कयने अछि, हुनकर विषयमे कतेक जनैत अछि, सभक मानस पटल पर स्त्री अंकित हुब करत। कोना ठाढ़ बातपर हुनका आँखिसँ नोर खसय लगैत छलनि। मुदा जखन महिलाक सशक्तिकरणक बात सोझाँ देखैत छथि, तँ नोर खसब कोना अप्रत्याशित नहि, से सभ स्वत एहि संस्मरणमे, जीवन यात्रक बसी।

कोनो नाटककार, यदि ओ नव नाटकक सृजनमे ओकर ध्यान कोनो नायक/नायिकापर केन्द्रित रखि कय लिखबाक हेतु प्रेरणा देबा, तँ ओहि नायक/नायिकाक कलाक प्रति समर्पण बुझि सकैत छियैक, आ से बुझबैक सुधांशु शेखर चौधरीक विषयमे हिनक संस्मरण देखि। जहिना कोनो नाटकक मंचनमे शीत-ताप सभ अबैत छैक, तहिना हिनकर संस्मरणमे कला पक्ष आ जीवन पक्ष सभ समटल रहि जायत, जीवनक सभ गति-नियति देखि सकब।

देखि सकब ओहो, पंडित जयनाथ मिश्र व्यक्ति नहि, एक संस्था छलाह, हिनका विषयमे पढ़ि, एक झलक तँ लागिए सकत।

नाटक आ पंडित गोविन्द झा, हिनका लेल सभ दिन मान रहतनि। जाहि नाटक मंचनसँ हिनका चाकि देल गेल रहनि रहिकामे, ओकर

लेखक छलाह पं.गोविन्द झा आ नाटक छल "बसात"। ओ बसात सँ ओहि ठाम कतेक काल धरि नहि बहल गेल छल,मुदा सिहकैत बसातकेँ के नहि सकैछ ! से बसात एना ने सुगंधित सुरभि बहैत पसरल, से सम्पूर्ण मिथिलामे मीलक पाथर गाड़ि देलक। नाटकक चर्चा,निकासक इतिहास,महिला कलाकारक बढ़ैत डेग,सहमे एक टा मजबूत खम्भा,जकरहि चहुँ-दिस आ ओकरहि संबल आ आदर्श मानि चलैत अछि ओ नाम थिक प्रेमलता मिश्र प्रेम। पं. गोविन्द बाबूक आशीर्वाद हिनका जे भेटलनि आ एखनो भेटैत छनि,सेहो देखि जायत एतय।

पं. त्रिलोचन झा,श्री कान्त मण्डल,रंगकर्मी प्रेमिलाक आ प्रेमलताक बढ़ैत नाटकक रुचिमे कतेक रूपेँ ई लोकनि मनमे बसल-बसल छथिन,कतेक सहायक भेल छथि,नीक -बेजाय सेहो देखत हिनकालोकनिक अनुभवक प्रसंग।

ई पुस्तक 15 वर्षक परिश्रमक थिक,एकर बाद हिनकर संस्मरण आयल अछि कि नहि,हमरा नहि पता,जँ आयल अछि तँ हमरा पढ़बाक लेल रुचि जागृत कयने अछि आ यदि नहि तँ एहि निवेदनक संग जे एक पाठकक विनती मानि अपन जीवनक विषय संस्मरण लिखथि,जाहिसँ आगुक पीढ़ी हिनक सहृदय व्यक्तित्व,कठोर अनुशासन,नाटकक तँ सहजहिं,मिथिला-मैथिलीक लेल समर्पण,अनेको अग्रज-पूर्वजक आशीर्वादक सौराज्य प्राप्त श्रीमती प्रेमलता मिश्रजीकेँ जखन-जखन लोक पढ़त,तँ ओकरामे

उत्साह वर्धन, जीवनक लेल, संघर्षसँ लड़बाक लेल आ समाजकेँ एक नव दिशा देबाक लेल।

अनेको सम्मानसँ सम्मानित छथि, मुदा सभ सम्मानसँ रानी एखन ढूँढ़ैत रहैत छथि। हिनका जहिया 26 जनवरीकेँ सम्मान घोषित भेलनि, तहिया मिथिलाक अभिनय सम्मानित भेल, अहीं विश्वासक संग सुदीर्घ जीवन सक्रियताक सहित माँ जानकीसँ प्रार्थना।

--हितनाथ झा-संपर्क-09430743070

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.गुरुनारायण झा- मैथिली रंग मंच के पितामही प्रेम लता मिश्र 'प्रेम'


गुरुनारायण झा

मैथिली रंग मंच के पितामही प्रेम लता मिश्र "प्रेम"

मिथिला क्षेत्रक प्रत्येक नर नारी प्राकृतिक रूपसँ कला कर कोनो न कोनो प्रारूपमे जन्मजात कलाकार होइत अछि जाहिमे चित्र कला, संगीत कला, शिल्प कला, नाट्य कला इत्यादि प्रमुख अछि। ओना तँ मिथिलाक कोनो एहन गाम न होएत जाहि ठाम रंगकर्मसँ जुड़ल गतिविधि नै हो। नाच, नाटक गाम गाममे आयोजित होइत अछि। संवाद प्रधान, कीर्तनिया शैली आ नाच शैली क विभिन्न प्रारूप जेना अल्हा ऊदल, सलहेस, शीत बसन्त, लोरिक इत्यादि। किंतु दुर्भाग्य ई छल जे रंगमंचपर नारीक भागीदारी नै जकाँ रहल। किछु आर्केस्ट्रा सबमे गीत नृत्यमे नारी कलाकार सब उपस्थित होइत छल तँ सामाजिक प्रतिष्ठा क उत्तम उचित स्थान नै देल जाइत छल। आ तँ पुरुष कलाकार नारी चरित्र निमाहैयमे मजबूर होइत छथि। ओना तँ कलाकार होमक नाते नारी चरित्र निमाहैमे अनुचित त नै छल किंतु राष्ट्रीय आ अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच क समक्ष मैथिली रंगमंचक ई मजबूरी पिछड़ल पन क द्योतक छल। तहि समय मैथिली रंगमंचपर ४ सालक उम्रमे बालिका मंचपर उदित भेल छली अभिनेत्री प्रेमलता मिश्र प्रेम। ओ बादमे घटनाक मंचसँ लगातार अभिनय करैत रहलथि।

सज्जन सुशील मृदुभाषी आ सुंदर रूप क अभिनेत्री प्रेमलता जी लग मुख्य रूपसँ शिक्षिकाक रोजगार रहलनि आ अभिनय कला क प्रति अतीव समर्पिता। पतिक स्नेहयुत समर्थन आ सहयोगसँ हुनक हिम्मत मिथिलाक आन नारीमे जबरदस्त प्रेरणा क संचार कलक। परिणामतः बहुत रास मैथिल महिला आ धीया सब ई क्षेत्रम आगू एली जकर परिणाम ई ज वर्तमानमे मैथिली रंगमंचपर बहुतो उत्तम महिला

कलाकार कए कमी नै अछि। हँ गमैया मंच एखनहु अपरोक्ष अछिए।

एहन बात नै छै जे ओ थाकि गेली आ किछु नवका नै केली। मैथिली रंगमंच के सक्रिय रखबाक लेल जाड़,बर्खा कि प्रचंड गर्मीमे पएर चलि कऽ घर-घर चंदा लेनायसँ लऽ दर्शक के अरियाति कऽ हॉल तक लाबएमे ओ सदा लागल रहथि। मृदुल स्वभावक प्रेमलता जी ओना तँ रंगमा रंगमंचसँ जुड़ल रहथि मुदा मैथिली नाटक हेतु पटनाक निर्देशकक पसंद क कलाकार छथि। ओ बात अलग जे पटनामे शिक्षिकाक नौकरी चलते देश क अन्य मंचपर सक्रिय नै देखल जाइ छथि।

मैथिली नाटक हुनक जीविका नै रहलनि अपितु ओ एकरा एक आंदोलन क रूपमे सदैव मैथिली रंगमंच क अंतर्राष्ट्रीय पहचान हेतु क्रियाशील रहली। एखन धरि कतेक मंचन कऽ लेली तकर गणना हुनकासँ संभव नै छनि। मैथिली फिल्म "ममता" संग कार्य करबाक अवसर भेटल। दूरभाषपर पुछलियनि दीदी कतेक मंचन कऽ लेने हेबै? त कहली 'यौ गुरुनारायण जी! जे कऽ लियै ओ पाछू भऽ जाय आ हम पिछला बिसरि कऽ आगू क काजपर लागि जाय तँ पाछा रहत तेहन त किछु करब? " तहिना नाट्य प्रेमी दर्शक क सदा हृदयमे बास करै छथि ओ। समस्त नवतुरिया क 'माँ' आ परिपक्व क द्वारा आदरसँ 'दीदी' क संबोधनसँ सदा संबोधित प्रेमलता जी क आतिथ्य प्रेम बिलक्षण। 1985 क पटना प्रवास क समय 'अरिपन' नाट्य संस्था द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य

महासरस रंगमा क प्रस्तुति "असगर असगर "मे जखन युवावस्थामे १० बरखक वृद्ध महिला क अभिनय देखल छी त ओहिना ओखनहु जीवंत नजरिक सामने अछि। नाटकमे अभिनय क संग हुनक पहिला सुपरहिट मैथिली सिनेमा "सस्ता जिनगी महग सिंदूर"मे माता क भूमिका क खूब पसंद कैल गेल। किछु वर्ष पूर्व मैथिलीक पहिल राष्ट्रीय पुरस्कृत फिल्म 'मिथिला मखान'मे हिनक भूमिका प्रशंसनीय छल आ हालाहिमे प्रदर्शित महिला सशक्तिकरण आधारित मैथिली सिनेमा 'ववितिया' क काफी प्रशंसा कयल जा रहल अछि जाहिमे ओ केंद्रीय भूमिका दादी क निभाहि रहलि छथि।

ओना त ओ विभिन्न मैथिलीक सामाजिक संगठन क जिम्मेवार पदसँ क्रियाशील छथि आ साहित्यमे सेहो बहुत बेस काज करैत त्रैमासिक मैथिली पत्रिका एक संपादित करैत छथि। घर क बाल बच्चा क जिम्मेवारी निमाहैत आब पोता पोती एक हिनक संग रहैत रहैत छथि। एक मैथिल महिला द्वारा अपन भाषा क प्रति एतेक अनुराग देखबामे नहि आबैत अछि। खाँटी मैथिल संस्कृतिमे जीवन जीबैत तीन पीढ़ी क कलाकार संग काज करैत मैथिली रंग परिवेश हिनक सक्रियता क बादो ओखना भटकाबल देखबामे आबि रहल अछि आ स देखि करबा इच्छी पूरबामे संदेह नै ज ओ बाकिमे पीढ़ी संग काज करैत रहत नै छैथि।

मैथिल संस्कारमे संलग्न एकादु टा मनुक्ख ओहन नै भेटत जिनकासँ हृदयल बाता विवाद नै हो मूदा हमरा जनैत प्रेमलता जी ओहि अवधारणा क गलत सिद्ध करैत ओहन महिला छथि ज आजीवन

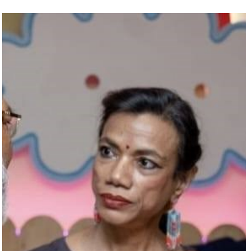
चेतना समिति, मैथिली महिला संघ, रंगिमा आदि संस्थासँ जुड़ल तँ रहली किंतु निर्विवाद रहली। सर्वप्रिय आ सर्वत्र आदर पाबैत रहली।

मैथिली नाटक, साहित्य आ मैथिली सामाजिक आंदोलनमे वर्ष-वर्ष सेवा दै वाली एखनहु एक प्रयासरत महिला कलाकार के मैथिली रंग जगतक पितामही कहब ने कही?

- शुभनारायण झा- संपर्क-दिल्ली

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.निरा नानी- 'रंगमंच मे नारी किएक नहिं स्वीकार छै'

निरा नानी

रंगमंच मे नारी किएक नहिं स्वीकार छै

'क करय कमजोर छँ, अपन कथा म जोर छौ, तनहुओ मुँहजोर छौ......'

राष्ट्रीय पुरस्कार स' सम्मानित फिल्म 'मैथिली मखान'क हमर लिखल एक टा गीत 'माटि पात' र बौआ....' स' लऽ कऽ ... मैथिली रंगमंचक सशक्त हस्ताक्षर, मैथिली नाट्य विधाक धरोहरि डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' लेल बहुत समीचीन बैसै छै.

मैथिली रंगमंचक आन बान आ शान बनल मैथिली समकालीन रंगमंचक प्रारम्भिक काल स' सफल यात्राक निमित्त कँ अपन उपस्थिति स' रहयवाली मैथिली रंगलोकक वरिष्ठतम रंगकर्मी, लेखिका, सम्पादक, शिक्षक आ सिनेमाक स्क्रीन पर 'ममता गावय गीत', 'दुलरा गंगा पार क', 'पिंजरा वाली मुनियाँ', 'सस्ता जिनगी महग सेनुर', 'ललका पाग', 'मिथिला मखान', 'बबितिया' आदि सिनेमा म अपन सहज, स्वाभाविक अभिनय स' आन लेल पर्याय बनल डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' मैथिलीक एकटा रंगकर्मी बनि मैथिली रंगमंच क विकट परिस्थिति मँ सहजि क' आगाँ बढैत गेलीह, अहि रंगयात्राक वर्णन कागज पर करनाऽ असम्भव त' नहिँ अछि. हँ, जिनगी म उतारल मुश्किल अवश्य छै.

जाहि समय म महिला सभ क घर स' निकलब मुश्किल रहै, ताहि समय मँ डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' रंगमंच क अपन कला सहित अपन धर्म-कर्म मानि समाजक सामने एकटा बड़ पैघ उदाहरण प्रस्तुत कयलहि. अहि हिसाबेँ मैथिली रंगमंच मँ हिनकर अद्भुत एवं अमिट योगदान छै.

मैथिली रंगमंच मे दिक्कति सदिखन स' चलैत आएल अछि. ओना रंगमंच अपन मे दिक्कतिक कारण नाम छियै. मुदा, मैथिली मे एखनो धरि ई एक गोट बहुत पैघ दिक्कति छै- महिला कलाकारक उपस्थिति. एहन दीर्घ दुष्कालक समय मे सम्भवतः वर्ष 1975-76 मे एक युवा मैथिली रंगमंचक भूमि पर उतरैत छथि. नाटक करैत छथि. हुनका एला स' मैथिली रंगमंच जेना अपूर्व प्रकाश स' प्रकाशमान होब' लागे छै. हुनका एला स' आन- आन लोक सभ के साहस होअ' लागे छै जे हमरा बहिन- बेटी सभ मैथिली रंगमंच मे जा सकैत अछि, नाटक क' सकैत अछि.

प्रेमलता जी अपन कहै छथिन्ह जे 'नाटक करैवाला सभ के शिक्षा- दीक्षाक परिवार के आश्वस्त कर' पड़तै जे रंगमंच आ ओकर कार्य-व्यापार एक पारिवारिक गतिविधि जकाँ छै. तखन ओ सभ अपन शिक्षा- दीक्षा, खास क' शिक्षा के पठौतन्हि रंगमंच लेल.' उषाकिरण खान कहै छथिन्ह जे 'हुनक कारण हमर सभ टा बच्चा सभ मैथिली रंगमंच मे उतरल.'

डॉ. उषाकिरण खान कहै छथिन्ह जे 'हम हुनक सभ टा नाटक देखने छियै. ओ एक टा 'एपीटाम' छथि.' उषा जी हुनका हुनक घरक नाम 'बच्ची' कहि क' सम्बोधित करै छथिन्ह. ओ कहै छथिन्ह-'बच्ची मैथिली रंगमंच पर 1974-75 मे एलीह. ताहि स' पहिने ओ नतिया नाटक मे काज करैत छलीह. यात्री काका ओहि ठाँ ओ अबैत छलीह. मैथिली रंगमंच मे बच्ची अतुलनीय छथि. नहि अभिनय, नहि

समर्थन म हुनक परगन कियो क' सकै छै. ओ अतुलनीय छथि आ ई उपलब्धि ओ अपना दम- खम पर हासिल केलीह.'

प्रेमलता जी जहन मैथिली नाटक कर' क आरम्भ केलीह, त' लगभग सए टा नाटक म ओ भाग लेलीह. 'काठक लोक', गाछ', आदि सहित गोविंद झाक 'रुक्मिणी हरण' सहित बहुत रास नाटक ओ केलन्हि. उषाकिरण खान लिखित 'चानो दाई', 'फागुन', 'मुसकौल बला' म ओ काज कएलखिन्ह.

हमर अपन दुर्भाग्य रहल जे हम हुनक एको टा नाटक नहि देखि सकलहुं. जहिया- जहिया पटना गेलहुं, ओहि समय म हुनक कोनो नाटक नहिं भ' रहल छलै. पहिने त' अइका समय सेहो नहिं छलै जे नाटकक रकॉर्डिंग भ' सकितियै अथवा यूट्यूब पर अपलोड क' दितियैक. मुदा हुनक स्वाभाविक अभिनय हम सिनेमाक माध्यम स अवश्य देखल.

2021क मार्च म जहन हम किरण सम्मान लेब' रहिका पहुँचलहुं, त' देखल जे आयोजन स्थल पर प्रेमलता जी बैसल छथिह. पहिल बेर बड्ड प्रेम स' भेंट- मुलाकात भेल. आयोजन स्थल स' ओ अपन घर देखबैत कहलखिन्ह जे 'अही ठाँ हमर घर अछि.' ओहि सांझ राति पाख गप्प भेल हुनका स'. हुनक रंगयात्राक बारे हुनक स' जानकारी भेंटल.

प्रेमलता जीक बड़ स्पष्ट मानब छै- 'पहिने त' अपना के अपना के बूझ' पड़त जे हम की चाहै छी? आजुक लोक सभ लग समय आ धैर्यक कमी छै. हमरा सभक समयक गप्प करैक दायित्व छलै. एखनो समितिक नाटक करैत काल हमरा सभ के दर्शकक अभाव कहियो नहिं भेल. मुदा आब छै. आब लोक आङनक सोझा म बहुत पास निकल छै. बहुत पैसाक सोझ मीडिया छै. तें आब हमरा सभ के दर्शक के जोड़ि क' राखबाक प्रयास कर' पड़त. आ ई समस्त रंगकर्मी के एकजुट भ' क' कर' पड़त. ई मात्र नाट्य निर्देशकक काज नहिं छै. अहूना रंगमंच म नाजा किंआ नहिं होइत छै. सभ किंआ कमी होइत छै. तें सभ के मिलि- जुलि क' प्रयास कर' पड़त.'

हम पुछबा कर छलियै जे 'आजुक युवा लेल परिस्थिति पहिने स' बेसी विषम छै. रोजगार कतहु नहिं छै आ नाटक म त' रोजगार लगभग शून्य सन छै.' प्रेमलता जी कहलखिन्ह जे 'एकरा लेल नाट्य कर्मी संगे समाज, संस्था, शिक्षण संस्था आदि सभ के आगां आब' पड़त. रोजगारपरक रंगमंच लेल हमरा सभ के सोच' पड़त.'

प्रेमलता जी प्रयोगधर्मी छथि. नाटक म मात्र नाट्यलेखक मंचन होअए, ओ एकरा स' कनेक आगां बढ़ि कहै छथिन्ह- 'ई आवश्यक नहिं जे नाटकक मंचन होअए. एहन बहुत कथा सभ छै. एकर मंचन भेला स' लोक आङन के सहज भ' जाइत छै ई कथा सभक माध्यम, किएक त' सभ के पढ़बाक अपन- अपन सीमा छै.' हिंदी म कथा मंचन म सभ स' अग्रणी नाम देवेंद्र राज अंकुर जीक छन्हि.

𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒩𑒱𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒗𑒰 𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒟𑒰 '𑒧𑒩𑓂𑒨𑒰𑒠𑒰 𑒯𑒩𑒝' 𑒣𑒩 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯. 𑒯𑒧𑒯𑒴𑓀 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒫 𑒖𑒲, 𑒩𑒬𑓂𑒧𑒱 𑒮𑒰𑒯𑒢𑒲, 𑒙𑒻𑒑𑒼𑒩, 𑒢𑒧𑒱𑒞𑒰 𑒑𑒳𑒣𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒧𑓀𑒔𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲.

𑒏𑒱𑒩𑒝 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒮' 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒁𑒯𑒱𑒩 𑒟𑒱𑒋𑒙𑒩 𑒩𑒳𑒣 𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮' 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒯𑒼𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪. 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧- 𑒣𑒰𑒞𑒲 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒲𑒧𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒪. 𑒏𑒱𑒩𑒝 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒮' 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮' 𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒩 𑒂𑒍𑒩 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒣𑒱𑒝𑓂𑒛𑒰𑒩𑒳𑒕 𑒧, 𑒖𑒞' 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒠𑒱𑒢 𑒂 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒫𑒱𑒧𑒼𑒔𑒢 𑒂𑒠𑒱 𑒣𑒩 𑒋𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒢𑒲𑒏 𑒂 𑒣𑒻𑒒 𑒠𑒳 𑒠𑒱𑒫𑒮𑒲𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒖𑒲𑒏 𑒡𑒱𑒨𑒰- 𑒣𑒳𑒞𑒰 𑒮𑒦 𑒧𑒱𑒪𑒱 𑒏' 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱. 𑒯𑒧𑒯𑒴𑓀 𑒥𑒖𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒲. 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒯𑒲- 𑒧𑒯𑒲 𑒥𑒖𑒻 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯. 𑒍 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮' 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒂 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒧𑒰𑓀𑒑 𑒏𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱. 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒳𑓀𑒥𑒃 𑒒𑒴𑒧𑒱 𑒏' 𑒯𑒧𑒯𑒴𑓀 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑓀, 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒤𑒼𑒢 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒢𑒱𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒢𑒯𑒱 𑒋𑒪𑒻. '𑒮𑒰𑓀𑒗 𑒠𑒩𑓂𑒣𑒝' 𑒯𑒧 𑒐𑒴𑒥 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑓀 𑒠𑒹𑒐𑒪, 𑒖𑒯𑒢 𑒍 𑒋𑒏𑒩 𑒋𑒏 𑒁𑓀𑒏 𑒍 𑒁𑒣𑒢 '𑒧𑒱𑒢𑒲 𑒠𑒲𑒠𑒲' 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒰𑒞 𑒅𑒭𑒰𑒏𑒱𑒩𑒝 𑒐𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒢 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢𑓂𑒯. 𑒞𑒯𑒢 𑒣𑒞𑒰 𑒔𑒪𑒪 𑒖𑒹 𑒍 𑒋𑒞𑒏 𑒢𑒲𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯. 𑒯𑒧 𑒍𑒯𑒱 𑒁𑓀𑒏 𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰 𑒏𑒋𑒪. 𑒁𑒯𑒱 𑒮𑒰𑒪 𑒪𑒱𑒪𑒲 𑒖𑒲𑒏 𑒢𑒱𑒡𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒑 𑒤𑒼𑒢 𑒂𑒋𑒪 𑒕𑒪 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐' 𑒪𑒹𑒪. 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒧 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒣𑒚𑒰𑒍𑒪.

𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒖𑒯𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒯𑒳𑓀𑒧𑒴𑒐𑒲 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒰𑒏𑒰𑓀𑒏𑓂𑒭 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻 𑒞' 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒱𑒡 𑒩𑒴𑒣 𑒠𑒹𑒐' 𑒧 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒻. 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒡𑒩𑒱 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒩𑒴𑒏𑒪𑒲𑒯. 𑒍 𑒮𑒧𑒨 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒨𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒖𑒰𑒩𑒲 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒋𑒧 𑒋, 𑒣𑒲 𑒋𑒔 𑒛𑒲 𑒏𑒪𑒲𑒯, 𑒢𑒾𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒪𑒲𑒯. 𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔 𑒂 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒧𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼

संग- संग चलैत रहलै. घर- परिवारक जिम्मेदारी त' सभ स्त्रीक एक भाग अभिन्न अंग छैक. ई सिद्ध करैत छै जे यदि अहाँ अपन कोनो लोक क संधान' लेल कटिबद्ध छी त' ओ मुश्किल सन भ' जाउ, असम्भव नहिं छै. आ ईहो सत्य छै जे एक रास काज कोनो स्त्रिए स' सम्भव छै.

प्रेमलता जी रंगमंच पर गप्प करैत एकर सर्वांगीण विकास पर गप्प करैत छथिन्ह. हुनक अनुसार, 'रंगमंच एक सामूहिक प्रक्रिया आ प्रयास छै.' आजुक रंगमंच पर गप्प करैत ओ कहै छथिन्ह 'जे युवा वर्ग जहन लक्ष्य बना क' चलताह जे हमरा रंगकर्म करबाक अछि, फिल्म अथवा सीरियल मे जेबाक हमर उद्देश्य नहिं अछि, तहन रंगमंचक विकास हेब टा करै.'

हुनक कहब छै, 'जे जहिया ओ रंगमंच शुरू केली, ओहि समय मे स्त्रिक लेल रंगमंच आ सिनेमा मे अभिनय करनाइ बड़ दुर्लभ छल. मुदा अपन जिद आ परिवारक सहयोग स' ओ पढाईक संग-संग रंगमंच करनाइ कहिया नै छोड़लीह.'

अहि स' एक चीज त' बड़ स्पष्ट रूपे दृष्टिगत होइ छै- 'परिवारक सहयोग.' आइ प्रेमलता जीक प्रशंसा मे जतेक विरुदावली गावि लेल जाय, प्रेमलता जी लेल ई सभ धुनि समान हेतै, ई हमरा सहज विश्वास अछि. हुनका लेल अपन हेबाक उपलब्धि ईएह छै, जहन मैथिलीक विधा सभ क रंगमंच, सिनेमा, गायन, नृत्य अथवा एहन कोनो रचनात्मक काज लेल 'परिवारक सहयोग' भेटै. तहन हुनक 1975 स मैथिली रंगमंच लेल जगाओल अलख सार्थक हेतै.

लोक आउन कहैत छथिन्ह जे 'ओ चंदा माँगि क', चूंजा झाँकि क', टोल-पड़ोसक टिकानी सुनिया क' ओ रंगमंच पर नव रूपा रखैत रहलीह.' हम मनैत अछि जे साँच्चो लोक! काज तहन होइत छै आ जहन काजक प्रति निष्ठा, समर्पण आ ईमानदारी रहै छै, तहन व्यक्तिक नाम होइत टा करै छै. जीविता किंवदंती अहिना लोक बनै छै- प्रेमलता जीक जकां.

फिल्म 'मिथिला मखान' क निर्देशक नितिन नीरा चंद्रा मानै छथिन्ह जे प्रेमलता जी 'The most talented artist' छथिन्ह. ओ लिखै छथिन्ह- '(She) is a thorough professional and very hard working actor.'

युवा रंगकर्मी आ मैथिली महिला एकल नाटक क बढ़ाबा देब' वाली सानी नीलू झा कहैत छथि जे 'रंगजगत म योगदान हेतु जखन कोनो स्त्रीक गप होएत त' निस्संदेह प्रेमलता मिश्र जीक नाम सबसँ उपर आओत. खास छथि ओ मैथिली रंगकर्मीक। ई गप हमर सबक नव पीढ़ी ला हमरा बला पीढ़ी म बुझबाक बस बगना अछि.'

सितम्बर मास (जन्म 29 सितम्बर,1948) म हिनक जन्मदिन मनाओल गेल. सब किओ हिनक गुणगान कएल. रंगनायिका, माँ, दवी आन समक्ष स्तुति पढ़ल गेल. 'जीवेत शरदः शतं शतम् सुदिनं सुदिनं जन्मदिनम्। विजयी भव सर्वदा जन्मदिनस्य हार्दिक शुभेच्छाः।।' क पाठ भेल.

सही छै. हुनका चाही. डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' अपन समस्त जीवन मैथिली रंगमंच क सम्वर्धन म लागल रहलीह. सामान्यतया ओ देखल जाइत छै जे हम स्त्री सब पुरुष दीदी, माँ, दादी आदि पद स' शोभायमान होब' लागैत छी. सम्भवत: हम स्त्रीगण सहज एकरा किछु सौकर्यजनित मानि लैत छी- एक गोट सिक्यूरिटी- भाव! आब कितेक किछु नहिं कहब. मुदा हमरा नहिं लगैत अछि जे प्रेमलता मिश्र लेल दीदी आ आब माँक सम्बोधन बहुत मायने राखैत हेतै. हमरा लगैत अछि जे हुनका प्रेमलता जी कहला सँ ओ ओतब सहज अनुभव क' रहलीह आ अपन काज करैत चललीह. अंतत: की हम सब आन ककरो कक्का, बाबा, बाउजीक सम्बोधन हुनसँ देब' लागै छियै?

आइयो हुन- हुन बड्ड गोल चक्कर पर जा क' हम बूझि जाइत छी, जे प्रेमलता मिश्रक जेना अपन युवावस्था म मैथिली नाटक म महिला कलाकार टीमक कमीक पूर्ति लेल ठाढ़ क' देलीह, तहिना हुनका दीदी, माँ, दादी, रंगनायिका, देवी आदि स' सुशोभित करैवाला स हम एकटा अनुरोध करब जे प्रेमलता मिश्र आ हुनका लेल देल गेल ओ अस्सलपूर्ण विशेषण सब लेल अपना गैरान होथु आ अपना घरक माय, बहीन, बेटी, पुतोहु सब क रंगमंच पर जाए लेल सहमति देथु. हुनका लेल माहौल बनाबथु, जेना महाराष्ट्र म होइत छै. हमर मित्र छलाह- विवेक रंगा. ओ कहै छलाह-'माय- बाप अपन धिया- पूता क आँगुर पकड़ि हमरा लग ल' अबैत छथि. कहै छथि- 'राखि एकरा. आब जेना देखबाक छौ, देख एकरा, जे बनेबाक छौ, बना एकरा. हुनक ओ विश्वास

हमरा अहि धिया- पुता सभ क गढ़' मे मदति करैत अछि.' हिनक रंगक करबक यथार्थ रूप देखैत छथि आ मनोहारीक बाल कलाकार सभ सङ्ग हुनक सिद्धहस्तता स' अपन प्रस्तुति दैत छथि, आ हमरा नवयुवक कलाकार सभ सङ्ग नहिं द' सकैत छथि अनका ओम. अहीं समय म सार्थक होइत छथि ओ. प्रमिला मिश्र 'प्रेम' सनक व्यक्तित्व बननाइ आ ओकर रास- रंग, अपन- अपन स्वयंक गोयानी म लगनाइ.

- निरा नारी-संपर्क-मूंवइ

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.११.डॉ शिव कुमार मिश्र- मिथिलाक विदुषी परम्पराक अनुपम-स्तम्भ श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'



डॉ शिव कुमार मिश्र

मिथिलाक विदुषी परम्पराक अनुपम-स्तम्भ श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

मिथिलाक सांस्कृतिक परम्पराक संरक्षक दृष्टिसँ पछिला छह दशकमे एकमात्र मैथिलानीक नाम लेल जाइत अछि, ओ नाम अछि प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'। जाहि मैथिल समाजकेँ बुद्धिवादिता प्रसिद्ध कएने जा रहल अछि ताहि समाजसँ जऽ कोनो स्त्रीगण उच्च शिक्षा लऽ रोजगार पबैत छथि ओ एकटा बड़ बेस घटना होइत छैक। ताहूसँ बेस ई होइछ जखन कोनो ललना रंगमंचपर भाग लैत छथि। ओना मैथिल स्त्रीगणमे शिक्षाक अद्भुत विकास भेलैक अछि। बेस-बेस पद-प्रतिष्ठा सेहो भेटलैक अछि मुदा मैथिल रंगमंचक लेल मैथिल कन्याक संख्या नगण्य अछि। पटनाक रंगमंच तऽ आओर हिहिया रहल अछि। पछिला किछु सालसँ तऽ आओर स्थिति नीचाँ जा रहल अछि। एहन वातावरणमे एकटा उच्च शिक्षासँ युक्त विदुषी जऽ अपन

𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒒𑒢 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑓄 𑒍 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒾𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧' 𑒬𑓂𑒩𑒠𑓂𑒡𑒹𑒨 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲𑒖𑒲, 𑒣𑒠𑓂𑒧𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒅𑒭𑒰𑒏𑒱𑒩𑒝 𑒐𑒰𑒢, 𑒕𑒞𑓂𑒩𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒗𑒰 '𑒥𑒙𑒳𑒏 𑒦𑒰𑒃𑒖𑒲' 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒵𑒞𑒱 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒞𑒼𑒏 𑒣𑒳𑒩𑒼𑒡𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒩𑓂𑒏𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒱 𑒣𑒕𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒞𑒼𑒏 𑒠𑒬𑒏𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒵𑒜𑓃 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒢𑒢𑒰-𑒑𑒳𑒙𑒏𑒰 𑒍 𑒩𑓀𑒑𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲 𑒮𑒦𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒫𑒰 𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢𑒧𑒹 𑒖𑓄 𑒍 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑓄 𑒍 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 '𑒮𑒰𑓀𑒡𑓂𑒨-𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲' 𑒁𑒢𑒫𑒩𑒞 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒮𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒱𑒧 𑒬𑒢𑒱𑒏 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒧𑒹 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒕। 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒢𑒫𑒼𑒠𑒱𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒦 𑒖𑒳𑒙𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒩𑒮𑒣𑒰𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒥𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒣𑒢𑒣𑒱𑒨𑒰𑒃𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑒨-𑒮𑒧𑒨𑒣𑒩 '𑒮𑒰𑓀𑒡𑓂𑒨-𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲' 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒕। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒍 𑒏𑒵𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫𑒣𑒩 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒏 𑒣𑓀𑒖𑒲𑒏𑒩𑒝𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒁𑒟𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒏𑒞𑒼𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒍 𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒠𑓂𑒡 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧' 𑒮𑒢𑓂 𑓑𑓙𑓖𑓔 𑒮𑒿 𑒂𑒏𑒰𑒬𑒫𑒰𑒝𑒲 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒩𑓂𑒏𑒧𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒂𑒏𑒰𑒬𑒫𑒰𑒝𑒲𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒍 𑒮𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒑𑒞𑒱𑒫𑒱𑒡𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒞𑒞 𑒮𑓀𑒪𑒑𑓂𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒍 𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒻𑒒 𑒮𑓂𑒞𑒧𑓂𑒦 𑒥𑒢𑒪𑒲𑒯। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔𑒏 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒪𑒰𑒫𑒹 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒰𑒢𑒲𑒣𑒩 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒣𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒕 𑒖𑒹 𑒋𑒞𑒼𑒏 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞 𑒦𑒰𑒫𑒢𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒩𑓂𑒑 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒯𑒼𑒟𑒱।

आकाशवाणीक नाटक, वार्ता, कथा आ कम्पीयरिंग प्रभृतिमे हुनक सहभागिता रहल तऽ १९७३ सऽ एखन धरि रंगमंचपर सेहो मैथिली नाटकक विभिन्न भूमिका सभमे हुनक सक्रिय सहभागिता रहल। सन् १९८१ मे रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा निर्मित आ निर्देशित पहिल मैथिली सिनेमा 'ममता गाबय गीत', प्रकाश झा द्वारा निर्मित हिन्दी सिनेमा 'दामुल', हिन्दी टेलीफिल्म 'कथा माधोपुर की', दूरदर्शनक हिन्दी धारावाहिक 'चौपाल', प्रमोद कुमार चौधरी द्वारा निर्मित एवम् निर्देशित 'पर्व रंग मिथिला', हिन्दी टेलीफिल्म 'मर्यादा', 'जहाँ चाह वहाँ राह', 'बारह बीघा', 'देहाती दुनियाँ', मैथिली धारावाहिक 'नैन नै तिरपित भेल', राजेश कुमार द्वारा निर्मित भोजपुरी दूरदर्शन धारावाहिक 'साँची पिरितिया', लक्ष्मण शाहाबादी द्वारा निर्मित आ राजकुमार शर्मा द्वारा निर्देशित भोजपुरी फिल्म 'दूल्हा गंगा पार के', प्रमोद शर्माक भोजपुरी फिल्म 'बबुआ हमार', अरविन्द रंजन दास द्वारा निर्देशित आ निर्मित 'पिंजड़ा वाली मुनियाँ', मैथिली फिल्म 'सस्ता जिनगी महग सिनूर' आ 'मिथिला मखान' प्रभृति कतोक फिल्म आ धारावाहिकमे हुनक अभिनय भेल अछि।

मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बन्धित कतोक संस्थाक संस्थापक तऽ कतोक संस्थानक सक्रिय सदस्या छथि प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'। हिनक साहित्यिक आ सांस्कृतिक सक्रियता हिनका एकटा संस्थानक रूपमे स्थापित कए देने अछि। चेतना समिति, रंगिमा, अभियनक संगहि पटना आ आन-आन स्थानक संस्थाक संग हिनक सक्रिय सहभागिता रहल अछि तऽ मैथिली साहित्य संस्थानक कोनो विद्वत् संगोष्ठी प्रेमलताजीक सहभागिताक बिना अपूर्ण रहैछ। चेतना समितिक उपाध्यक्षक रूपमे

हिनक जिम्मेदारी बसी बढ़ि गेल छल, प्रत्येक कार्यकलापमे बढ़ि-चढ़ि कऽ सहयोग देबाक लेल सदिखन उपलब्ध रहैत छलीह।

वर्तमानमे सेहो कार्यकारिणी समिति आ कतेक आन-आन समिति एवं निर्णायक मण्डलमे हिनक सहभागिता बनल रहैछ। 'मिथिला मखान' नामक सिनेमाकेँ राष्ट्रीय सम्मान भेटल छल जाहिमे प्रेमलता मिश्रजीक अभिनय सेहो भेल छल। मैथिली साहित्य संस्थान, पटना द्वारा एकटा विशेष कार्यक्रम आयोजित कए ओहि सिनेमाक कलाकार श्रीमती 'प्रेम'केँ सम्मानित कएल गेल छल। एहि कार्यक्रममे प्रख्यात साहित्यकार पद्मश्री उषाकिरण खान द्वारा प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रोफेसर हेतुकर झाक अध्यक्षतामे हिनका सम्मानित कएल गेल छल। २८ मई २०१६ कऽ विहान निसर्ग सोसाइटीक सभागारमे ई कार्यक्रम आयोजित भेल छल जाहिमे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपति प्रोफेसर साकेत कुशवाहाक अलावे प्रो. लखनाथ मिश्र, पंचानन मिश्र, छत्रानन्द सिंह झा 'बटुक भाई' सहित राजधानीक शताधिक विद्वान जुटल रहथि।

उपरोक्त संस्थानक अलावा मैथिली महिला संघ, पटना; विहान संगीत नाटक अकादमी, पटना; मैथिली अकादमी, पटना; लोकमंच प्रभृति कतेक संस्थाक संचालन आ क्रियाकलापमे श्रीमती प्रेमक सहभागिता बनल रहल अछि।

उत्कृष्ट अभिनयक लेल श्रीमती प्रेमलताजीकेँ कतेक संस्थान द्वारा कतेक सम्मान आ पुरस्कार प्रदान कएल गेल अछि जकर एकटा पैघ सूची

अछि। मुदा एहन धरोहरि सेनानीकेँ सम्मानित कए कोनो संस्थान वा संगठन अपना-आपकेँ गौरवान्वित करैत अछि।

मिथिलाक विदुषी परम्परा स्वर्णिम अतीत् अछि। प्राचीन स्त्री-शिक्षाक आधार मिथिलाक विदुषीगणक क्रियाकलाप थिक। गार्गी, मैत्रेयी, सुलभा, भारती, भामती, जयन्ती देवी, वासठी देवी, अम्बपाली, लखिमा देवी, विश्वास देवी, लखिमा ठकुराइन प्रभृति विदुषीक एकटा पैघ परम्परा मिथिलामे अछि, ताहि परम्पराक अनुपम स्तम्भ छथि- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'। सन् १९४८मे हिनक प्रादुर्भाव भेल, सन् २००८मे पटनाक बाँकीपुर राजकीय बालिका विद्यालयक शिक्षिकाक पदसँ सेवानिवृत्त भय साहित्य, संस्कृति संरक्षण लेल अपनाकेँ समर्पित कय देने छथि। एहन धरोहरि सेनानीक प्रति सादर नमन। ईश्वरसँ हिनका दीर्घायु करबाक कामना।

-डॉ शिव कुमार मिश्र, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना।
मोबाइल- ९१२२६८६७८६

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.आशीष अनचिन्हार- कला लल वनिस्पता नै दऊगा मायदंत छै

आशीष अनचिन्हार

कला लल वनिस्पता नै दऊगा मायदंत छै

हम आन बात कहबासँ पहिने एकटा लिस्ट दऽ रहल छी। ई लिस्ट ओहन हिंदी फिल्म कर छै जकर निर्देशक पहिल छलाह। मार ओहि फिल्मसँ ओ लोकनि निर्देशन कर काज शुरू केलाह-

Sooraj R Barjatya (Maine Pyar Kiya) (1989) ...

Aditya Chopra (Dilwale Dulhania Le Jayenge) (1995) ...

Karan Johar (Kuch Kuch Hota hai) (1998) ...

Farhan Akhtar (Dil Chahta Hai) (2001) ...

Rajkumar Hirani (Munna Bhai MBBS) (2003) ...

Aamir Khan (Tare Zameen Par) (2007)

जखन अहाँ ई लिस्ट देखबै तँ पता चलत जे निर्देशक कोन फिल्म पहिल छै मुदा ओहि फिल्मक अभिनय करए बला अभिनेता सेहो नव-पुरान छन्हु छै। ईहो पता चलत जे किछु अभिनेता निर्देशक रूपमे सेहो छथि आ ई गलत नै छै। ओ अभिनेता सेहो अपन निर्देशकीय क्षमताक लोहा सेहो मनबैत छथि। सेकेँ अपन मनानुकूल काज करबाक अधिकार छै। मुदा सातियो ओँ राजकपूर ओँ ई साबित करैथिन जे हम हिट हीरो छी, नीक अभिनेता छी तँइ हम हिट निर्देशक आ नीक निर्देशक सेहो छी तँ कहए लगलै। लागब तँ जे हो मुदा तखन निर्देशक रूपमे राजकपूर सफल भए नै करैथि आ ने ओ मौन बनि पबैथि। अहाँ अही लिस्टमे देखू Munna Bhai MBBS मे ओँ संजय दत्त ई कहए चहैथि जे हम पुरान हिट हीरो छी तँइ राजकुमार हीरानीक निर्देशनमे काज नै करब तँ कहए लगलै। मुदा विश्वास मानू बॉलीवुडमे एहन बात भए नै करौ कारण ओहिठाम सेहो प्रोफेशनल छै आ सेकँ कुशल छै जे फिल्म लाइन कोन एकर काज लेल अलग-अलग दक्षताक जरूरति छै। ई बात सेहो हमरा एहि दुआरे लिखए पड़ल अछि जे "आखर" कोन कार्यक्रमक एकटा समाद हमरा पठबाक लेल देल जाहिमे प्रेमलताजीक रचना रहनि जे ओ "मैथिली नाटक लेल अपन कम उम्र कोन निर्देशक तनूजा शंकरक संगे कार्य कएलनि"। प्रेमलताजीक एहि कथनसँ दू टा बात स्थापित होइत अछि पहिल जे मैथिलीयन ओहो इमोशनल अत्याचार करबासँ पाछू नहि हटैत छथि ई कहि जे "मैथिली नाटक लेल.." आ दोसर जे ओ कलाम

योग्यताक स्थानपर कनिष्ठताकेँ अनुमोदन करै छथि। हमरा लागल जे ई रचना सँ प्रारम्भ भेल काजक ठीक विपरीत छै। रंगमंच आ रंगकर्मी हमरा लेखक वर्गक तुलनामे बेसी नीक बुझाइत छल मुदा एहि तरहक रचनासँ हमरा लागल जे रंगमंचमे मैथिली साहित्य बला बेमारी आबि गेलै। मूलतः ई मनोवृत्ति सरसँ बेसी मैथिली लेखकमे रहैत आ ओतहिसँ ई बेमारी आन ठाम आबि गेलै। हम एहि समस्यासँ बेसी काल मुठभेड़ करैत रहल छी। हम गजलमे छी तँ हमरा सामनमे ई हो दिक्कत आएल। किछु लेखक कहलाह जे हम ४०-४२ वर्खसँ मैथिली सेवामे लागल छथि तँइ हमर रचना गजल भेल। आब ई कहू जे गजल कर मापदंड अहाँ कतेक वर्खसँ लिखैत छी से कोना भऽ सकैए? एहन-एहन उदाहरण बहुत भेटत। मैथिलीमे सरसँ बड़का समस्या छै जे ओ किया एक विशेष कलामे महारत हासिल कर छथि तँ ओ अपनाकेँ सर्वकला विशेषज्ञ मानि लै छथि।

प्रेमलताजीक प्रति समस्त आदर आ सम्मान रखैत हम कहए चाहैत छी जे एहि तरहक रचना मैथिली रंगमंचकेँ नोकसान करत। कते नोकसान भेल हेतै भविष्यमे तकर आकलन रंग आलोचक सब करथि। मुदा एहि ठाम हम अपन स्पष्ट एहि बातक कहलहुँ जे एहि प्रवृत्तिसँ साहित्य तँ गर्तमे चलिए गेल छै कमसँ कम रंगमंच बाँचल रहए।

जाहि ठामसँ हमरा आखर संबंधी समाद भेटल तकर लिंक अछि- https://news4nation.com/news/aakhar-dr-

premlata-mishra-840062

-आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.आरती झा- रंगकर्मी प्रेमलता मिश्रक साहित्यिक छवि- ३म दिन

ओ पल

आभा झा

रंगकर्मी प्रेमलता मिश्रक साहित्यिक छवि- ओ दिन ओ पल

जखन लेखक अपन जीवनक अनन्त स्मृतिक धरोहरिसँ किछु रमणीय अनुभूतिकेँ चित्रात्मकता ओ नाटकीयताक संग कलात्मक शैलीमे लिखैत अछि त' ओ संस्मरण कहबैत अछि। मुदा संस्मरण तखनहिं अपन प्रभाव पाठकक मोन-मस्तिष्क पर छोड़ि सकैछ जखन संस्मरण-लेखक आत्मीयतासँ कथा स्मृतिकेँ शब्दाकार दैत अछि। संगहिं इहो आवश्यक जे लेखक कथा पुरुष अथवा चरित्रक ओहि पक्षकेँ मजगूतीसँ सामाँ आनि सकय जे जना ओ स्वयं ओहि उद्घाटितपक्षकेँ मोन पाड़बा लेल विवश रहल तहिना पाठकक सेहो तादात्म्य स्थापित भऽ सकए।

संस्मरण शब्दक ओँ व्युत्पत्ति पर गौर करी त' **सम्** उपसर्ग पूर्वक **स्मृ** धातु संग **ल्युट्** प्रत्यय लगलासँ संस्मरण शब्द बनैत अछि जकर अर्थ होइछ- संस्कार- जन्य -ज्ञान । अर्थात् ज्ञातवस्तुक अनुभवक अधीन संस्कारसँ उत्पन्न ज्ञान,चिन्तन अथवा स्मृति।

संम्पादक एकटा महत्वपूर्ण विशेषता कृतज्ञता सेहो थिक। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति अपन जीवनमे प्रकृति,माता-पिता, परिवार-जनक अतिरिक्त अनेक अन्य लोकसँ उपकृत होइत अछि,मुदा सभ उपकार मोन नहि राखैत अछि, किछु मोन रखितो उपकार अभिव्यक्त नहि कऽ सकैत अछि आ किछु लोक एहन होइत छथि जे तत्कालिक समय किंवा काला सम-विषम परिस्थितिमे हुनकहु द्वारा कएल गेल छोटसँ छोट सहायता वा सेवा लेल हृदयसँ ओहि व्यक्तिक प्रति आदर-भाव रखैत छथि, कृतज्ञता अनुभव करैत छथि आ निर्द्वन्द्वभावेँ शाब्दिक आभार प्रकट करैत छथि। ओहन संवेदनशील कलाकार आ कलमकार छथि **श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'** जे स्वयंकेँ मात्र सामान्य रंगकर्मी बुझैत छथि, साहित्यिक व्यक्ति नहि। ओ सम्भवतः अपन लेखनक क्रममे बेर बेर विभूति जीक नाम लैत कहैत छथि- ओ हमरासँ किछु गीत-नाद अनुरोध लिखबा लैत छथि, हमरा सँ खिस्सा पिहानी लिखबा लैत छथि,नहि त' हमरा त' मात्र रङ्ग धन' आयल अछि।

ओ थिक विनम्रता,ओ थिक माटिसँ जुड़ल रहबाक संस्कार आ ओहे थिक ओ मानवीय गुण जे मनुष्यकेँ वस्तुतः मनुष्य बनबैत छैक। ओ सत्य, जे प्रेमलता मिश्रक नाम लैत रही मिथिलाक एकटा ओहन महिलाक व्यक्तित्व आँखिक सामाँ अबैत अछि,जे बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धक शुरुहेमे (१९६४-६५)रंगमंचसँ जुड़लीह, रंगमंचकेँ जीवनक पर्याय बनौलनि आ गैयाँ अपन पारिवारिक-सामाजिक जीवनमे तालमेल बनौने रहि सकलीह। निस्संदेह तहि समयमे ओ क्रान्तिकारी डेग छल, जकर आलोचना-प्रत्यालोचना होइत

रहलै, तथापि किछु शुरुहेंक आ पतिक सहयोगक बलें ओ ने मात्र स्वयं बढ़ैत रहलीह, अपितु सैकड़ोक बहुत नारि स्त्री लेल प्रेरिका बनलीह। एहन सहज-सरल समर्पणपूर्ण स्वभावक कारणें ओ सबहक मातृतुल्या मानल जाइत छथि । आइ हुनक औपन्यासिक नहिं, अपितु सरल हृदयक साफ-सरल शैलीमे लिखल संस्मरणक माध्यमे हुनक व्यक्तित्वक कृतज्ञताक संग हुनक जीवनमे आयल किछु श्रेष्ठ जनक व्यक्तित्वक ओहि वैशिष्ट्य सबहक साक्षात्कार करबाक प्रयास करब,जे सामान्य बुझाइतो विशिष्ट अछि,ताहिसँ लेबा जोगर अछि आ आत्मसात करबा जोगर अछि-

संस्मरणक पहिल अध्यायमे ओ मोन पाड़ैत छथि यात्रीजीकेँ,हुनक सिद्धान्तकेँ,हुनक पितृवत्सलताकेँ,हुनक संस्कारक वात्सल्य आ निश्छलताकेँ।

"जाबत धरि हम व्यवस्थित जिनगीमे नहि आबि गेलहुँ,ताबत धरि हुनक बासा हमर शरणस्थली रहल... "

"ओ हमर पिता छलाह, मित्र आकि मार्गदर्शक-हम निर्णय नहि ल' सकैत छी। "

आकाशवाणीमे एहन प्रवेश लेल, रंगमंच, चेतना समिति आदिमे सक्रियता लेल,स्त्रीक मोनमे अधिकारक जागरूकता लेल प्रेरणादायी हुनका प्रति एहन कृतज्ञता बिसरैत नहिं छथि आ **लोककेँ ल' जाइत छथिन यात्री जीक साहित्यिक गुनाक सुमिरि एकटा**

सहृदय- निश्छल- पितृतुल्य उदार भूमिम,हुनक सैद्धांतिक कल्पना आ यायावरी प्रवृत्तिसँ हुनाक सिनेहसँ सानल वात्सल्यक अकृत्रिम माटिम।

संस्मरणक दोसर फूल समर्पित छनि श्री हरिमोहन झाकेँ,जनिकासँ पटना मे अपन रंग आ पदनन्दन निकासित पितृत्व-स्नेही-संबंधक महत्वपूर्ण निर्वाह आ प्राप्त उचित मार्गदर्शनक उल्लेख करैत हुनका प्रति अपन श्रद्धाञ्जलि अर्पित कएने छथि। हुनक रचनाधर्मता सिनेहक छिटकासँ अभिसिंचित,हुनक पत्नीक(प्रमिलाजीक काकीक) घ'रक वातावरण ओतसँ प्रभावित मानैत बहुत श्रद्धा संग हुनका स्मरण करैत छथि। हरिमोहन झाक स्त्री-समानताक समर्थककेँ हुनकहि मुँहसँ ओ सुनने छलीह-"आइ हमर सपना साकार भेल। एहि दिनक कल्पना हम कएने नहि। मैथिल ललना लोकनि आब जागि गेलीह... एहिसँ बढ़िक' खुशीक बात हमरा लेल की भ' सकैत अछि!"

सुधांशु शेखर चौधरी जीक प्रति अपन गहन स्मृति-पुष्प अर्पित करैत ओ कहैत छथि-"कोनो नाटककारक निधन एकटा कलाकारक हेतु माय-बापक मृत्युसँ कम नहि होइत छैक।"

लेखनजीक वर्णन करैत ओ पुनः कहैत छथि-"एकटा नाटककार सदा अपन नाटक लिखबाक समय ओकर प्रत्येक पात्रक भूमिकाक संबंधमे सोचैत अछि, ओकरा हेतु ओहि मात्र दू घंटाक वा किछु समयक नाटकमे किछु एहन चरित्रक संरचना करैछ जाहिसँ ओकर प्रत्येक पात्र दर्शकक हृदयमे दीर्घजीवी भ' सकए। एकर निर्वाह लेखन जी अपन नाटकमे पूर्णरूपेण करैत छलाह, चाहे ओ 15-20 मिनटक रतिया नाटक हो अथवा दू घंटाक रंगमंचीय नाटक।"

प्रमिला जी प्रायः सुधांशु शेखर चौधरी जीक सङ नाटकमे अभिनय करैलनि आ हुनका मुँहेँ अपन याप्राक स्वीकारोक्ति हुनका अर्थात् मुदित करैत छलनि-

" जखन हम नाटक लिखब आरंभ कयल छी, तहिआसँ हमरा सामाँ आबि जाइत छी आ ओ संवाद हम प्रमिलाक हेतु लिखैत छी। "

हुनक साहित्य पर शोध करबाक प्रमिला जीक स्वप्न छलनि आ ओ पूरा नहि भेलनि। मुदा ओ स्वयंकेँ कटघरामे ठाढ़ करैत छथि। (ओहि पोथीक अनुसार)

पं जयनाथ मिश्रकेँ स्मृति-ग्रंथमे ई ओ कहैत छथि-

"पं जयनाथ मिश्र एक व्यक्ति नहि अपितु संस्थाक नाम अछि। "

पुनः हुनक तुलना विशाल वटवृक्षसँ करैत ओ कहैत छथि- "गाछ कोना वर्ग-भेद, जाति-भेद ,धर्म -भेद नहि करैत अछि। ओहिना व्यक्तिक हेतु किया खास नहि होइत छैक, मुदा ओहि व्यक्तित्वक अपन विशेषता होइत छैक जे लोक हुनका अपन खास हेबाक दावी करए लगैत अछि। ओ अपन भाषा संस्कृतिक संगहि संग मानवताक पुजारी छलाह। "

तदुपरान्त ओ नारी-जागरणक अग्रदूत नृपम पं. गोविन्द झाकेँ देखैत हुनका प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत छथि-

"ई साल नाटकक माध्यमे हुनका अपन अभिनय-कलाक विविधताक अवसर भेटल। वैसे नाटकमे एक रंगक भूमिकासँ उपजल अकुलाहटिकेँ दूर कए हुनकामे स्फूर्ति आनि देलक।"

"ओना साल नाटकक पात्र सभ तत्कालमे ओ सामाजिक धारा बनि गेल अछि, तकर धाराक विपरीत परिवर्तन चाहैत अछि। आइसँ 40 वर्ष पूर्व ओ नाटक लिखल गेल, तकर बाद ओ नवीनतम कृति (नवरात्रि देखि) छनि ताहुमे अछि। एहि नाटकक जन-चेतनाक पक्षधर अभिजात अछि, परंच लिलहा काठीनलाक अत्याचारसँ त्राण पएबाक हेतु एक संग भए संघर्ष करैत अछि। तकरा

लौकिक एकतासँ समाजमे परिवर्तन अबैत अछि।"

"ओना गोविंद सा ताहुन सांस्कृतिक पुरुष छथि जनिक जीवनक समस्त स्नेह-वाणी अनुज साहित्यकार-कलाकार लेल छनि। जनक हिनकासँ रंग-कर्मीकेँ भेटलैक अथवा भेटि गेल छैक तनिक आन-कोना व्यक्तिसँ नहिं।"

गुरुजी नुपम यं. त्रिलोचन साक स्मरण करैत प्रमिला जी कहैत छथि-"सन 1984 -85 मे गुरुजी कोलकाता महानगरी केँ त्यागि पटनाकेँ अपन वास-स्थान बनौलनि। हुनका लौकिक समाज एक निर्देशकक नुपम अपलाह 'चेतना समिति' द्वारा मंचित नाटकक माध्यमे। हुनक कार्यशैलीसँ सभ कलाकार प्रभावित छल आ संगहि हुनक शिष्यत्व ग्रहण करबाक हेतु उताहुल सभ।"

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔𑒧𑒹 𑒢𑒫𑒲𑒢 𑒞𑒏𑒢𑒲𑒏𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒫𑒹𑒬 𑒂 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞𑒱 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 [illegible] 𑒮𑓀𑒑 𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒼𑒖𑒑𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒰𑒡𑒢 𑒥𑒢𑒨𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒂 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒮𑒿 𑒩𑓀𑒑𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲 𑒣𑓀 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒪𑒼𑒔𑒢 𑒗𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒬𑓂𑒩𑒠𑓂𑒡𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒰𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒩𑓀𑒑𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒏𑒰𑓀𑒞 𑒧𑓀𑒛𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒍 𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔𑒏 𑒮𑒱𑒣𑒰𑒯𑒲, 𑒁𑒑𑓂𑒩𑒠𑒴𑒞, 𑒢𑒹𑒞𑒰, 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒹𑒞𑒰, 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒏, 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒏 𑒂𑒠𑒱 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒝𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒰𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒁𑒮𑒧𑒨 𑒠𑒹𑒯𑒰𑒫𑒮𑒰𑒢 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔𑒏 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑓀𑒏 𑒮𑒦 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒏𑓂𑒭𑒞𑒱 𑒕𑒪 𑒖𑒏𑒩 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒍 𑒅𑒧𑒹𑒠 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒏𑒰𑒖 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒢𑒱𑒮𑓂𑒮𑓀𑒠𑒹𑒯 𑒂𑒢 𑒏𑒪𑒰𑒫𑒱𑒠𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒏𑒰𑓀𑒞 𑒖𑒲 𑒣𑒍𑒞𑒰𑒯।

𑒥𑒰𑒪𑒩𑓀𑒑𑒱𑒧𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒱𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒖𑒲 𑒨𑒠𑓂𑒨𑒣𑒱 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒨 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭𑒞𑓁 𑒧𑓀𑒔 𑒣𑒩 𑒢𑒯𑒱𑒿 𑒁𑒨𑒪𑒲𑒯, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒢, 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠, 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒋𑒫𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒦 𑒙𑒰 𑒠𑒰𑒨𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒮𑓂𑒫𑒹𑒔𑓂𑒕𑒰𑒮𑒿 𑒫𑒯𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒍 𑒋𑒫𑓀 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒨 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒦 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒣𑒞𑒱 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒗𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯 𑒂 𑒏𑒵𑒞𑒖𑓂𑒘𑒞𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒮𑒢 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯𑒱𑒪 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒞𑒰𑒟𑒱!𑒐𑒰𑒮𑒏𑒋 𑒁𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒦𑒰𑒭𑒲 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒏𑒩𑒨𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒱𑒪𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒬𑓂𑒩𑒧,𑒪𑒑𑒢 𑒂 𑒮𑒞𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 𑒨𑒼𑒑𑓂𑒨 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒩𑓀𑒑𑒱𑒧𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒱𑒪𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒋𑒏𑒩 𑒁𑒞𑒱𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒥𑒙𑒳𑒏 𑒦𑒰𑒃,𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡 𑒂 𑒋𑒯𑒢 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒵𑒞𑒖𑓂𑒘𑒞𑒰 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱,𑒖𑒢𑒱𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯, 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢,𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒫𑒰 𑒅𑒣𑒏𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒢𑒱।

अनाथ अल्पायुमे मातृ-पितृ-विहीन एकटा कन्या घटना सन शहरमे अपनाकेँ स्थापित कए सकलीह, नौकरीकेँ अपन जीवनक लक्ष्य बना सम्मान पाबि सकलीह, ई बहुत लोकक सहयोग रहल हएतनि, किन्तु एहि सभ संघर्ष-यात्रामे हुनक आत्मबल, कठिन परिश्रम, अनसनक लागि उठबाक प्रेरणा आ अभिनयक जन्मजात उत्साहकेँ नकारल नहि जा सकैछ। ई,'**आ दिन आ पल**' लिखि कए आ अपन व्यक्तित्वक सकारात्मकताक सबल परिचय देने छथि, समाजक प्रतिकूल धारणाक बादो आहि उत्तम मजबूतीक संग ठाढ़ हएबाक प्रेरणा सेहो देने छथि आ अपन जीवनमे सहायक बनल सभ श्रेष्ठ जनक प्रति कृतज्ञतापूर्ण स्वीकारोक्तिसँ एकटा आदर्श सामां नेखने छथि।

एहि संस्मरणकेँ साहित्यिक कसौटी पर कसलासँ रह' सकैछ किछु जकरा अनुभव हो, मुदा हृदयक सहज-सरल शब्दक उद्गार तुपमे 'आ दिन आ पल' अपन एकटा मानवीय पक्षक संग सबल परिचिति आ सशक्त उपस्थिति दर्शबैत अछि। एखन एतबहि।

आशा झा

२७.१०.२०२२

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१४.मनोज झा- नारी सशक्तिकरणक अग्रदूत, मैथिली नाट्य मंचक पहिल सशक्त महिला रंगकर्मी आओर मैथिली फिल्म मे ममता के साकार प्रतिमूर्ति डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'



मनोज झा

नारी सशक्तिकरण क अग्रदूत, मैथिली नाट्य मंचक पहिल सशक्त महिला रंगकर्मी आओर मैथिली फिल्म म ममता क साओन प्रतिमूर्ति डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'



मैथिली नाट्य मंचक पहिल सशक्त महिला रंगकर्मी आ मैथिली, भोजपुरी व हिन्दी फिल्म म अभिनय कनिहारि प्रेमलता मिश्रक प्रारंभिक जीवन संघर्षपूर्ण रहल अछि। बाल कालहि सऽ हिनक अभिरुचि नाट्य मंच स प्रति रहल। हिनक जन्म 29 सितंबर 1948

ई. म मधुबनी जिला म प्रखंड मुख्यालय बहेड़ा गामक दक्षिणवारि टोल म भेल अछि। हिनक पिताक नाम पंडित दीनानाथ झा आ माता विद्या देवी छलीह। हिनक पिता अपना इलाका क विख्यात वैद्य छलाह। हिनका लग दूर दूर स लोक उपचार लेल अबैत छल आ स्वस्थ होइत छल। प्रेमलता अपन माता पिताक असगर संतान छथि। बहेड़ा गाम तसमय आ हाल धरि नाटकक मंचन लेल विख्यात रहल अछि। एकरा जन्मभूमिक माटि क गुण कही अथवा विधना द्वारा मैथिली रंगमंचक लेल रचल गेल महिला कलाकारक साक्षात प्रतिमूर्ति। हिनक रंगमंचीय जुड़ाव लगातार बढ़ैत गेल। जखन कि हिनका अपन गामहि क स्कूल म मंच पर उतरबाक विरोध मुखर होइत रहल अछि। विरोधी स्वरक मुखरता क कारणे एक-दू बेर त नाटक क मंचन तक नहि भ सकल।

खैर, पहिलुक स्थापित परंपरा अनुसार बाल कालहि म 12म वयसि म हिनक विवाह सीतामढ़ी जिलाक सिनसी गाम म भेल। हिनक पढ़ाई लिखाई गाम क स्कूल म भेल। जतय पढ़ि ई मैट्रिक म फर्स्ट डिवीजन स पास भेलीह। हिनक पतिदेव बहेड़ा क स्कूल म शिक्षक छलैथ। हिनका परिवार म तीन टा पुत्र एकटा पुत्री छथिन्ह। हिनक ज्येष्ठ बालक मनमोहन मिश्र इंटेलिजेंस ब्यूरो म कार्यरत छथिन्ह। दोसर बालक रवि रंजन मिश्र आईएलएफएस नामक प्रतिष्ठित फाइनेंस कंपनी म वाइस प्रेसिडेंट, तसर बेटी अनुपमा सहरा म्यूजिक म एमए आ गायन विधा स जुड़ल छथि। एहन बुझना जाइत अछि जे प्रेमलताक जन्म मैथिलीक लेल भेल अछि। रंगमंच स हिनकर जुड़ाव बढ़ैत रहल। विदित हो जे तसमय म

रंगमंचीय विधा मे अभिनय लेल स्त्री पात्रक घोर अभाव छल। पुरुष सभ नारीक रूप मे अभिनय करैत छलाह। एहि खगता आ बेगरता क देखबा लेल प्रमिला आगां अयलीह।

अपना गाम रहिका मे 'बड़ी दीदी' क नाम स विख्यात प्रमिला मिश्र अपन अध्ययन कालहि सँ स्वतंत्र विचारक रहला स ज्ञात प्राप्त करलीह। नारी सशक्तिकरण क दिशा मे हिनक अविस्मरणीय योगदान क कखनो नकारल नहि जा सकैत अछि। जाहि समय मे रंगमंच पर लड़की क चढ़नाइ वर्जित छल आ एकरा गलत नजरि स देखल जाइत छल। ओहि समय गाम मे कइएक बेर हिनका विरोधाभास क सामना करय पड़ैत रहलैन। मुदा ओ अपन संकल्प पर अडिग रहि अपना अभियान क बल दैत रहलीह। अपन गाम रहिका स्थित युगलकिशोर उच्च विद्यालय मे प्रारंभिक शिक्षा क दौरान ओ रंगमंच पर स्त्री पात्र क रूप मे पुरुष वर्ग क अभिनय करैत देखि विचलित होइत छली। हिनका मोन मे एकटा टीस उठैत छलैन जे मंच पर स्त्री पात्रक रूप मे कोनो लड़की किएक नहि अबैत अछि। बताबैत चली जे तत्समय रहिका उच्च विद्यालय नाट्य विधाक केन्द्र बिन्दु क रूप मे जानल जाइत छल आ सगरो चर्चित छल। जयप मधुबनी निवासी स्व चन्द्रिका प्रसाद स्व नाट्य प्रेमी तत्कालीन स्कूल क हेड मास्टर क रूप मे मौजूद छलथि। चन्द्रिका बाबू क नाट्य निर्देशक क रूप मे पाबि रहिका गामक संग आसपास इलाका मे सेहो नाट्य विधा क खूब प्रसार भेल। हिनका एहि विधा मे पारंगत करबा व रंगमंचक प्रवेश मे चन्द्रिका बाबूक अतुलनीय योगदान रहल अछि।

जीवनक क्रम मे हुनका गॉडफादर क रूप मे मिथिला मैथिलीक अमूल्य धरोहर यात्री नागार्जुन कँ सान्निध्य भेटल आ हुनक कहला पर 'प्रेम' अपन पति क संग पटना शिफ्ट कयलथि। यात्री जी क छत्रछाया मे हुनकर प्रतिभा मे निखार आबय लागल। जाय किछु दिनक बाद हुनका पति क नौकरी प्रकाशन कार्य मे लागि गेल आ प्रेमलता सेहो पटना क एकटा स्कूल मे शिक्षिका क रूप मे काज करय लगलीह। मुदा हुनक पढ़ाई सेहो अनवरत चलैत रहल। आ ओ पीएचडी धरि क डिग्री हासिल कऽ डाक्टर क उपाधि ग्रहण कयलीह। पटना क बांकीपुर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे मैथिलीक व्याख्याता क रूप मे काज करबाक मौका सेहो हुनका भेटल। जाय स ओ अवकाश ग्रहण कयलीह।

कवि नागार्जुन 'यात्री' जी चूंकि हुनक पिताक पितियौत छलखिन्ह त सहजें प्रेमलता हुनका कक्का जी कहि संबोधित करैत छलीह आ यात्रीजी सेहो हुनकर प्रतिभा स प्रभावित, एकटा बेटीक मुख्य मार्गदर्शक जकाँ सतत प्रयत्नशील रहैत छलाह। आ एक दिन हुनका बाँहि पकड़न आकाशवाणी लऽ गेलाह आ कहलनि जे आबँ एहि ठाम आकाशवाणी मे होबय बला विभिन्न कथा-गोष्ठी, संगोष्ठी, वार्ता, परिचर्चा आदि मे अपन सहभागिता प्रारंभ करू। आ ताहि स प्रारंभ भेल प्रेमलताक नव जीवन। प्रेमलता आकाशवाणीक कार्यक्रम सभ मे अपन सहभागिता देबय लगलीह। दिनानुदिन हुनक प्रतिभा निखरैत गेल। आकाशवाणी सऽ हुनक जुड़ाव हुनका लेल संजीवनी क काज कयलक आ तहि ठाम हुनका विभिन्न प्रसारण क संगहि

ओतिया मे होबय बला नाटक सभ मे सेहो रोल लेबाक मौका हाथ आबय लागल। एहिसमय ए आकाशवाणी दिल्लीक निरन्तर कार्यक्रम प्रसारण आदिक कतेक बिछु मानल जाइत छल, जाहि मैथिली रंगमंचीय बड़का नामी गिरामी कलाकार लोकनिक आबा जाही होइत रहैत छल। जाहि शनैः शनैः हिनक पहिचान आ सम्पर्क बढ़ैत गेल। हुनका सबक सम्पर्क हिनक चेतना समिति स जुड़बाक मार्ग प्रशस्त कयलक। तदुपरांत हिनका नाट्यमंच आ रंगकर्मी सभ जुड़बाक मौका भेटल। रंगकर्मी लोकनिक सम्पर्क स प्रमला अनेका बहुत नाम नाट्य संस्था आदि स जुड़ि गेलीह। एकरा बाद हिनक रंगयात्रा अनवरत चलायमान रहल आ ओ अपन कीर्ति क पताका फहराबैत अभिनय क छाप छोड़ैत गेलीह। पटना मे मैथिलीक सुदृढ़ चेतना समितिक मंच पर कतेक टा नाटक मे स्त्री पात्रक सजीव मंचन कय खूब प्रशंसा बटोरलैन। महिला रंगकर्मीक रूप मे ओ बहुत नाम संस्था सब सं जुड़लथि आ ओकरा काला न काला रूप मे ओहि संस्था सं जुड़ल छथि। वर्तमान मे ओ चेतना समिति पटना क उपाध्यक्ष पद पर सेहो निर्वाचित भेल छथि।

रंगमंचक यात्रा क क्रम मे हिनक रविन्द्रनाथ ठाकुर सं भेंट मुलाकात हिनका मुंबइ ल गेल। जाहि हिनका मैथिली फिल्म इतिहासक सफलतम फिल्म 'ममता गाबय गीत' मे अभिनय करबाक मौका हाथ लागल आ हिनका अभिनयक बल फिल्म सफलता प्राप्त कयलक। एकर बाद हिनक फिल्मी अभिनय यात्रा शुरू भ गेलक आ ओ लगातार हिन्दी आ भोजपुरी फिल्म आदि मे अभिनय करय लगलीह। जाहि मे हिन्दी फिल्मक सफलतम नाम प्रकाश झा क फिल्म

दामुल, कन्यादान, राजपूती फिल्म 'दुल्हा गंगा पार के' , माटी, 'बबूआ हमार' आ पिंजरा वाली मुनिया आदि फिल्म मे अभिनय कयलीह। एकर बहुत दिन बाद बालकृष्णक मैथिली फिल्म 'सस्ता जिनगी महग सेनूर' आ 'ललका पाग' मे सेहो अपन अभिनय क छाप छोड़बा मे सफल रहलीह। ओना धनि नञि डॉ प्रेमलता डीडी पटनाक प्रसारण धारावाहिक 'घर रहो मिथिला' आ 'दहारी दुनिया' मे सेहो अभिनय कऽ प्रशंसित रहल छथि। हालहि मे वर्तमान प्रदर्शित राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त ऐतिहासिक मैथिली फिल्म "मिथिला मखान" हिनक जीवनक उत्कृष्ट फिल्म क रूप मे याद कएल जाइत रहत।

रंगमंच आ अभिनय क संग-संग प्रेमलताक नाम मैथिलीक एकटा सुपरिचित साहित्यकारक रूप मे सेहो जानल जाइत अछि। हिनका हाथे मैथिलीक विभिन्न पत्र पत्रिका क सम्पादन सेहो रहल अछि आ एखनो लेखन शील छथि। हिनक रचना विभिन्न पत्र पत्रिका सभ मे प्रकाशित रहल अछि। हिनक प्रकाशित कथा संग्रह 'एगो छली सिनेह' आ 'लेखन प्रसंग' प्रमुख अछि। (लेखन प्रसंग) जे हिनक पी.एचडी क विषय सेहो छल। रंगमंच, साहित्य, कला, संस्कृति आ अभिनय लेल बहुत रास सम्मान स सम्मानित डॉ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' मिथिला मैथिलीक अमूल्य धरोहर क रूप मे एखनो अपन क्रियाशीलताक संग हमरा लोकनिक बीच विद्यमान छथि। नव पीढ़ीक लेल आदर्श प्रेमलता मिश्र कें चेतना समिति पटना, मिथिला सांस्कृतिक परिषद कलकत्ता, अखिल मिथिला संघ दिल्ली, विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा, मैथिल समाज रहिका आदि संस्था द्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान देल गेल अछि। एहिक अलावे हिनका 'पाटलिपुत्र सम्मान',

'पुनरुणिमा सम्मान' समेत हिन्दी रंगमंचक कएकटा प्रतिष्ठित सम्मान सँ नवाजल जा चुकल अछि। दिल्लीक नाट्य संस्था मैलोरंग द्वारा 'शालिनीरत्न' सम्मान सँ हिनका सम्मानित कयल गेल अछि। वर्ष 2018 मे मधुबनी के ठाढ़ी गाम मे आयोजित मैथिली लिटरेचर फेस्टिवल मे तत्कालीन डीएम शीर्षत कपिल अशोक द्वारा हिनका 'गार्गी स्त्री सम्मान' प्रदान कयल गेल। एकर बाद तॅ प्रेमलता कें बिहार सरकार द्वारा भिखारी ठाकुर 'नाट्यकला सम्मान, मैथिली लोक संस्कृति मंच लहेरियासराय द्वारा मिथिला रत्न 'ताम्र पत्र सम्मान', हिनक 5 दशकक नाट्य यात्रा लेल हिनका वर्ष 2019 मे थियेटर वाला नाट्याश्रम द्वारा प्रतिष्ठित नाट्य सम्मान 'अजीत कुमार गांगुली स्मृति' स सम्मानित कएल गेल।

एकटा 'प्रेम' मे एतेक रास विधाक रास विधनाक अनमोल कृत्य अछि। तत्समय के पुरुष प्रधान समाज मे नारी सशक्तिकरण लेल कएल हिनक त्याग आ योगदान युग युगांतर धरि गुंजैत रहत। निःसंदेह तॅ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' मिथिला मैथिलीक अमूल्य धरोहर छथि। जनिका सहेज के रखबाक अहम जिम्मेदारी हम सब मिथिलावासी के दायित्व अछि।

-मनोज झा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, मिथिला लोकतांत्रिक मोर्चा, सम्पर्क - 7701948646

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१७.प्रेम कान्त चौधरी- डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' : मिथिलाक विलक्षण विदुषी आ प्रेरणात्मक व्यक्तित्व- जेना जनलियैन्हि


प्रेम कान्त चौधरी

डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': मिथिलाक विलक्षण विदुषी आ प्रेरणात्मक व्यक्तित्व- जना जनलियेह

चलनिहार संयोगवश पथ पर पिछड़ि खसैछ।
सुजन सम्हारथि हाथ धय, दुर्जन देखि हँसैछ॥

उपरका दुनू पाँति डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क 'लेखन-प्रसंग' नामक लिखल किताबक लेखकीय उद्गार मे व्यक्त कयल गेल अछि। अन्तिम दु पाँति मे जीवनक रहस्य छिपल अछि। आइ हम जाहि व्यक्तित्वक सम्बन्ध मे किछु कहबाक लेल कलम उठौलहुँ अछि ताहि लेल हम अज्ञानी व्यक्ति छी। मुदा साहस करब आ जोखिम मोल लेनाय हमर काजक अंग रहल अछि। ताहि सँ नञ हम हुनक महान व्यक्तित्व मे समायल शिक्षाक विश्लेषण करब आ नञ हुनक कलाकारक विधा के। आ नञ हुनक विभिन्न संस्था समितिक संगठनात्मक क्षमता केँ। आ नञ हुनक साहित्यिक जीवन यात्राक। आ नञ हुनक पारिवारिक गाछ के विशाल परिवेश के। हम तँ हुनका मे समायल उपर्युक्त सब तथ्यक आलोक मे हुनक स्नेहिल-आत्मीय संवेदनशील अतुलनीय प्रतिभाक जे प्रेरणात्मक अछि। ताहि पर अपन संस्मरण लिखऽ चाहब। कहऽ चाहब जे डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' केर जन्म 29 सितम्बर, 1948 ई. मे नेहरा, जिला मधुबनी, मिथिला, बिहार मे पिता पं. दीनानाथ झा आ माता पूजनीया वृद्धा देवीक सुपुत्रीक रूप मे भेलैन्हि। आरम्भिक शिक्षा गाम मे भेलैन्ह। तत्पश्चात् विवाहोपरान्त सोलह बरख मे पति श्रीमान महेश्वर मिश्र जीक संग पटना आबि गेलीह। ओ जखन विद्यालय मे पढ़ैत छलीह तखन सँ गायन आ

𑒁𑒦𑒱𑒢𑒨 𑒮𑒿 𑒪𑒼𑒏-𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪। 1964 𑒄 𑒧𑒹 𑒖𑒐𑒢 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒲𑒯 𑒞𑓄 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒞 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙 𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢 𑒥𑒢𑒾𑒪𑒏𑒲𑒯। 𑒡𑒲𑒩𑒹-𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒿 𑒋𑒧.𑒋. 𑒂 𑒋𑒧.𑒋𑒛 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒨𑒪𑒲𑒯। 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒲𑒨 𑒥𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨, 𑒥𑒰𑒏𑒲𑒣𑒳𑒩, 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒮𑒿 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞𑒰 𑒏 𑒣𑒠 𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒁𑒫𑒏𑒰𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒨𑒪𑒲𑒯। 𑒋𑒐𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒨 𑒧𑒹 𑒁𑒦𑒱𑒩𑒳𑒔𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮 𑒯𑒼 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒪𑒑𑒦𑒑 𑒠𑒴 𑒮𑒨 𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒰𑒙𑒏, 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲, 𑒦𑒼𑒖𑒣𑒳𑒩𑒲 𑒂 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲 𑒤𑒲𑒔𑒩 𑒤𑒱𑒪𑓂𑒧 𑒙𑒹𑒪𑒱𑒤𑒱𑒪𑓂𑒧 𑒂 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏 𑒮𑒦 𑒧𑒹 𑒮𑒤𑒪 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒨 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒲। 𑒂𑒏𑒰𑒬𑒫𑒰𑒝𑒲 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒮𑒿 𑒏𑒟𑒰-𑒫𑒰𑒩𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒫𑒰𑒔𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒩𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒮𑒯𑒦𑒰𑒑𑒱𑒞𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒢𑒱। 𑒏𑒧𑓂𑒣𑒲𑒨𑒩𑒱𑓀𑒑 𑒢𑒻𑒧𑒱𑒞𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒒𑒼𑒭𑒝𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯। 𑒯𑒰𑒪𑒰𑒿𑒏𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒖𑒲 (𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢) 𑒥𑒛 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒂𑒏𑒰𑒬𑒫𑒰𑒝𑒲 𑒪𑓄 𑒖𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒮𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒏𑒩𑒾𑒪𑒟𑒱𑒢।

𑒛𑒼. 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧'𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒧𑒹 '𑒍 𑒠𑒱𑒢 𑒍 𑒣𑒪' (𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝), '𑒋𑒑𑒼 𑒕𑒪𑒱𑒯 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒯' (𑒏𑒟𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑) 𑒂 𑒬𑒼𑒡𑒑𑓂𑒩𑓀𑒟 '𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑' 𑒞𑓄 𑒅𑒪𑓂𑒪𑒹𑒐𑒢𑒲𑒨 𑒁𑒕𑒱𑒋, 𑒂 𑒮𑓀𑒑-𑒮𑓀𑒑 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒢𑒫𑒩𑒞 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒛𑒼. 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒰𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒩𑒪-𑒣𑒴𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒠𑒩𑒝𑒲𑒨 (𑒮𑓂𑒫.) 𑒧𑒯𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒴 2018 𑒄. 𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒑 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒍 𑒫𑒻𑒏𑒳𑒝𑓂𑒚𑒡𑒰𑒧𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒢𑒱𑒡𑒢 𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒲 𑒞𑓄 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑓄 𑒂𑒬𑒲𑒩𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒨𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒲। 𑒖0 𑒮𑒳𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒢𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩, 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒩𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑒳𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒱𑒩𑓀𑒖𑒢 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒕𑒼𑒙

सुपुत्र सत्यजीत मिश्र छथि। सुपुत्री अनुपमा मिश्र आ जमाय डॉ. बच्चू नाथ मिश्रक संग-संग पौत्र-पौत्री, नातिन सभ सँ भरल-पूरल पारिवारिक पृष्ठभूमि छथि।

डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' जाहि साहित्यिक वातावरण मे पैघ भेलीह ताहि मे अनेको संस्था, समिति सँ सरोकार रहनाय स्वाभाविक प्रक्रिया छैक। अपन अनेको संस्था मे अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्षक रूप मे अपन सेवा देलिऐ। चेतना समिति, पटना, भंगिमा आ अरिपन (नाटक), मैथिली महिला संघ, पटना, बिहार संगीत नाटक अकादमी, पटना, वंदना भारती कच्छ शामिल अछि। वर्तमान मे पुनः चेतना समितिक उपाध्यक्ष निर्वाचित भेलीह अछि। डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' जाहि सांस्कृतिक संसार सँ अपन सरोकार रखलैथ अछि ताहि मे बहुतास सँ सम्मानित होनाय स्वाभाविक छैक। ओ सभ संस्था समिति धन्य भेल जे अपनेक सम्मानित कयलक अछि। जाहि मे- चेतना समिति- पटना, अरिपन- पटना, मिथिला विकास परिषद- कलकत्ता, अखिल भारतीय मिथिला संघ- दिल्ली, बिहार आर्ट थियेटर-पटना, प्रांगण- पटना, विद्यापति सेवा संस्थान- दरभंगा, मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति- गुवाहाटी, असम, मिथिला सांस्कृतिक संगम- प्रयाग, भारतीय छात्र संगठन-पटना, बिहार आ पटना भारती क्लब शामिल अछि।

डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' कँ जेना हम देखलिऐन्ह चिन्हलिऐन्ह आ आशीर्वाद भेटल ओ सभ बात बीच मे मोन पड़ैत अछि। ओ गृहलक्ष्मी, शिक्षिका, मैथिली-भोजपुरी-हिन्दी रंगमंच, सिनेमाक माँजल कलाकार छथि, जे विश्व पटल पर अंकित अछि। ओ स्वयं मे अद्भुत अतुलनीय सशक्त साहित्य-संस्कार संस्कृति धरोहर छथि। विलक्षण

प्रतिभाक विलक्षणधीय विदुषी स्वर्ण हस्ताक्षर छथि। ओ हमरा ई कहबा मे कनियो असौकर्य नहि कि, ओ सम्पूर्ण मिथिलाक स्वर्णिम हस्ताक्षर छथि। हुनका लेल कहल जा सकैछ अछि जे- 'को नहि जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो'। ओ मिथिलाक ललना लेल- दूत, वर्तमान आ भविष्यक प्रेरणाक स्रोत छथि।

1976 ई. मे जखन हम पटना आबि क पढ़ाई लेल आयल रही तखन राजेन्द्र नगर पटना क राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे नामांकन भेल छल। पहिल बेर 1977 ई. मे चेतना समितिक 'विद्यापति स्मृति पर्व समारोह' देखने रही। ओ हार्डिंग पार्क मे भेल छल। देखने रही रवीन्द्र जी-महेन्द्र जीक जोड़ी मायानन्द बाबूक गिजानी, गसन दिन नाटक। समय बीतैत गेल हमहूँ हाईस्कूल आ कॉलेज सँ अपन पढ़ाई पूरा कयलहुँ। अनका विद्वान लोकनि कँ दूर सँ देखैत रहलहुँ। डॉ. प्रेमलता मिश्र सँ पहिलबेर नजदीक सँ हमर साक्षात् 2001 ई. मे चेतना समितिक सयमी आजीवन सदस्य बनलाक बाद भेल, कियैक कि नौकरी-चाकरी क चक्कर मे पटना-गुवाहाटी करैत छलहुँ। मुदा 2001 सँ 2005 ई. क अवधि पटना मे रहबाक कारणे चेतना समितिक कार्यालय मे समय-समय पर जेनाय रहैत छल। जाहि ठाम मैथिली-मैथिल विद्वत मंडली सँ भेट-घाँट होनाय आम बात छल। ओहि समय मे डॉ. प्रेमलता मिश्र जी सँ भेट-घाँट भेल। हुनकर व्यक्तित्व सँ एतेक प्रभावित भेलहुँ कि की कहू? सदैव स्नेहाशीष सँ हमरा लाभान्वित करैत रहलहुँ। हुनक एतेक आशीर्वाद रहैत छल जे कहियो काल बेसी रात घर पर आबि जाथि। कल्पना (हमर धर्मपत्नी) क सेहो स्नेहाशीष देने रहलथीन। हमहू हुनक निवास स्थान पर कतेको बेर गेल

होयत। ओहि प्रकारेँ जखन 2005 क अगस्त मे हम सभ पुनः पटना सँ गुवाहाटी आबि गेलहुँ तखन प्रमिला जीक आशीर्वाद भेटैत रहल। काका ओहुन अपना सभक पालन-पोषण नहि बीतल, जाहि मे हुनकर ध्यान नहि आयल होय, चाहे कल्पनाक भावाञ्जल पर वा हमरा पर। खास कऽ क जखन हमर अध्यक्षता काल मे मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति विद्यापति स्मृति पर्व समारोह 2012 ई. क दिसम्बर मास मे मुख्य अतिथिक रूप मे मंच पर ओ विराजमान रहलीह। तखन मिथिलाक समस्त पूर्वोत्तर मे रहनिहार मैथिलजन हुनका लग सँ देखि सकलाह। समाजक बहुत लोक सभ हमरा धन्यवाद ज्ञापित कयलाह, जे ओहुन विलक्षण व्यक्तित्व सँ भेँट भेलन्हि आ करीब सँ देख सकलैथ। गुवाहाटी आगमनक हुनकर पहिल शर्त छलऽ कि हम होटल मे नहि रहब- ओ कहली हमरा होटल मे नीक नहि लगैत अछि, हऽम तँ अहिँक घऽर मे कल्पना संग रहब। हम स्वीकार कऽ लेलय रही। हमरा सभक भाग्य जे ओ तीन दिन धरि कार्यक्रमक बाद घऽर मे संगहि छलीह। दोसर बेर सेहो 2014 मे पैघ सुपुत्र मनमोहन जी कँ संग गुवाहाटी आयल छलीह। आबै सँ पहिने पटना सँ हमरा फोन कयलीह जे हम नवम्बर मे गुवाहाटी आबि रहल छी। मनमोहन बाबू तँ होटल मे रहताह, मुदा हऽम तँ होटल मे नहि रहब। हम आग्रह आ निवेदन कैलियैन्ह जे अहाँक घऽर तऽ गुवाहाटी मे अछिये, अहाँ होटल मे किया क रहब। फेर हऽम सम्मानपूर्वक घऽर अनलियैन्ह। दु दिनक प्रवास मे हऽम दुनू प्राणी फेर एकबेर हुनक सान्निध्य सँ लाभान्वित भेलहुँ। सब कहि त जखन पहिल बेर हमरा भेँट भेल छलीह तखन हमरा लागल जे हमर ज0 बहिन मुद्रिका क आसपास

रहल छला। अन्तर खाली लम्बाई म छला। हम सब साथ-रहैत करी लम्ब-लम्ब छी। ओ रहैतक छवि देख हमरा बड्ड नीक लागल आ आत्मीयसुख भेटल। अत: प्रमिला जी कँ हम अन्त:मन सँ बोध रहैत मानैत छियैक। मुदा कल्पना सँ 2012 म हुनकर गुवाहाटी प्रवासक समय अपन सम्बन्ध हुनिया लगय छलीह- दीदी कहि कऽ। ओना मिथिला म सँ 'दीदी' क मतलब पिताक बहिन भेल। मुदा बंगाल म 'दीदी' क मतलब बोध बहिन भेल। कल्पनाक जनपद बंगाली बहुल क्षेत्र म बीतल अछि तहि दुआर 'दीदी' कहा बात हुनिछोत कऽ ललथि। हऽम सँ बसी समय पहिल सँ घटना म नहल छी सँ ओतहु सब बड़की बहिन कँ 'दीदी' कहैत अछि। सार्वजनिक रूप सँ हमहुँ बोध बहिनक उत्तरदायित्व आब सँ हुनक देलियैक।

अंग्रेजी म कहल जाइत अछि- 'लिविंग लिजेंड' स छथि हमरा सबहक लेल डॉ. प्रमिला मिश्र 'प्रेम'। सादगी पूर्ण जीवन, उच्च विचार, सात्विक व्यवहार, चिर-स्मरणीय कलाकार, अनुपम-अनमोल धरोहर!

-प्रेम कान्त चौधरी, मो. : 7002605261

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१६.कमलेंद्र झा 'कमल'- मिथिलापुत्री


कमलेंद्र झा 'कमल'

मिथिलापुत्री

जिनकर तन-मनमे मिथिलांचल
कमला-कोसी नयन विशेष।
मुट्ठीमे आकाश रहल छा

आँचरमे धन-धान्य अशेष!!

मस्तक हो उत्तुंग हिमालय
पदतलमे बंगालक देश!
अंगमे वन-काँचन विस्तृत
हाथ हनल लाठिक सलहेस!!

श्वास तथा प्रश्वास मलययुत
दृष्टि प्रभात-साँझ अवशेष!
वाणी सीतानाम समर्पित
आठो याम उमाभेलक!!

एहो कथा नहि आन---सरस प्रिय
प्रमलता दीदी हाथक
'कमल' अकिंचन 'मिथिलापुत्री'
नमन,समर्पण काव्य-सनेस!!

-कमलेन्द्र झा 'कमल', दिनांक २९/१०/२२

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

𑓒.𑓑𑓑.𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒝 𑒕𑒰 𑒮𑒰𑒑𑒩- 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒥𑒯𑒱𑒢



𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒝 𑒕𑒰 𑒮𑒰𑒑𑒩

प्रेमलता बहिन

सही मे अपन बहिन जकाँ ना कही तऽ ताहू सँ बेसी जँ कहा सहोदरा सम्बन्ध होइछ से छथि हमरा लोकनिक आदरणीया जेठकी बहिनदाइ जे प्रेमलता मिश्र प्रेम। ओ हमरे टा नै मैथिली साहित्य संसारक हमरा सन कतेको लोकक दीदी बनलि छथि प्रेमलता जी। असल मे अपन माए बापक एकसरि संतान छथि प्रेमलता दीदी। तेँ अपन कहैत छथिन जे हम एकसरि नै छी। सम्पूर्ण मैथिलीक साहित्यकार के अपन भाय बहिन कहैत छथिन। आ से जे बात छियै सब गोटे हिनका तहिना स्नेह आ सम्मान दैत छनि।

हिनक जन्म २९.९.१९४८ ई. के भेल छलनि दरभंगा जिलाक रहिका गाम मे। कहि सकैत छी जे सम्भ्रान्त दश घराना मे। पिताक नाम रहनि दीनानाथ झा जिनका लोक सरस वैद्य जी कहनि। मायक नाम रहनि वृन्दा देवी। माय हिनक नीक कुल शीलक लोक रहथिन। तेँ सँ शास्त्रीय संगीत मे रुचि रहनि। हिनक मामा चन्द्रभूषण खाँ के इलाका मे सब चिन्हैत रहनि। नीक चलता पुर्जा वाला लोक आ दस उपकारी रहथिन। मातामाम ताहि जमानाक मिडिल पास रहथिन। संस्कृत पढ़ैत आ अलजब्रा बनाबैत अपन माय के देखने रहथि प्रेमलता जी।

हिनक बियाह १२ वर्खक उमेर मे महेश्वर मिश्र जी सँ भेल रहनि। सासुर रहनि सीतामढ़ी लग सीरसी प्रखंड के रामपुर गाम। हिनकर बियाहक खेरहा बड़ रोचक अछि। सौराठगाछी सँ बियाह भेल रहनि। बियाहक कोनो पूर्व सूचना हिनका नै रहनि। बाहर

बरखक बयस कोनो बियाहक थोड़ब होइत छलैक। ई अपन गामक इसकूल मे लिखाइ पढ़ाइ करैत छलीह। सांझ भेली आन दिन जकाँ खाय पी क सूति रहल छलीह। सुतली राति मे हुनका जगौल गेल। आ गीत नादक संग बड़ी राति क पण्डित क बजाय क हुनक बियाह भऽ गेल रहनि। न बरियाती न सरियाती न कोनो शहनाइ आ न कोनो शोर सुन्नर।

बियाहक साल दिनक बाद प्रेमलता जीक जिनगी मे एकटा बड़का अन्हर बिहाड़ि आयल। माय आ बाप दुनू गोटे हुनका छोड़ि ऊपर चल गेलखिन। गामक लोक कहैक जे प्रेम क बियाहे दुआरे माय बाप जीबैत छलखिन। तहन तऽ बबानी प्रेम लता जकाँ मिसरजी संग लिपटि गेल रहथि। बाला भरोस दै बाला लोक अपन किया नै छलनि। सगर तलाब मे एसगर इचना मांछ बनलि छलीह। अपन लोग आ माय बापक आशीर्वाद सं हाथ पकड़निहार मिसर जी आ सासु ससुर धनि बड़ नीक भेटलखिन जे हुनका कहियो कोनो रत्तु ना बातक तकलीफ नै होअय देलखिन।

प्रेमलता जी पर मायक संस्कारक असरि छलनि। एहि सं हुनक स्वाभिमान आ क्रिया कलाप प्रगति गामी होइत रहल। हुनका जिनगी मे किछु नीक काज करबाक अभिलाषा जागल रहलनि। जहन लोक अपन धि बेटी क घर सं बाहर एकसरि नै निकलय दैत छल ताहि समय मे प्रेमलता जी नाटक क रिहर्सल करैक लेल एकसरि बाहर जाइत रहलीह। आ एकटा समय एलैक जहन प्रेमलता मिश्र प्रेम एहन पहिल मैथिल महिला भेलीह जे नाटक मे स्त्रीक भूमिका करय

𑒪𑒑𑒪𑒲𑒯। 𑒄 𑒋𑒏 𑒢𑒻 𑒁𑒢𑒏𑒰। 𑒂𑒥 𑒍𑓄 𑒔𑒪𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒨𑒏 𑒦𑒴𑒧𑒱𑒏𑒰 𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒲𑒯 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒃 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒰𑒢𑒲 𑒩𑒓𑓂𑒑𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒤𑒾𑒖 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒲𑒯 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒖𑒛𑓃𑒱 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒨𑒼𑒑𑒠𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮𑓀 𑒕𑒣𑒱𑒞 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱।

𑒧𑒴𑒠𑒰, 𑒋𑒞𑒰𑒥𑒲 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒱 𑒏 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒼 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒪𑒲𑒯 𑒂 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒖𑒰𑒩𑒲 𑒩𑒯𑒪𑒢𑒱। 𑒋𑒧 𑒋 𑒏𑒪𑒢𑒱। 𑒣𑒲 𑒋𑒔 𑒛𑒲 𑒏𑒪𑒢𑒱। 𑒖𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒰𑓀𑒏𑒲𑒣𑒳𑒩 𑒥𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰 𑒅𑒔𑓂𑒔 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒢𑒑𑒩 𑒢𑒱𑒑𑒧 𑒏 𑒁𑒡𑒲𑒢 𑒕𑒪। 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒁𑒡𑒲𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒍 𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒧𑒹 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏𑒰 𑒥𑒢𑒪𑒱 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒏𑒪𑒢𑒱। 𑒯𑒴𑒢 𑒪𑒑𑒰𑒞𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒲𑒯। ४० 𑒥𑒩𑒐 𑒃𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒏𑒾𑒪𑒹𑒖 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒠𑒻𑒞 २००८ 𑒄 𑒏 𑒮𑒱𑒞𑒧𑓂𑒥𑒩 𑒧𑒹 𑒁𑒫𑒏𑒰𑒬 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒪𑒢𑒱।

𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲 𑒧𑒹 𑒕𑒪𑒲𑒯 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑓀 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒖𑒲𑒏 (𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯) 𑒏𑒯𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒂𑒏𑒰𑒬𑒫𑒰𑒝𑒲 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒥𑒙𑒳𑒏 𑒦𑒰𑒃 𑒮𑓀 𑒞𑒯𑒱𑒨 𑒮𑓀 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒩𑒯𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒥𑒙𑒳𑒏 𑒦𑒰𑒃 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒏 𑒪𑒼𑒏। 𑒠𑒳𑒢𑓂𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲𑒨𑒼 𑒏𑒩𑒟𑒱 𑒂 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒼 𑒐𑒹𑒪𑒰𑒃𑒟। 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 (𑒁𑒩𑒱𑒣𑒢 𑒂 𑒩𑓀𑒑𑒱𑒧𑒰) 𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏 𑒂𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒏 𑒞 𑒥𑒙𑒳𑒏 𑒦𑒰𑒃 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒄 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲𑒏 𑒩𑒓𑓂𑒑𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲𑒨 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒝𑒱𑒧 𑒏𑒰𑒪 𑒕𑒪। 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒥 𑒩𑒓𑓂𑒑𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲 𑒦𑒰𑒃 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒪𑒑𑒰𑒫 𑒩𑒯𑒪𑒢𑒱 𑒮𑒠𑒞𑒱 𑒠𑒱𑒢। 𑒮𑒥 𑒑𑒼𑒙 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞𑒼 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒢𑒱।

𑒩𑓀𑒑𑒏𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒢𑒫 𑒨𑒳𑒑𑒏 𑒄 𑒧𑓀𑒔𑒢 𑒥𑒢𑒪𑒱 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒩𑓀𑒑𑒏𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏 𑒁𑒡𑒴𑒩𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒩𑒯𑒞।

𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒫𑒏𑒰𑒬 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒣 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒧𑒼𑒢 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒁𑒨𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒂𑒥 𑒒𑒩 𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒲𑒞𑒞। 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒳𑒗𑒰𑒫 𑒥𑒙𑒳𑒏 𑒦𑒰𑒃, 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒗𑒰 𑒩𑒧𑒝 𑒂 𑒁𑒖𑒱𑒞 𑒂𑒖𑒰𑒠 𑒖𑒲 𑒮𑓀 𑒬𑒹𑒨𑒩 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒮 𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒋𑒏 𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒻𑒮𑒲 𑒖𑒰𑒃। 𑒂𑒣𑒮𑒲 𑒏𑒳𑒬𑒪 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒧 𑒯𑒼। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔 𑒢𑒩𑓂𑒔 𑒯𑒼। 𑒮𑒥 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒙𑒙𑒏𑒰 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒂𑒢𑒲। 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒩𑒲। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒯𑒼। 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬 𑒯𑒼। 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒥 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒏𑒿 𑒖𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒥𑒰𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒞𑒨 𑒥𑒻𑒮𑒲। 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒒𑒩 𑒣𑒩 𑒪 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩 𑒑𑒕𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒂 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒒𑒩 𑒣𑒩 𑒮𑒥 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒧𑒰𑒮 𑒧𑒹 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒏 𑒮𑒰𑓀𑒗𑒳 𑒣𑒯𑒩 𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲 𑒏𑒩𑒨 𑒖𑒰𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒄 𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒋𑒐𑒢𑒼 𑒖𑒰𑒩𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲 𑒧𑒹 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑓀 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒂𑒥 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒥 𑒂𑒥𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯 𑒁𑒕𑒱।

𑒏𑒰𑒪𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒩 𑒢𑒫 𑒂 𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑒼𑒗𑒰 𑒂𑒨𑒪। 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒨𑒻𑒏 𑒢𑒹 𑒮𑒰𑒪 𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒪 𑒖𑒰𑒨। 𑒮𑒞𑓂𑒩𑒯 𑒁𑒣𑓂𑒩𑒻𑒪 𑓒𑓐𑓐𑓘 𑒬𑒢𑒱 𑒬𑒲𑒞𑒪 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑓀 𑒮𑒰𑓀𑒗 𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒖𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒣𑒰𑒠𑒢 𑒧𑒹 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒮𑓀 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒖𑒹 𑒁𑒠𑓂𑒨𑒰𑒫𑒡𑒱 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒣𑒵𑒟𑒏 𑒁𑓀𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦 𑒡𑒩𑒰𑒅 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒮𑒥 𑒁𑓀𑒏 𑒮𑒯𑒹𑒖𑒱 𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒧𑒹 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒄 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒣 𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒖𑒲𑒏 𑒋𑒏 𑒏𑒳𑒬𑒪 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒐𑒩 𑒮𑓀𑒣𑒰𑒠𑒱𑒏𑒰 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑓑𑓑.𑓘.𑓒𑓐𑓑𑓘 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒮𑓂𑒨𑒰𑒯 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒢𑒱 𑒏 𑒂𑒨𑒪। 𑒍𑒯𑒲 𑒠𑒱𑒢 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒲𑒟𑒏 𑒮𑒱𑒢𑒴𑒩 𑒧𑒹𑒙𑒰𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒔𑒴𑒛𑓃𑒲 𑒤𑒼𑒛𑓃𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒣𑒢 𑒞𑒲𑒢 𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒕𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒏 𑒧𑒱𑒮𑒩 𑒖𑒲 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒞𑒨 𑒮𑓀 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒂𑒣𑒮 𑒢𑒻 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒃𑒨𑒼 𑒞 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒖𑒹 𑒩𑒲𑒞𑒱 𑒕𑒻 𑒮𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒏 𑒮𑓀𑒒𑒩𑓂𑒭 𑒏𑒩𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒢𑒱। 𑒂𑒥 𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒁𑒧𑒵𑒞 𑒧𑒯𑒼𑒞𑓂𑒮𑒫 𑒏 𑒢𑒖𑒠𑒲𑒏 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒵𑒞𑓂𑒨 𑒮𑓀 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒧𑒰𑒟 𑒣𑒩 𑒩𑒐𑒢𑒹 𑒕𑒢𑒱। 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒥𑒛𑓃 𑒏𑒧𑓂𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒏 𑒢𑒮𑒲𑒥 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻, 𑒮𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒢𑒱 𑒂 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒥 𑒮𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒏𑒱𑒧𑓂𑒫𑒠𑒢𑓂𑒞𑒲 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱।

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮𑓀 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒂 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒣𑒰𑒞 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒫𑒩 𑒏𑒳𑒝𑒰𑒪 𑒖𑒲 𑒏𑒩𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒦𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑓑𑓙𑓘𑓖 𑒄० 𑒧𑒹। 𑒯𑒧 𑒮𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒁𑒮𑒰𑒧 𑒮𑓀 𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒪 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒧𑒹 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒏 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒮𑒰𑓀𑒗 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒦𑒫𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒨 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒲। 𑒍𑒯𑒲 𑒚𑒰𑒧 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒰𑒩 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨 𑒙𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒑𑒣 𑒮𑒣 𑒢𑒻।

𑒑𑒣 𑒮𑒣 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒼𑒪𑒏𑒰𑒞𑒰 𑒧𑒹 𑒑𑒱𑒩𑒲𑒬 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒏 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒥𑒻𑒠𑓂𑒨 𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒧𑒹। 𑒢𑒰𑒧𑒪𑒼𑒔𑒢 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒖𑒲, 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒲 𑒂 𑒯𑒧 𑒐𑒴𑒥 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒥𑒛𑓃𑒲 𑒏𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒥𑒞𑒱𑒨𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒾𑓀। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒧𑒹 𑓒𑓐𑓑𑓑 𑒄० 𑒧𑒹 𑒠𑒱𑒪𑒲𑒣 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰 𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒏𑒻𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑓀𑒞𑒱𑒧 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒼𑒪𑒏𑒰𑒞𑒰 𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒯𑒼𑒃 𑒮𑓀𑒑 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒧𑒹 𑒂𑒨𑒪 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒑𑒰𑒜𑓃𑒞𑒰

हवाक बादो स हेल नामलावन ठाकुर जीक निखार हेला यत। प्रथक दिन स्थान कर्णे नहेष्ट छलीह। ठाकुर जीक बात म अयतट लेग छलीह। हम अनुरत्न कैल ज प्रमलता जी ठाकुर जीकं वन मानेग छलीह। जहिया ठाकुर जीक देहांतक सूचना भेटलनि तहिया ज स्थान यत हुनक विलाय सुनल स कहल नै जाय सकैग अछि। ठाकुर जी सदा नाटक क लाक छलाह। गँ हुनका सं हैयानी सम्बन्ध नहनि।

हम देखल अछि आ अनुभव कैल अछि ज प्रमलता मिश्र प्रम एक असाधारण महिला छथि। अपन रङ्गमंच लेल पूर्ण रूपें समर्पित छथि। एखनो कोनो नाटक आ सिनेमा लेल ककरो नै नहि कहैत छथिन। बहुत सरल, सहज आ मिलनसार स्वभाव छनि। घमंड तऽ एक पाई नै छनि। धिया पूता सब सँग आ सुखियायल छनि। हाल म चेतना समिति, पटना क उपाध्यक्ष पद यन निर्वाचित भेलीह अछि। माँ मैथिली हुनका दीर्घायु राखथि!

अंत म हम विदेह पत्रिकाक समस्त टीम कं विशेष रूपें आयुष्मान आशीष अनचिन्हार जीक प्रति कृतज्ञ छी ज हमरा मिथिलाक एहेन स्वयं प्रभा यन लिखबाक लेल उपयुक्त बुझलनि। आ हम चेष्टा कैल अछि ज अपन विषय यन कहियो नहि विदेहक पाठक कं किछु नव जानकारी भेटय।

-लक्ष्मण झा सागर, कोलकाता/ २९.१०.२०२२

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- प्रमला मिश्र 'प्रम'क वन्दना

गजेन्द्र ठाकुर

प्रमला मिश्र 'प्रम'क वन्दना

वन्दना चुनाव गय्ल। पटनाम स्कूलक संगी सभ मैथिली भाषीकँ सांस्कृतिक न्यूनमे श्रेष्ठ देखब मानि गेल छल। मिथिला चित्रकला वा सिक्की-मौनीक कारणे नै। हम पूछने रहियै- "स की भेलौ अनचोक्के?"

ओ मगही भाषी छल, उत्तर देलक- "पटनाम गाना सभक कार्यक्रम गेल नही, कुमानि, विद्यापति महिला सभ मंचपर सांस्कृतिक कार्यक्रम आ नाटकम भाग लऽ रहल छली। तेँ सभ बड़ उत्साह छैँ।"

ओ काल्हि मैथिलीक पर्व समारोह गेल छल आ नीलम चौधरीक नृत्य देखने छल आ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क अभिनय सेहो। कतेक मुश्किलसँ महिला मंचपर जाइ छथि आ आँगनपर नाचल जा सकैत छथि, ओसँ ओकरा काल्हि मालव नै नहि, ओ हमरा सभकेँ एतनांस मानि लेने छल। हमहुँ कहक बन ई समारोह सभमे गेल नहि, प्रायः १३ वर्ष आ २१ वर्षक बीचक उमेरमे। आ एक्सपर्ट कमेन्ट सुनैत नहि।

"ई यौ, पर्दा कहाँ छै, काठियाम अनूप बाबू सभक नाटक खेलाइ छथि ओइमे गँ नव-विनवक पर्दा नहि छै।"

"बाबू कुणाल ताइ-नवीन छथि, खाली प्रकाश आ अष्टानक प्रयोगसँ सीन बदलै छथि। नाटकक बड़ जानकार, हुनकर मानब छन्हि जे पर्दाक प्रयोग एल नै आकि नाटक आधुनिक नै कहाएत।"

"आ बीच-बीचमे कॉमिक?"

"ओ सभ किछु नै, कुणालक नजरिमे ओ सभ नकली नाटक एल।"

तखन लाइट चलि गेलै, मुदा यद्यपि गेयान आ अक्कुक कॉमिक लाल आ हनियन सिंहुनवला हास्य-कणिका जइ महिलाक पति प्रायः नलनम छलै, से शुरू एल, बीचमे।

"पहिल दिन नै एलौं?"

"पहिल दिन काल्हि काजक कार्यक्रम नै छलै छै, धोइब बला सभक हास्य आ सतल-पाकल कविता क सुनत?"

मुदा साळरपर ०।८ कहल गेल छै जे नाट्य-संस्था आ समाचार सभकेँ, साहित्यकेँ, ताइसँ हमर संगीकेँ कोनो मतलब नै रहै। कानक सुनलापर ओ विश्वास करत आकि आँखिक देखलापर। मैथिलीक साहित्य उन्नत, ओतऽ महिला मंचपर अबै छथि, प्रवासी मैथिलमे ओकरा छै तँ नै। ओकर जाति छै तँ की, शासन जातिक पात्र तँ नाटकमे छैहे किने? थोपडी ओकरे देखि कऽ तँ पडै छै, हल अपमानित करैवला ताहिलेल घसिया कऽ।

२००९ ई. क कोनो दिन।

ओकरा फोन आयल-

"हमर नाम छी छत्रानन्द सिंह झा, नै चिन्हल हएब, हमरा लोक बटुक भाइ कहै छथि।"

"हम छत्रानन्द सिंह झा नामसँ अहाँकेँ बेसी चिन्है छी। ओहि समय 'भारती' कार्यक्रम आकाशवाणी पटनासँ होइ छलै, साढ़े पाँच बजे साँझसँ ६ बजे साँझ धरि। बृहस्पति आ शनि दिन। दिना हमरा मोन अछि, कारण चिनाकाहुआमे हाट लगै छलै ओही दु दिन, से तरकारी कीनै लऽ हम दुनू भाइ जाइत रही झटकारि कऽ, जे साढ़े पाँच बजे धरि घूरि कऽ आबि जाइ। आ ओहि कार्यक्रममे अहाँक नाम बटुक भाइ कहिया नै छल।"

"हम प्रमिलाजीक उनायर छी, कुन्तिउत्सम् अन्तर्मनक तल शुभकामना आ लिअ प्रमिला जी सेहो गप करती।"

प्रेमलता जी सेहो शुभकामना देलन्हि।

मंत्रेश्वर झा जी समय-साल मे हमरा बिनु नाम लेने एकटा ग्रंथ लिखलन्हि, जे एक गोटेक पञ्जीयन माटेका किताब आयल छन्हि, आ ओ पञ्जी आधारित व्यवस्थाक पुनः उत्थान करऽ चाहैत छथि।

यदि कऽ ओ लिखैत छथि, तखन किए ओ से लिखलनि?

मुदा जखन पहिल अध्याय (प्राक्कथन)क दूषण पञ्जीक चर्च आ ओहिमे नव्य-न्यायक जनक गंगेश उपाध्यायक पिता मृत्युक ७ साल बाद जन्म आ चर्मकारिणीक विवाह सहित मातृ नाम विवरणक चर्च शुरू भेल आ हम ओहिमे खुलासा कयलौं जे कोना रमानाथ झा ओ विवरणकेँ "हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला"क लेखकसँ छुपा बाजि नुकेने छला, हुनका सहित सभ गोटे चुप्पी लाधि देलनि, कारण पञ्जीक पाछाँक आनुवंशिक विवादक असल कारण सामाँ आबि गेल।

विदेह आगाँ बढ़ैत गेल, आ साहित्य अकादमी सहित ओकर हस्ताक्षरवला एसोसियेशन/ संस्था सभ सामूहिक ०/८ भऽ गेल, हुकहुकाइत, मुदा ७०-८० कऽ बैसल। हमरा कमी अछि जे हम कोना सभ-संग्राम करब जाहि ठाम, मुदा २०१२ मे एकटा साहित्य-अकादमी हस्तक्षेप कार्यक्रमक बाद हमरा ओही अनुभव भेल जे हुकहुकाइत संस्था सभमे सुधारक एकोटा सम्भावना नै छै, आ मारामारी ओही सभ हमरा आ विदेहसँ घृणा करैत अछि। ओहिना हम कहब जाहि छलौं, से बन्द कऽ देलिऐ।

स्थान अखनो अबैत रहैत अछि, कवि सम्मेलन लेल, सेमीनार लेल, वेबीनार लेल, हम मना करैत छियन्हि (एकर अर्थ ई हमसबूकायन क्रन्त्र आ ग्रुपसँ जखन हम मना करैत छियन्हि तखनो) आ ओ सभ ई लऽ कऽ उनटा-पुनटा बाजै छथि हमरा विषयमे, सभ नै किछु लोक। हमर सँ एकटा शर्त अछि, मनुक्ख बनि जाउ आ हम अपन स्वागतक नियमीत आयब, ओना स्वागतक अनुसार हम ई सभ स्थानमे कम आबै जाइ-छी।

मनुक्ख कना बनी

पहिल साहित्य अकादमी प्रसंग। किछु लोक लिखने छला जे साहित्य अकादमी हमरा आ विदेहकेँ मोजर नै दैत अछि सँ हम सभ ओकर विरोध करै छी। से स्पष्ट कऽ देल जे ओ सभ मोजर दै छथि आ विरोधक कारण अछि चोर-साहित्यकारकेँ, जकरा विदेह बैन कऽ देलक, तकरा साहित्य अकादमीक मैथिली विभागक परामर्शदात्री सदस्य जातिक कारण बननाइ, ओइ जातिक जकर ई अकादमीक मैथिली विभागपर एकछत्र राज्य छै, जकरा द्वारा मान्यताप्राप्त सात लिटरेरी एसोसियेशन ओही जातिक लोकक छै, जकर अनुवादसँ लऽ कऽ सभ असाइनमेण्ट दासक जातिक लेल प्राप्त करब असम्भव छै, जकर नाटक-निबन्ध-कथासँ लऽ कऽ सभटा संकलनमे एके जातिक ९९% रचना छै (ओना ई सभ लोकसभमे सएटा लेल छापल जाइ छै)।

साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रवेश भेल कोना संस्थाक कोना योगदान नै छै, ओही एकमात्र जयकान्त मिश्रक व्यक्तिगत प्रयाससँ सम्भव भेल, आ ग़ै ताकर कोना हाएदा मैथिलीभाषीकेँ नै भेलै। एक जातिक किछु लोक पचास हजार- लाख टाकाक अनुवाद असाइनमेन्ट लैत छथि, आ ताहीपर हुनका अनुवाद पुरस्कार सेहो भेटि जाइ छन्हि से पचास हजार टाका आन।

भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश हुअए वा विकीपीडियामे मैथिली वा गूगल ट्रान्सलेटमे मैथिली वा तिरहुता आ कैथीक यूनीकोड, मूलधाराक कोना संस्थाक कोना योगदान ऐमे नै छै। भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश कोना भेल तकर अभिलेखन हमर अंग्रेजी पोथी "A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE" मे कएल जा चुकल अछि। हँ ओ संस्था आ लोक सभसँ गूगल ठाम गेलै, विकीपीडिया ठाम गेलै आ भारत सरकार ठाम गेलै से फेसबुकपर पढ़बामे आबि जाएत। ताना जकरा बूझि माछीया नै मरै छै तकरासँ की ठानै? एकटा बात सेहो स्पष्ट हेबाक चाही जे मैथिली भेल विद्यापति पर्वसँ बेसी महत्व दुर्गापूजाक छै, एक गै विद्यापति पर्वक जेना प्रचार कएल जाइ छै अखबारमे से एकर लोकप्रियताक द्योतक नै अछि, ओही मात्र एकर कर्ता-धर्ताक मीडियापर कब्जाकेँ देखबैत अछि। दरभंगा मात्र नाटक आ कुञ्जबिहारी ल्s क्s दसटा लोक जुटै छै, नाटक बहुत कमसँ नियन्त्र छै। गाम ऐमे जनसहयोग लगभग शून्य छै, आ एकर सम्बन्ध सेहो साहित्य अकादमी सन छै वा एकरा सन साहित्य अकादमीक छै, आ हुनु समाजमे कइनाग पसाबि भरल अछि। दुर्गापूजा गाम-

गाम घरइ छै, लोकक सहभागिता नहि छै, सांस्कृतिक कार्यक्रम नाच आदि क माध्यमसँ ई समाजक सभ अंग आ महिला-पुरुषकेँ जोड़ने अछि, ई विद्यापति पर्व आ साहित्य अकादमी आ ओकर संपोषित संस्था सभ द्वारा पसारल जा रहल घृणाकेँ न्यूनतम कएने अछि आ तइसँ आगाँ समरसता पसारने अछि। ई जानकारी विद्यापति पर्वक आयोजनकर्ता लग अछि जे हाँउ बाहि कऽ कहल हिनै छथि जे शासन जातित ठीकाति छै तँ ओकरा अपन नायकपन पर्व करय। एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे विद्यापतिक जे छवि ओ संस्था सभ द्वारा प्रस्तुत कएल जा रहल अछि सएह भ्रान्तिपूर्ण अछि। संगहि ओ लोकनि अवरुद्ध आ संस्कृतवला विद्यापतिकेँ कविकोकिल विद्यापतिक रूपमे असली रूपेँ ढोल बजा-बजा कऽ प्रस्तुत कऽ रहल छथि।

तँ की चारू कात अखन अछि?

नै, नै तँ प्रेममोहन मिश्र किए साहित्य अकादमीक मैथिली विभागक परामर्शदात्रीक पदसँ त्यागपत्र दइतथि। कॉलेज सभक कट्टर देखबै तँ सभसँ कम हिन्दी आ मैथिलीक कट्टर भेटत, आ ओइ परामर्शदात्री समितिमे रहैत सभ सहसह कएने छथि। आ जतऽ साँप सहसह करय ओतऽ मनुक्ख रहि नहि सकैत। से रसायन विज्ञानी प्रेममोहन मिश्र त्यागपत्र दऽ देलन्हि।

सहसह करैत साँपक बीच मनुक्ख केना बनी

𑒣𑓂𑒩𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒖𑒲𑒏 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒯𑒮𑒯 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒮𑒰𑒿𑒣𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒯𑒟𑒱𑒨𑒰𑒩 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔 𑒏𑒩𑒥 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏। 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒄 𑒁𑓀𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧' 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒁𑒦𑒱𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒑𑓂𑒩𑓀𑒟 𑒢𑒻।

𑒣𑓂𑒩𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒖𑒲 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱, 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱, 𑒅𑒔𑓂𑒔 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒂𑒬𑒰 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒍 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒩𑒯𑒱𑒞𑒟𑒱, 𑒮𑒳𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩, 𑒥𑒹𑒮𑒲𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒰𑒪 𑒍 𑒢𑒻 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒩𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒲 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩। 𑒩𑒯𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒲 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒭𑒛𑒨𑓀𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩, 𑒖𑒰𑒞𑓄 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒯𑒼𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒃𑒛𑒹𑒢𑓂𑒙𑒱𑒙𑒲 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒼𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒃𑒛𑒹𑒢𑓂𑒙𑒱𑒙𑒲 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒹𑒧𑒲 𑒨𑒳𑒫𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑓒𑓐𑓒𑓒, 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒖𑒴𑒩𑒲 𑒩𑒯𑒟𑒱, 𑒠𑒳𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 (𑒏𑒳𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒂 𑒩𑒰𑒖𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒮𑒱𑓀𑒯) 𑒂 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 (𑒣𑓂𑒩𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧')। 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒧𑒞𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 "𑒁𑓀𑒑𑒰𑓁", 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒧𑒞- 𑒖𑒱𑒢𑓂𑒠𑒑𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒪𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒱𑒏𑒰 𑒂 𑒁𑒮𑒪𑒲 𑒤𑒹𑒧𑒱𑒢𑒱𑒖𑓂𑒧𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒱। 𑒢 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒑𑒳𑒝𑒫𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒢 𑒤𑒹𑒧𑒱𑒢𑒱𑒖𑓂𑒧𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒯𑒰𑒫𑒲 𑒣𑒛𑓃𑒪, 𑒍 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒳𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒂 𑒩𑒰𑒖𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒮𑒱𑓀𑒯𑒏 𑒞𑒿 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧'𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒫𑒼𑒙 𑒢𑒻 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒻। 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒰𑒧 𑒔𑒳𑒏𑒰𑒥𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒻 𑒕𑒻, 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒹𑒧𑒲 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒟𑒱𑒞 𑒪𑒱𑒙𑒩𑒹𑒩𑒲 𑒋𑒮𑒼𑒮𑒱𑒋𑒬𑒢𑒏 𑒅𑒣𑒰𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 𑒥𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒠𑒰𑒧 𑒔𑒳𑒏𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧', 𑒢𑒻 𑒁𑒙𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒲𑒯, 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒼𑒙 𑒁𑒣𑓂𑒣𑒢 𑒯𑒰𑒟 𑒕𑒻, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒫𑒼𑒙 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒥𑒯𑒳𑒧𑒞𑒏, 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒥𑒯𑒳𑒧𑒞𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪।

शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एगो छली सिनेह

शेखर-प्रसंग 'सुधांशु शेखर चौधरी' पर हुनकर शोधक आधारपर रचित पोथी अछि। 'ओ दिन ओ पल' आत्मकथा खण्ड-खण्ड बचि गेल अछि आ ई अछि संस्मरण संग्रह। 'एगो छली सिनेह' अछि कथा-संग्रह जकर किछु कथा हमरा आश्चर्यचकित कएलक।

शेखर प्रसंग

शेखर-प्रसंग 'सुधांशु शेखर चौधरी' प्रसिद्ध सम्पादकजी पर हुनकर शोधक आधारपर रचित पोथी अछि, पहिल अध्यायमे व्यक्तित्व आ कृतित्व, दोसर अध्यायमे कृति विवरण, तेसर अध्याय मे हुनकर हिन्दी रचना आ चारिम अध्यायमे उपसंहार अछि।

ई पोथीक उपसंहारमे एक ठाम वर्णित भेल अछि जे करा उदयचन्द्र झा विनोद हुनकासँ भेँट करबाक लेल मिथिला मिहिर कार्यालय गेल छलाह मुदा ओ वाम हाथसँ लिखबामे तल्लीन छलाह। ओ एक्के बेर रचना फेयर कऽ लैत छलाह, मोनमे काँट-छाँट कऽ लैत छलाह।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ तँ ताक तेजीसँ सोचैत छलाह जे ओ शॉर्टहैण्डमे लिखैत छलाह जे तारतम्य नै टूटय, आ हुनकर पर्सनल असिस्टेंट ओकरा लौंगहैण्डमे टाइप करथिन।

मिथिला मिहिर लेखकक एकटा सेना तैयार कएलक, सहस्राधिक लेखकक।

ओ दिन ओ पल

ऐ म १२ टा संस्मरण अछि।

हमर कक्का: यात्रीजी- ऐ संस्मरणम एकटा घटनाक चर्चा करब आवश्यक अछि। यात्रीजीक ७० वर्षक संग प्रमिलाजी शासन करथि, मुदा यात्रीजी हुनका दुनू गोटेकँ एक दिन सप्ताहमे छुट्टी देलखिन्ह आ ओहि दिन हुनकर ७० वर्षक बेटा मिसर शासन करथिन्ह से निर्णय देलन्हि। प्रमिला जी लिखैत छथि-

"अधिकारक बोध करौलनि कक्का।"

सत्य, जऽ आइयो जनसंख्यामे तामसिक काजकँ बेरोजगारी वा बिनु अर्जनवला काज मानल जाइ छै, तही समय आह्लादित कलक। कक्का नहि रहलाह।

काका, काकी आ...: ऐमे ने काकाक नाम छन्हि ने काकीयक। हम तँ ऐ दुआरे कहि रहल छी जे हमरा नहिकाक ऐ रंगिनमानक नाम जनबाक उत्कंठा अछि। किए अछि? कारण ऐ संस्मरणम काकीकँ सम्बोधित कऽ प्रमिला जी लिखैत छथि-

"ओ प्रथम मैथिल महिला मंच पर आयलि छलीह, आ से हमरा लेल सरदिन प्रेरणाक आधार रहल अछि।" से हुनकर नाम जनबाक सरकँ इच्छा रहन्हि आ प्रमिला जी से करतीह से आशा।

अछि, ओना लोकक जिनगी बीति जाइ छै काकी-काकी करैत मुदा ओकर नैहर गामक पता सँ चलैत छै, काकीक नाम नै पता चलै छै।

अही संस्मरणमे सातम दशक नाट्यमंचक प्रमाण सेहो देल गेल अछि जाहि प्रसंगमे प्रेमलता जी एक कटाक्ष करैत किछु कहै छथि- "... हरिमोहन बाबू बाली कँ छुटि कऽ साँय बना रहल छथि। "

कथानायक दशक रूप: श्री संस्मरण सुधांशु शेखर चौधरी पर अछि। ओ हिनका एकवन करैत रहथि जे नाटक लिखबा काल प्रेमलता जना हुनका सामाँ आबि जाइ छथि आ ओ सम्वाद ओ प्रेमलता लेल लिखैत छथि।

स्मृति-पर्वक दू शब्द: श्री संस्मरण पं. जयनाथ मिश्रक छथि प्रेमलता जीक अनुसार जनिकर मानसपुत्री 'मैथिली महिला संघ' अछि।

नारी-जागरणक अग्रदूत, नवीन रहल ओ उन्न सए, बन-बन रसिया जाइत छी: श्री गीतू संस्मरण हुनकर नैहर नहिकाक अछि। अही क्रममे श्री गीतू संस्मरण नै अछि मुदा एकटा कारणसँ रूप एकरा एक दाम नखन छी। पहिलम शिरुक आ पिता नगमंचपर हिनकर प्रवेशक पक्षधर रहथि, मुदा गौआ सरक कारण श्री सम्मत नै रहल, दिन मे ओना निर्दलि कालमे गीतपर नृत्य करए रहथि, उमेर रहनि १३ वर्ख (सन् १९६१)। नाटक गोविन्द झा क 'बसात' रहै, से संस्मरणमे गोविन्द झा सेहो सम्मिलित रहलाह जखन प्रेमलता जी पद्मावती घटना गेलीह आ गोविन्द झा क एकटा नाटकमे अभिनय कयलनि। दरभंगामे हिनकर उमेर रहनि ३१-३८ वर्ख (सन् १९८१-

६५) आ नतह गौँआ सभ हिनका २४-२५ वर्ख बाद गामक विद्यापति पर्वमे मुख्य अतिथि बनौलकन्हि आ हिनका बड़ी अनुनकेँ मंचपर गाबय लेल बजौलकन्हि। आ शुरूसँ उगनलाक बाद २३ वर्ख बाद हिनका अपन गुरूजी सीतानाथ झाक दर्शन भेलन्हि जे प्रेमलता जीक नाम पूछलन्हि जवाब बाद अपन खनाइपनसँ उठि कऽ भरकानि कऽ आबि गेल छलाह। एहन संस्मरणमे बिनु सह-कलाकार संग निर्देशक तहिकाम नाटकमे अभिनयक गौँआ उदय चन्द्र झा 'विनोद'क आग्रहकेँ अस्वीकार कएलन्हि, नाटक महेन्द्र मलंगियाक छल आ नाटक छल- 'ओकर आँगनक बारहमासा', जाहि लिखै छथि जे सभखन सभकेँ प्रसन्न नै राखल जा सकैत *(उदय चन्द्र झा 'विनोद' अपन अंकमे लिखै छथि जे प्रेमलता जी मानि गेल छलीह, मुदा गौँआ सभक प्रबल विरोधक कारण ओ दर्शक दीर्घामे बसलीह आ प्रेमलता जीक जाहि अपमान हुनका शोक खनाय लगलन्हि जे तहिकाक त्रिदिवसीय विद्यापति पर्वमे एकर बाद कोनो नाटक नै भेलै)*। एहन संस्मरणमे कोनो नजदीकी महिलाक चर्चा अछि जे हिनका कहलखिन्ह जे धन्य बहुक भाग्य जे अहाँक बड़ीक बियाह भऽ गेल आ आब अहाँ किछु बेसी बाजऽ सकैत लागल छी।

रंगयात्रासँ महायात्रा धरि: मैथिली नाटकक निर्देशक पं. त्रिलोचन झा प्रसिद्ध गुरूजी क संस्मरण ओ आलेखमे अछि। ओ सँ पहिल हिन्दीसँ निर्देशक आयातित होइत छलाह। पहिल ओ राजदरबंगाग थियेटरमे रहथि, ओ बन्द भऽ गेल। हुनि चर्चा अछि कलकत्ताक मूनलाइट थियेटरक आ ओहो बन्द भऽ गेल तखन ओ गुरूक 'यात्रा

पार्टी'मे गेलाह मुदा ओतऽ मैथिली रंगसंस्था 'मिथियात्री (सहयोगी दयानाथ झा, गुणनाथ झा आ श्रीकान्त मण्डल)' सँ जुड़लाह।

यात्रा पार्टीमे घूमब जखन यान नै लगलन्हि तँ कमलनाथ सिंह ठाकुरक माध्यमसँ पटना चाना समितिक रंगमंच विभागसँ जुड़ि गेलाह।

मुदा एतऽ सेहो सांगनयन ठाठ मैथिलीक चर्चा रहैत अछि-

".. धनिकाक अन्य सदस्यकेँ रंगमंचसँ वा रंगमंचक चर्चासँ रहनाक नखलनि। "

श्रीकान्त मण्डल: १ जनवरी १९९४, श्रीकान्त मण्डलक मृत्यु। राजकमल चौधरीक 'ललका पाग' कथापर फिल्म बनबा लेल स्क्रिप्ट लिखि लेने छलाह, कहैक्रि पर ह्प्पाउन रहऽ गेल, गीत समर्दे रहल। प्रमिला जी लिखैत छथि जे ओही गीत ओतुक्के वर्षक विद्यापति पर्वमे लोक सुनबा कलक।

मुदा एकटा व्यक्तिक मृत्यु मात्र एकटा संस्थाक मृत्यु, स न ओ गीत आब अछि आ नहिये ओ फिल्म बनल। मात्र व्यक्तिगत प्रयाससँ सांगनयन ठाठ कएल काज, श्रीकान्त मण्डल सांगन छलाह, ओ गेलाह आ हुनकर आ हुनकर गीतक चल्लासी धनि मरा गेल, वा मरा देल गेल।

रंगकर्मी प्रमिला: श्रीनारायण झा प्रसिद्ध 'सन' आ हुनकर पत्नी आ बाल-रंगिमा (रंगिमा नाट्य संस्थाक बाल विभाग)क प्रभारी प्रमिला जीक संम्बन्ध अछि। संगम सानु आ मानु (प्रमिला जीक दुनू पुत्र) आ

रमानाथ झा (नाबार्ड)क सेहो चर्चा अछि आ ओहोका कार्यक्रमक सेहो। हुनि प्रमिला जीक असमय मृत्यु भऽ जाइत अछि।

किछु गीत, किछु मीत: किछु बहुरंगन घटना सम्बन्ध चर्चा अछि जाहिमे सभ आ कपिल शर्मा (श्री म अहाँ सभ देखने हएत।

एकटा रंगकर्मीक यात्रा: यहिमे बन चेतना समितिक नाट्यधारामे आ बटुक भाइ कहलायन १९७३ ई मे प्रेमलता जी आ दस वर्षक बालिका अभिनय कलन्हि। १९७४ मे शामिल भेलीह नृत्यांगना रमा दास। पुरुष कलाकारक चर्चा सेहो अछि- छत्रानन्द सिंह झा (बटुक भाइ), सदानन्द झा, हेमन्त झा, हृदयनाथ झा, सी.पी.झा, माधनाथ झा, अशर्फी अजनबी, गोलाकनाथ मिश्र, बच्चूजी, शत्रुघ्न झा। चेतना समितिक अतिरिक्त नाट्य संस्था रंगलोक, नवांगन, अरिपन, रंगिमा, आंगन, कला समिति क चर्चा भेल अछि आ जिनका लोकनिमे रवीन्द्र नाथ ठाकुर, कौशल कुमार दास, छत्रानन्द, कुमार शैलेन्द्र, प्रशान्तकान्त, रवीन्द्र नारायण, मनोज मनुज, किसुन आनन्द, कुणाल, उमाकान्त, किशोर केशव, नादिनी नमश्री, जगन्नाथ लाल दास, कौशल मिश्र आ तनुश्री प्रकाशक चर्चा भेल। महिला अभिनेत्रीक चर्चा कलनि- मंजु चौधरी, सुधा दास, तनुजा शंकर, विनीता, संगीता, निवेदिता, मंजु झा, आशा झा, पूनमश्री। मृदुला सिन्हाक चर्चा भेल अभिनयक संग निर्देशन आ आलेखन लेल सेहो। मंत्रेश्वर झा द्वारा 'अरिपन'क माध्यमसँ नाट्य प्रतियोगिताक आयोजन। मृदा...

मंजु चौधरी रंगमंच के [illegible] जुड़ल लोकासँ कुशल क्षेम-ध्वनि पूछबासँ पङ्कज कर्ण, मृदुला सिन्हा, सुधा दास, पूनमश्री, प्रभा झा, नूतन झा सभ एकाएकी छोड़ि गेलीह।

सुरेन्द्र आचार्य ध्वनि संग रहलाह।

तनूजा शंकर अभिनय आ निर्देशन दुनूमे छलीह मुदा ओ दिल्ली दूरदर्शनक सीरियल सभसँ जुड़ि गेलीह, हुनकर छोट बहीन कनुप्रिया शंकर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयसँ जुड़ि गेलीह।

शामिल रहलीह श्वेता पल्लवी, शिल्पी आ रश्मि, गीनू सुपुत्री हरिहर प्रसाद (हिन्दीक कथाकार, फिल्मकार आ स्क्रिप्ट राइटर)। आनन्द मोहन झा आ हुनकर माय वैदेही झा केर सेहो चर्चा अछि। मधुलिका आनन्द, सामा आनन्द आ दीया आनन्द, सुप्रीता दास, शान्ति, सुनीता झा, अलका, नीतू, शारदा सिंह, नीलम सिंह, प्रीति, रश्मि मिश्र, अन्नु, मन्नु, बरखा सिंह, स्वाती सिंहक सेहो चर्चा अछि।

हर चर्चा अछि हुनका सभक जे अपन परिवार, अपन पत्नीकँ उत्साह आ गर्वक संग शामिल कयलनि- ललन प्रसाद ठाकुर (जमशेदपुर), अशोक कुमार झा (मिथिला विकास परिषद, कोलकाता), रोहिणी रमण झा (आँगन, पटना), प्रदीप बिहारी (बेगूसराय), चतुर्भुज आशावादी (विराटनगर, नेपाल) आ श्याम सुन्दर सिंह (रंगिमा, पटना)।

एगो छली सिनह: ई कथा संग्रहमे १२ टा लघुकथा अछि, जाहिमे एकटा कथा अछि 'एगो छली सिनह', ई विधवा सिनहक कमलेश संग भावनात्मक सम्बन्ध, कमलेशक धोखा दऽ भागि जायब आ ओहि सम्बन्धसँ होबऽवला बच्चाक जन्म देबाक जिदपर आधारित अछि। कतेक साल बाद ओ घूमि कऽ एलि आ ओही बेटाकेँ अपन घराओ लिखि देलनि ई हुनका काटि कऽ भाग देबाक निर्णय सुनल छलखिन्ह।

ई संग्रहक एकटा आन कथा 'ब्यूटीपार्लर' विवाहेतर भावनात्मक सम्बन्धपर आधारित अछि जाहिमे पुरुखकेँ बियाहल महिलापर कुमारिसँ अध्ययन करबाक छूट छै।

'डायनी' कथामे सासु-पुतोहुक खिस्सा छै। ई बेटा-पुतोहुकेँ सासु घर खाली करेलन्हि सगरे सेना कलकन्हि आ हुन डायनी भेल।

'अपराध'मे काका बापसन बच्चा घरसँ भागि गेल रहै आ हुन घूमि कऽ आबि गेलै तकर कथा अछि।

'चँचरी पूल'मे बाढ़िक इलाका, चचरी पूलक भासब देखब आ हुन मनस्थिति देखब, चँचरी पूल आ प्रकृतिक मिलि कऽ समाजमे एक सूत्रमे बन्हबाक वर्णन अछि। एहन पछिला साल एकटा समाचार आयल छल ई बिहारमे लोहाक पूलकेँ चोर काटि कऽ लऽ गेलै। से स्थिति अखनो ओहने छै, चँचरी पूल चोरि होइ छलै, आब लोहाक पूल चोरि होइ छै।

'मैयाँ' कथामे मैयाँ आ किसुनमाक आत्मीय सम्बन्धक चर्चा भेल अछि।

'बौगनधी'मे नएह नामक खिस्सा अछि, मनलाक बाद रोजम मदति करू आ सएटा निकहा खग लिखबा लिअ।

'डमनागन' स्कूलक सनिका, एक गनहसँ डाकन चनित्र चित्रण कएल गेल अछि।

'ढाहनि'मे सुधा आ नधियाक कथाक वहने स्त्री-विमर्श आ जाति विमर्श दृष्टु आयल छै, आ दुनू ज महिलायन एकान दावना मानि यडेग छैक।

'(Oस'मे शहनमे वहुक घासबाक वाद महिला कर्मचारी सएक आयसी गयशयक विवनध छै।

'गृह-प्रवेश'मे कना दुमाशनल कs साम लाकसँ काज लल जाइ छैक गकन विवनध अछि।

'उदास आँगन'मे काकीक मृत्युक अवसनयन हुनकन खगा, ननका छोड़ि सए गँ सिनमाक शसयन गीत उठवैत अछि, काकीकँ स नै साहाइग छलहि। हुनकन अन्तिम संस्कानमे सौंस टालक छौडा सए हुनक चितायन गिकुला-मङानसँ लदवद OIनि काटि कs ध्s देलक, उँ काकी जेवन नै छै गँ ककरा अँचान-आमिल नै वनवs दइ जगी। काकीसँ प्रेम.. स्वर्गमे वैसि खुव वटनी वनविहँ...

८२ वर्खक एनी एनी कँ जे वनूका साहित्यक नावल युनस्कान दवाक घाषणा स्मृतिश एकतमी कलक। स्मृतिश एकतमी डाइसँ यहिन नवीन्द्रनाथ OIकुनकँ एकटा ह्वीटमे मान याउलक।

"पिपली मास नै, पल गाछेप अछि, से उाकना लग समय समय छै।"

ओना ओनौ पहिने आत्मकथात्मक उपन्यास लिखलन्हि मुदा शीघ्र ओ मात्र आ मात्र संस्मरण लिखय लगलीह।

प्रमिला मिश्र 'प्रेम'क किछु कथा जेना 'ओगो छली सिनेह', 'चूड़ीवाली' वाला अछि नै आ 'छाहरि' आ 'उदास आँगन' मे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अछि। मुदा हुनकर मजगूत पक्ष छन्हि 'संस्मरण' आ ज्ञानक खजाना हुनका लगमे छन्हि से ओ ओना ओनौ जकाँ संस्मरण लिखिय कऽ सभा सकैत छथि। आशा अछि जे हुनका कलमसँ ढेर नाम संस्मरण आर निकलतन्हि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१९.अजित कुमार झा- मैथिली रंगमंचक प्रेरणास्रोत: श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम


अजित कुमार झा

मैथिली रंगमंचक प्रेरणास्रोत: श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम

हिन्दी सिनेमा 'आनन्द' मे एकटा डायलॉग छल जकरा मैथिली मे एना कहि सकैत छी- 'दुनिया एक रंगमंच छैक आ हमसब मात्र कठपुतली जकर रास ऊपर वाला कँ हाथ मे छन्हि'। शायद एही लेल ई कहबी प्रचलित छैक जे- ' सबहिं नचावत राम गोसाईं '। जौं कागज कलम ल' क' लिखनाई शुरू करी त' शायद हम सब लिखबा मे सक्षम नहि होएब जे एक्कहि समय मे कतेक चालि हम सब निमाहि रहल छी। ओना सच त' ई छैक जे कतेक चालि मे हमरा सब कँ ऊपर वाला नचा रहल छथि से बूझबाक सामर्थ्य हमरा सब कँ कहाँ अछि। ओना आइ हम ओहि नाटक केर चर्चा नहि क' रहल छी जकर पात्र, कथा, पटकथा, दृश्य, स्थान, लाइट, साउंड, म्यूजिक आ अन्य समस्त चीजक निर्देशन सर्व शक्तिमान एवं सर्व विद्यमान ईश्वर कँ द्वारा होइत अछि। जी हम चर्चा क' रहल छी जे अपन अपन गाम मे, विद्यालय मे संस्था

अधिकांश व्यक्ति कोनो-ने-कोनो रूप मे खेलायल छथि। ओहि समय गाम घर मे मनोरंजनक स्रोत सब सँ प्रचलित माध्यम छल। मनोरंजन केर साथ-साथ समाज मे जागरूकता आनय केँ लेल विभिन्न तरहक नाटक केर मंचन होइत छल। आम जनता जेँ आसानी सँ कोनो विषय वस्तु केँ समझि जाइत छलथि ओतेक कोनो आन माध्यम सँ संभव नहि छल। समाज मे व्याप्त कुरीति सब केँ कहब मे नाटक आम जनता मे जागरूकता अनबाक सब सँ सशक्त माध्यम अछि नाटक। ओना समय बदललै आ संगहि लोक सबहक सोच सेहो बदलि गेलै आ गाम सँ नाटक वस्तु जे विला गेल आ कहुना पवित्र पावनि दौरान केँ अवसर पर फूहड़ आर्केस्ट्रा आ डी जे बजा वर्तमान मे अपन विकृत मानसिकताक परिचय दऽ जा रहल अछि। शायद कोनो गाम मे आब नियमित रूप सँ नाटक होइत अछि। नाटक आब विभिन्न शहर केर रंगमंच धरि सिमटि क' रहि गेल अछि। समाज मे अनेकों काल सँ कुरीति रहलै अछि आ समय केँ साथ बहुत बदलाव अयलै मुदा आधुनिकताक दौर रहितहुँ हम सब एखनहुँ बहुत तरहक सोच केँ बदलय मे सफल नहि भेलहुँ अछि। अहि मे एकटा प्रमुख रूप सँ जौं चर्चा करी त' एखनहुँ बटा-बटी मे लेनदेन होइत अछि। स्थिति मे बहुत सुधार भेलैया मुदा एखनहुँ बहुत बदलाव केर आवश्यकता अछि। पुरुष प्रधान समाज मे आइयो एहन कोनो क्षेत्र नहि अछि जाहि मे मिथिलाक ललना एहेन केँ पुरुष सँ टक्कर नहि ल' रहल छथि? चाहे शिक्षा केर क्षेत्र होइक अथवा खान विज्ञानक, चाहे खेल होइक, राजनीति होइक अथवा कलाक क्षेत्र सब मे अपन मेहनत सँ पुरुषक समकक्ष अपना आप केँ साबित कयलनि हँ।

आइ हम चर्चा क' रहल छी मिथिलाक ओहि ललना केर जिनका हुनक कार्यक्षेत्र म सब माँ कहि संबोधित करैत छथि। ओ बुझित भेल हेबै ज हम जिनकर चर्चा क' रहल छी स रहलीह मैथिली रंगमंचक एक सशक्त हस्ताक्षर, निपुन कलाकार आ नवका पीढ़ीक महिला कलाकार लेल प्रेरणास्रोत श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम। हुँ आइ ओ हमरा सभक माझ नहि छथि मुदा अपन जीवन म ओहि मुकाम धरि पहुँचय लेल निस्संदेह कतेक संघर्ष करय पड़ल हेतन ओहि पुरुष प्रधान क्षेत्र म तकर सहजहि अनुमान लगायल जा सकैत अछि।

नहिका निवासी पंडित दीनानाथ झा आ हुनक पत्नी श्रीमती वृंदा देवीक एकमात्र संतान प्रेमलता केर जन्म सन् 1948 म भेल छलन्हि आ मात्र बारहम बरख म हिनकर विवाह सहा ह' गेलनि मुदा हिनक पति देव कँ इच्छाक अनुरूप हिनकर पढ़ाइ जारी रहलनि। गाम समाज अपन नाटक देखावय सँ कहाँ बाज अबैत मुदा हिनकर ध्यान सदैव अपन लक्ष्य पर केंद्रित रहलन्हि। माता पिताक सहयोग, पति देवक प्रोत्साहन आ अपन लगन सँ सन् 1963 म प्रथम श्रेणी सँ मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण भेलीह। ओहि कँ बाद पटना चलि अयलीह आ पटना श्रद्धेय यात्री जी कँ अभिभावक रूप म पाबि निरंतर अपन प्रतिभाक परिचय दैत रहलीह।

पटना श्रद्धेय यात्री जी केर प्रेरणा सँ आकाशवाणी पटना सँ जुड़ि गेलीह। तखन सँ हिनक नाटक कँ प्रसारण होवय लागल। लोग मात्र आवाज टा सुनैत छलन्हि, चेहरा त' नहि देखैत छलन्हि ताहि बातक निश्चिंतता छलन्हि मुदा बहुचर्चित चटक रंग आ अन्य किछु व्यक्तित्व हिनका रंगमंच पर आबय लेल प्रेरित करैत रहलनि। ओ

समय काल कें विषय मे मोन पाड़ि सकैत छी जे मंच पर महिला कें प्रवेश नहि छलनि आ स्त्री पात्रक भाग सेहो पुरुष करैत छलाह। बाद मे जा क' अन्य भाषा भाषी महिला लोकनि मैथिली रंगमंच पर आबय लगलीह मुदा सब विधयूनाओन लगैत छल। अपन माटि पानिक सुवास कतहु नहि छल। कोनो मिथिलानी लोक लाजक भय सँ आगाँ साहस नहि जुटा पाबि रहल छलीह। हिनका मोन मे सेहो लोक लाजक भय छलन्हि तेँ किछु असमंजस मे छलथि मुदा सबहक प्रोत्साहन सँ हिम्मत जुटाबय मे सफल भेलीह आ बाँकी त' सब इतिहास अछि।

ओना त' कोनो बात जे बीति गेल से इतिहास अछि मुदा इतिहास सबहक नहि लिखाइत छैक। इतिहासक पन्ना पर स्वर्णाक्षर सँ हुनक नाम अंकित होइत अछि जे विषम-सँ-विषम परिस्थिति मे सेहो हिम्मत जुटा लीक सँ हटि क' काज करैत छथि अथवा धाराक विपरीत हेलैत छथि आ आबय वाला पीढ़ी लेल नव प्रतिमान गढ़ैत छथि। एहन सन विषम परिस्थिति मे हिम्मत जुटा क' मैथिली रंगमंच पर पदार्पण कयलनि अपन माटि पानि एवं संस्कृति कें हृदय मे जोगौने मिथिलाक ललना श्रीमती प्रेमलता मिश्र प्रेम। 10 नवम्बर 1973 कें विद्यापति पर्व समारोहक पावन अवसर पर शहीद स्मारक स्थल, पटना मे चेतना समितिक मंच पर पंडित दिगम्बर झा द्वारा लिखल आ श्री गणेश सिन्हा कर निर्देशन मे ' टूटैत लोक ' नाटक मे पहिल बेर मैथिली रंगमंच पर एक मैथिल ललना कर पदार्पण भेल। पहिल प्रस्तुति मे धखायल त' छलीह मुदा दर्शक वृन्द कें अपन अभिनय पर चर्चा करबाक लेल विवश जरूर क' देलनि। एकबेर आबि गेलीह त' फेर पाछू घूमि क' ताकबाक प्रयोजन नहि पड़लनि।

चेतना समिति, अभिनय, भंगिमा एवं दर्शक समक्ष नाटकक मैथिली रंगमंच पर निरन्तर एक-सँ-बढ़ि एक प्रस्तुति द्वारा अपन अभिनय प्रतिभाक अमिट छाप छोड़ैत गेलीह। एखनधरि लगभग दु सौ सँ बेसी नाटक मे अभिनय कयलनि अछि आ समय-समय पर विभिन्न मंच सँ पुरस्कृत होइत रहलीह। एहि उम्र सँ जुड़ल शायद एहन कोनो पुरस्कार होएत जे हिनका हाथ मे आबि गौरवान्वित नहि भेल होएत। मुदा सब सँ पैघ पुरस्कार अछि दर्शक वृन्दक थपड़ी जे हिनका एखनधरि भेटैत आबि रहल छन्हि। हिनका सँ प्रेरित भ' नहि जानि कतेको मैथिल ललना एहि मंच पर आबय कें साहस जुटाबय मे समर्थ भेलीह आ शान सँ मैथिली रंगमंच पर न'व प्रतिमान गढ़ि रहल छथि।

मैथिली नाटक सँ जे टी व्यक्ति जुड़ल छथि अथवा मिथिला मैथिली आन्दोलन मे कोनो-ने-कोनो रूपें अपन योगदान द' रहल छथि तिनका अवश्य स्मरण होयत जे सन् 2007 कें चनौरा गंज मे श्री बचन ठाकुर द्वारा पहिल बेर हुनक पुरुष पात्र केर महिला द्वारा अभिनय करयबाक अभिनव प्रयोग भेल छलै, आ तकरा बाद निरन्तर लगभग सात वर्ख धरि सरस्वती पूजाक अवसरपर ई धारावाहि आयल छथि।** ओहि तकर बहुत बाद मिथिला मैथिली आन्दोलनक एपिसेन्टर (उपनिवेश) शहर कलकत्ता, जे आब कोलकाताक नाम सँ जानल जाइत अछि, केर प्रसिद्ध रवीन्द्र मंचक प्रेक्षागृह मे 21 नवम्बर 2019 क' 'नवआयाम' केर पहिल प्रस्तुति श्री नृपेश ग्रांथ द्वारा लिखल आ श्रीमती किरण झा निर्देशित मैथिली नाटक 'करकुसकी' केर सफल मंचन भ' सकल, जाहिमे समस्त पात्र चाहे पुरुष हो

अथवा महिला सबहक अभिनय मैथिल ललना द्वारा होइत छल। ओ पहिल छथि श्रीमती प्रेमलता मिश्र मैथिली रंगमंच केँ तखन नहि छोड़ि जाइत रहलीह त' शायद एहन आयोजन होइत मे एक शताब्दी लागि सकैत छल अथवा ओहू सँ बेसी स कहनाइ असंभव। ***
मैथिली भाषाक पहिल फिल्म ' ममता गाबय गीत ' सँ ल' क' राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्म ' मिथिला मखान ' धरि अनेको फिल्म मे हिनकर जीवंत अभिनय दर्शक द्वारा निरन्तर सराहल गेल अछि। एक शिक्षिका, तखन आकाशवाणी पटना, ओहि केँ उपरान्त मैथिली रंगमंच सँ होइत मैथिली फिल्म धरि केँ सफर मे संघर्षक माध्यम सँ अपन उचित स्थान बनौलनि आ निस्संदेह ओ सम्मान भेटलनि जिनकर ओ हकदार छलीह ।
साहित्यक प्रति सेहो हिनकर रुचि रहलनि। हिनकर कथा संग्रह कर नाम छन्हि ' एगो छली सिनेह '। पतिम श्रद्धेय सुधांशु शेखर चौधरी पर हिनकर शोध ग्रन्थक नाम छन्हि ' शेखर प्रसंग'। समय-समय पर लिखल संस्मरण कर संग्रह छन्हि ' ओ दिन ओ पल '। एतबहि नहि पटना मे ' साम्ब गोष्ठी ' कर संपादन एवं प्रकाशन सँ सेहो जुड़ल छलीह। लगभग 75 बरखक वयस मे सेहो जाहि तरहें ओ मैथिली रंगमंच मे सक्रिय छथि आ अपन पारिवारिक जिम्मेदारी कर बखूबी निर्वहन करैत मिथिलाक माटि पानि आ संस्कृति सँ सुवासित हिनकर अभिनय देखि ओ कहबा मे कोनो असोकर्य नहि भ' रहल अछि जे निस्संदेह ओ एकटा समर्पित एवं सम्पूर्ण कलाकार छथि। ओ ईश्वर हिनका दीर्घायु एवं स्वस्थ राखथुन जाहि सँ आगू आओर नीक अभिनय सँ मैथिली रंगमंच केँ पुष्पित एवं पल्लवित करैत रहथि।

-अजित कुमान मा, मुजफ्फनपून, 9472834926

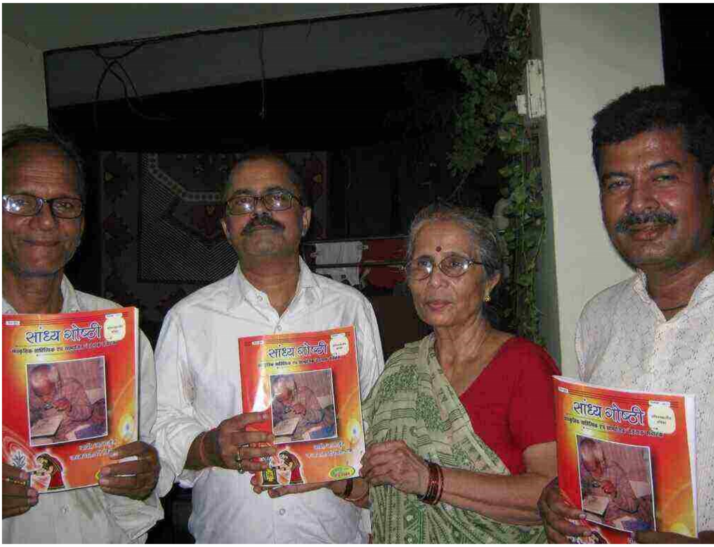
वचन Oाकुनक यहिल वन ऊी 2001 नै ननन् २२.01.१९९९ कँ रुल छल (नाटक राउ-वहीन) जऊम यूनूष-महिला सर यात्र महिला द्वाना अरिनीत रुल, समानान्कन नाटक उे मामिलाम वहुत आगू अछि। दखु* ***[विदह मैथिली नाट्य उत्सव (प्रकाशन वर्ष 2012) पृ. सं ४0 आ आगाँ] *अही लिंकयना - सम्यादक*

****ऊी कथन मुख्य धानाक नंगमंचयन लागु हाऊउ। समानान्कन धानाक नाटक आ नाटककानक नाम मुख्य धानाक लाक जानिया कs अनाOन छथि। जाs धनि समानान्कन धानाक नाट्य मंचक प्रमलता जीसँ प्रराणित रs उहि रानुक आयाजन कउल जयवाक गय अछि गँ हुनकासँ प्रराणित रनाऊ गँ दुन हुनकन नामा समानान्कन धानाक लाक नै सुनन छल, आ गऊ लल मूल धानाक लाक दाखी छथि, कलाकानसँ मंगनीम जिनगी रनि निद्यायणि यर्न समानारुम ढालक वजवावौ छथि कथादान कना दवाक लालच दs कs, मुदा उाकन संगीगक चर्च (अरिलखन) नै कनौ छथि - सम्यादक*

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यOाउ।

२.२०.प्रमलता मिश्र 'प्रम'सँ साक्षात्कान जगदीश चन्द्र Oाकुन 'अनिल' द्वाना

𑒣𑓂𑒩𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧'𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 '𑒁𑒢𑒱𑒪' 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰





𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 '𑒁𑒢𑒱𑒪': 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒁𑒰 𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒫𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒩𑒝𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒩𑒼𑒞 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒱𑒨𑒢𑒱?



𑒣𑓂𑒩𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧': 𑒁𑒯𑒱𑒏𑒰 𑒯𑒰𑒃 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒁𑒰 𑒐𑒰𑒮 𑒏𑓄 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠𑒖𑒲 𑒍 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀

कलाकार सेहो छलाह। हमरा सभकेँ छब्बीस जनवरी, पन्द्रह अगस्त,सरस्वती पूजाक अवसरपर कथा पाठ, कविता पाठ,गीत-नाद प्रतियोगिता आदि सांस्कृतिक गतिविधिमे भाग लेबाक लेल प्रोत्साहित करैत छलाह। गोविन्द बाबूक लिखल 'बसात' नाटकमे भाग लेबाक लेल तैयारी कराओल गेल छल। माय-बाबू सेहो समर्थन करैत छलाह, मुदा गामक लोक सबहक विरोधक कारणे ओहि नाटकमे भाग नहि लऽ सकलहुँ, मुदा ओ जे प्रयास भेल छल से पटना एलाक बाद चेतना नाटक आ रंगमंचक अहर्निश काज केलक।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': पटनामे रंगमंचसँ कोना जुड़लहुँ? पहिल चेतना नाटक कोन छल ? चेतना नाटकमे के सभ सहकर्मी छलाह?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': हम 1963 मे मैट्रिक फर्स्ट डिवीजनसँ पास कए नहि,1964 मे पटना एलहुँ, यात्री कक्का आकाशवाणी लऽ गेलाह आ मधुकर गंगाधर जीसँ परिचय करौलनि, ओ हिन्दीक प्रोड्यूसर छलाह, सांस्कृतिक कार्यक्रम सभमे भाग लऽ चुकल छलहुँ, चेतना नाटकमे भाग लेबामे असौकर्य नै भेल। पहिल चेतना नाटक कोन छल से मोन नहि अछि। मासमे दुटा नाटक होइ छलै एकटा मैथिली कार्यक्रम 'भारती'मे आ एकटा 'चौपाल'मे। आर्यावर्त, आकाशवाणी,सचिवालय,विधान सभा आ अन्य विभिन्न संस्थान जेना स्कूल, कॉलेज, बैंक आदि सभमे काज करैबला लोक सभ अथवा हुनक परिवारक लोक सभ रहैत छलाह जेना शिवकांत झा (स्व. शैलेन्द्रक पिता),बचन झा (किशोर केशवक पिता), इन्द्रकान्त झा,

दीना झा, प्रकाश कुमार चौधरी, सदानन्द झा, गोपाल नाथ मिश्र, महिला सभमे छलीह कविता देवी, सावित्री देवी, आशा मिश्र, मंजुला सिंह आदि। गायत्रीजी सक्रिय छलाह, बटुक भाइजी छलाह, उमाकान्तजी छलाह। कुछेक कलाकार सभ चेतना समितिक मंचपर सेहो अभिनय करय लगलाह, बादमे ओहन कए कलाकार सभ हटैत गेलाह। चेतना समितिक मंचपर 1972 सँ स्त्री-पात्रक अभिनय महिला लोकनि द्वारा होमय लागल। चेतना समितिक मंचसँ पहिल नाटक 'टूटैत लोक'मे भाग लेने रही।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': रंगमंचक विकास लेल संस्था सभहक योगदान की रहल अछि?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': आधुनिक रंगमंचक विकास चेतना समितिक मंचसँ शुरू भेलै, मन्त्रेश्वर झाजीक समय 'अरिपन' द्वारा प्रचार-प्रसार शुरू भेलै, अंतर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह महोत्सव भेल जाहिमे कोलकाता, दिल्ली, विराटनगर, जनकपुर, जमशेदपुर, बेगुसराय आदि स्थानसँ सेहो नाट्य संस्था सभ भाग लैत छल। दिल्ली,काठमांडू, विराटनगर सेहो सक्रिय भेल। पटनामे कएटा संस्था शुरू भेल। भंगिमा सेहो बहुत प्रस्तुति देलक। कला समिति, गर्दनीबागक 'नवांगन', नारिदेवी नमदा झा क 'आँगन' आदि। मन्त्रेश्वर बाबूक बाद किछु दिन ठप्प भऽ गेलै, किछु दिन लेल भंगिमा ठमकल। एखन सक्रिय अछि महेन्द्र मलंगियाक 'मिथिलांगन; 'बारहमासा' प्रकाश झाक 'मैलोरंग' आदि, पटनामे 'चेतना समिति', 'भंगिमा', 'अरिपन' तीनू काज कऽ रहल अछि, 'चेतना नाट्य महोत्सव तीन सालसँ कार्यक्रम करैत

अछि, किछु मास पूर्व सुधांशु शेखर चौधरी जी पर केन्द्रित छल कार्यक्रम जाहिमे शेखरजीक लिखल कएटा नाटकक मंचन भेल अछि जाहिमे कालकातासँ आ किछु और ठामक संस्था सभ सेहो भाग लेने छल।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': मैथिली रंगमंचक भविष्य केहन लागि रहल अछि?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': मैथिली रंगमंचक भविष्य नीक लागि रहल अछि, युवा वर्ग सभ नीक अछि, सभ आयु-वर्गक लोक संग काज करबाक अवसर भेटैत छैक, अनुशासित रहैत लोक, जीविकोपार्जन सभ सेहो किछु करबाक प्रयास भेटैत छैक। रंगमंच और विकसित हएत।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': कोन मैथिली सिनेमामे पहिने काज कएलहुँ? मैथिली सिनेमाक भविष्य केहन लगैत ?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': सभसँ पहिने 'ममता गाबय गीत'मे काज कएलहुँ, विनकानंद झा, ललितेश झा आदि छलाह, फिल्म 'मिथिला मखान'केँ नेशनल एवार्ड भेटलै, एहिसँ बहुत लोक आकर्षित भेल छथि। नव-नव फिल्म सभ बनि रहल अछि। नीक फिल्म बनतै त भविष्य नीक हेतै। आनक नकल नै होइ, अपन संस्कृतिक अनुकूल फिल्म बनबाक चाही। हम मैथिली फिल्मक नीक भविष्यक हेतु आशान्वित छी।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': अहाँ घर-गृहस्थीक अतिरिक्त लेखन, सम्पादन,अभिनय सभसँ जुड़ल छी,गीत नीक गबैत छी, परिवारमे और किनका साहित्य संगीत, अभिनय आदिसँ लगाव छनि ?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': हमरा परिवारमे सभकेँ साहित्य-संगीतसँ सिनेह छै, हुनका नीक लगैत छलनि, बड़ी-बड़ी नामी लोक कवि सम्मेलन आ सांस्कृतिक कार्यक्रम देखैत छलखिन, गोष्ठीमे जाइत छलाह, पत्रिका कीनैत छलाह, पढ़ैत छलाह। धिया पुता सभ नचनिया नाटक आदिमे भाग लैत रहल अछि, सभसँ छोट पुत्र तबला वादनमे ग्रेजुएशन कए रहल छथि, दू टा पुत्र गीत गबैत छलाह, बड़ी सुगम संगीत, लोक गीतक कलाकार अछि।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': अहाँ एखन जे सभ करैत छी से नहि करितहुँ त की करितहुँ?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': अरिहन्तक अतिथिक संस्था कोना चलैत, ओकर व्यवस्थाक काज बड़ी देखलिऐ, चाह बनेनाइ, दर्शककेँ बजेनाइ,कलाकार सबहक व्यवस्थाक काज, पत्रिका छपनाइ आदि। जे सभ करैत आबि रहल छी से नहि करितहुँ त हम शास्त्रीय संगीत दिस जैतहुँ, हमरा शास्त्रीय संगीत आ सुगम संगीत प्रिय अछि।, कविता,कथामे सेहो हमर रुचि अछि।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': विभिन्न संस्था द्वारा देल गेल पुरस्कारक निर्णयक आलोचना होइत रहैत अछि, अहाँक की कहब अछि?

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम': गुण आ दोष त सभठाम रहै छै, संस्थामे आ निर्णायमे ई सभ रहै छै, मुदा, अपन विवेकसँ देखक चाही। मन्त्रेश्वर बाबूकेँ भेटलनि ओहू समय किछु लोक द्वारा कहल गेलनि जे लेखक संघक प्रभाव सँ भेटलनि अछि। किनको भेटैत त किछु

गोर अप्रसन्न हुव करथिन। दरअसंग। महाराज साहेवक दल अँग्रेजीकँ सङ्ग दूसल गेल छनि, सरकँ वूसल अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२१.उदय चन्द्र झा 'विनोद'- प्रेमलता प्रसंग



उदय चन्द्र झा 'विनोद'

प्रमिला प्रसंग

आशीष अनचिन्हार जखन प्रमिला प्रसंग किछु लिखबाक आग्रह कयलनि, हम ऊहापोह मे पड़ि गेल रही। जाहि व्यक्तिक अहाँ आत्मिक परिचय रखै छी, जाहि व्यक्तिक संग अहाँ रहै छी, जकर सम्पूर्ण जीवन अहाँक लगसँ देखल अछि, तकरा प्रसंग किछुओ निजगुण भऽ कहब बहुधा कठिन भऽ जाइ छै। रंगकर्मी छथि प्रमिला, विलक्षण रचनाकार छथि, कतेको वर्षसँ पत्रिका बहार करबाक सनक श्रमसाध्य काज करैत छथि, सांख्यगोष्ठी नामक अनियतकालीन पत्रिका अपना सम्पादनमे बहार करैत छथि। मैथिली रंगमंचपर महिलाक अनुपस्थितिक इतिहास रहल हरिमोहन झाक धर्मपत्नी सुभद्राजी सँ प्रारम्भ होइत हो मुदा ओकरा सार्वजनीन बनौलनि प्रमिला। ताहिसँ पूर्व कलकत्ताक रंगमंचपर रंगकर्मी सभ अबैत छली मुदा दकियानूस मैथिल अपन बहिन-बेटीकेँ मंचपर उतारबाक लेल तैयार नहि छल। प्रमिलाक प्रयासात पटनाक रंगमंच पूर्ण भेल आ तकर देखाउसमे बाला सभ अबैत गेली। सुप्रसिद्ध कवि मंत्रेश्वर झाक नेतृत्वमे अरिपन नामक नाट्यसंस्था लगातार नाटक

आ रंगमंचक काज कयलक। एकर लगले मित्रवर छत्रानन्द सिंह झा प्रसिद्ध बटुक भाइ आ प्रेमलता मिश्रक सदाशयताक प्रसादात पटनामे रंगिमाक स्थापना भेल जाहिमे कुणाल, निरुपि आनन्द प्रभृति गोटेक दर्जन रंगकर्मी अपन योगदान दैत अयलाह अछि। आइयो ई संस्था अपन काज करैत अछि, अधिक काल नव नाटकक मंचन करैत अछि। मैथिलीक प्रतिष्ठित संस्था अछि रंगिमा, स्थापिका छयैत अछि, ब्रह्मानन्द किशोर कर्ण प्रभृति दर्जनो रंगकर्मी एहिमे जुड़ल भेल छथि। बटुक भाइ तँ चलि गेलाह मुदा प्रेमलता आइयो बेश सक्रिय रहैत छथि।

एहि ठाम निम्न घटनाक चर्च करब प्रायः अनावश्यक प्रसंग नहि होयत। मैथिल समाज, रहिका ग्रामीण अंचलमे अवस्थित प्रायः एकमात्र संस्था थिक जे एहि बेर अपन स्वर्ण जयन्ती मनाबय जा रहल अछि अर्थात् पचास वर्षक संस्था भऽ आयल अछि। अपन त्रिदिवसीय वार्षिक समारोह मे ई संस्था व्यापक स्तरपर कवि सम्मेलन, सेमीनार एवं नानाविध सांस्कृतिक आयोजन करैत अछि मुदा नाटकक मंचन नहि करैत अछि। एकरा पाछाँक कारण अछि प्रायः नवम दशकक बात थिक। विचार भेल जे महेन्द्र मलंगियाक नाटक 'ओकरा आंगनक बारहमासा'क मंचन कैल जाय। गोटेक पन्द्रह दिन हम अपन गाम रहि रिहर्सल कराओल। नाटकमे दू गोट नारी पात्र छैक। ताहि लेल प्रेमलता तैयार भेली। एहि ठाम ई कहि दी जे प्रेमलता रहिकाक बेटी थिकी, एही ठामक स्कूलसँ प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक कयने छथि। नाटकक तैयारी जानकारीसँ भेल मुदा कोना नारीकेँ नाट्यमंचपर नहि उतारल जा सकल। स्थानीय

विरोध एतबा भयानक छल जे अन्ततः पुरुष केँ नारी बना उतारय पड़ल आ दर्शक दीर्घामे बैसल प्रेमलता नाटक देखैत रहली। एहि घटनाक हमरा मनपर प्रभाव पड़ल जे हम हारि मानि लेल। नाटक नहि करैत छी।**

कथाकार छथि प्रेमलता, बेस लिखैत छथि। मैथिल समाजक नारीकेँ स्वर देबामे ई सर्वथा समर्थ लगैत छथि। जनैत छथि जीवनक कला, चलित रंग नहि होइत छथि, हिनका नाटकमे मंचयन जे क्षमा देखल होइत से हिनक सहजता आ स्वाभाविकताक प्रसंग प्रशंसा अनेरो करैत छथि। मैथिली शिक्षाक उत्थानमे जे किछु थोड़-बहुत प्रयास भेल अछि ताहिमे ई सबल स्वरूपमे भेटली। जागरणमे विश्वास रखैत छथि प्रेमलता, आयोजन करैत रहैत छथि। साँझ गोष्ठीक आयोजन मासिक करैत एही नामसँ अनियतकालीन पत्रिका बहार करैत छथि। हालमे उषा किरण खाँ विशेषांक देखल गेल अछि। नानाविध पुरस्कारसँ सम्मानित छथि प्रेमलता। मैथिल समाज, रहिका सेहो हिनक रंगकर्मीकेँ 'महत्त्व सम्मान'सँ सम्मानित कऽ चुकल अछि।

रहिका आ पटनामे रहबाक कारणेँ हम एहि साधिकाकेँ गछाइत लगसँ देखल अछि। रहिकामे सेहो ई पिताक घराड़ीपर घर बनौलनि अछि आ एखनहु सालमे दु-चारि बेर रहिका अबैत छथि, हमरा भेँट भऽ जाइत छथि। पटना सभ मैथिली जगतक हालचाल हिनकासँ बुझि तुष्ट भऽ जाइत छी। पटना रहैत छथि प्रेमलता, रहिका रहैत छथि, संगहि सीतामढ़ीमे अपन सासुर सिनसी सेहो जाइत-अबैत रहैत छथि। स्वर्गीय पतिदेव मिसरजीक दीर्घ

𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒄𑒧𑒰𑒢𑒠𑒰𑒩𑒲 𑒠𑒹𑒐 𑒔𑒧𑒞𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒲। 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒢𑒱 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒰𑒦𑒱𑒭𑒹𑒏𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒢𑒰𑒢𑒲 𑒢𑒱𑒩𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒍𑒯𑒱 𑒨𑒳𑒑𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒢𑒲 𑒥𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱 𑒕𑒟𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒪𑒞𑒰। 𑒥𑒰𑒪𑒰 𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒏 𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒟𑒱, 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒢𑒱 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒋𑒐𑒢𑒼 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒍𑒯𑒱 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒢𑒲 𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒂 𑒋𑒏𑒩 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒁𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰। 𑒏𑒢𑒹𑒏 𑒙𑒰 𑒁𑓀𑒬 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒨-

"𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒧𑒴𑒪𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰। 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫𑒧𑒹 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒁𑒢𑒦𑒱𑒖𑓂𑒘 𑒁𑒕𑒱 । 𑒖𑒿 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞s 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏। 𑒄 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒹𑒙𑒰𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒣𑒩 𑒥𑒡𑒲 𑒜𑒼𑒪 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝𑒹 𑒣𑒲𑒙𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒥 𑒏𑒹 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒲, 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒢𑒯𑒱। "

𑒋𑒯𑒢 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒢𑒰𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏 𑒩𑓀𑒑𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲, 𑒋𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩, 𑒋𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏, 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒯𑒧 𑒮𑒥 𑒡𑒢𑓂𑒨 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒲। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒪𑒪𑒢𑒰𑒏 𑒙𑒼𑒩𑓂𑒔𑒪𑒰𑒃𑒙 𑒕𑒟𑒱 𑒄, 𑒣𑒙𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒹 𑒢𑒰𑒢𑒲 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒲 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑 𑒋𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒫𑒱 𑒫𑒻𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒏𑒩𑒳𑒝 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒨-

𑒯𑒹𑒿 𑒠𑒲𑒠𑒲

𑒏𑒞𑒨 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒄 𑒁𑒖𑒮𑓂𑒩 𑒮𑓂𑒩𑒼𑒞

𑒖𑒏𑒩 𑒣𑒰𑒢𑒱

कहिया करता जननी-धात्रीम

सुखाएल नहि छै

सृजन-श्री जकाँ

ककरो अभिघात नहि करैत छै

सबहक लेल लाभदायक छै।

प्रेमलता हमरा पीसा करैत छथि, हुनक नैहर हमर सासुर, हमर पत्नी हुनक पीसी आ हम पीसा। हिनका ओखरा देखि सभ कहै छै, कृतार्थ होइत रहैत छी। ओहन कर्मठ गृहिणी, संगहि सक्रिय रंगकर्मी भेटब दुर्लभ। जय मैथिली।

**प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' अपन संस्मरण संग्रह 'ओ दिन ओ पल' केर संस्मरण 'बन-बन बसिया जाइत छी' मे ओ घटनाक विस्तृत वर्णन करैत छथि। ओ लिखैत छथि जे बिनु सह-कलाकार संग निर्देशक नहिकाम अभिनयक (गौआँ उदय चन्द्र झा 'विनोद'क आग्रहकेँ ओ अस्वीकार कएलन्हि, नाटक महेन्द्र मलंगियाक छल आ नाटक छल- 'ओकर आँगनक बारहमासा'। ओ लिखै छथि जे सभखन सभकेँ प्रसन्न नै राखल जा सकैए, आ इएह जे ओकर हुनका दुख छन्हि। - सम्पादक

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२२.प्रदीप पुष्प- मैथिल नारीक सांस्कृतिक- साहित्यिक स्वर - प्रेमलता मिश्र प्रेम

प्रदीप पुष्प

मैथिल नारीक सांस्कृतिक- साहित्यिक स्वर - प्रेमलता मिश्र प्रेम

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' जी बहु परिचित नाम छथि। हिनका मैथिली रंगमंचक पहिल महिलाकर्मी हेबाक गौरव प्राप्त छन्हि। हिनक व्यक्तित्व बहुआयामी छन्हि। जहिना रंगमंचक अभिनेत्री तहिना कोमल हृदय साहित्यकारा। हुनक रचना पढ़ू प्रमाण।

हिनक जन्म मधुबनीक नेहिकाम भेलनि आ मात्र बारह बरखक अवस्थामे विवाह सङ्ग भ' गेलनि सीतामढ़ीक धाधी - सिमरी नामक गाममे। हिनक जीवनक प्रारंभ अति विषमतापूर्ण रहलन्हि। स्वनामधन्य वैद्यनाथ मिश्र यात्री जीक कहला पर ई घटना रहय लगलीह। धनी-

धनी हिनक अध्ययन सेहो व्यवस्थित रहलन्हि गेल आ ओ मैथिलीमे एम. ए. कएलनि पटना बाद पी. एच. डी सेहो।
पटनाक बांकीपुर राजकीय प्लस टू बालिका विद्यालय मे अपन अध्यापिकाक पदकेँ सुशोभित कएलीह। ओतहिसँ सेवानिवृत्त भ' विभिन्न गतिविधिमे सक्रिय छथि। हिनका बहुत रास साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था सम्मानित कएलकनि जाहिमे चेतना समिति पटना, अभियन पटना, विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा सेहो उल्लेखनीय अछि। प्रेमलता जी बहुत मैथिली, हिंदी आ भोजपुरी नाटक, धारावाहिक आ फिल्मम अपन अभिनयक बल पर छाप छोड़लनि।

हिनका मैथिल नारीक सांस्कृतिक साहित्यिक स्तर कहबाक अभिप्राय ओ ई जाहि समयमे मैथिल नारी घरमे बंद रहैत छलीह, कोनो बाहरी गतिविधि खास क' कला आ संस्कृति सँ जुड़ल रहब ओहूमे नारीक उपस्थिति शून्य रहैत छल, चौखटिसँ बाहर पयर द' कठ मंच पर अभिनयक सपना नै देखि सकैत छलीह ताहि अग्रगण्य धनावंदी बला समय- कालमे हिनक पदार्पण भेल आ पटनाक मैथिली रंगमंचकेँ पहिल स्त्री कलाकार भेटलीह- प्रेमलता मिश्र प्रेम।
हिनक कुशल अभिनय, किनदानमे तुवि जवाक कला, संवादक कुशल उतार- चढाव नाटक वा चलचित्रमे प्राण आनि दैत छल। छोटसँ छोट भूमिकामे हिनक उपस्थिति भेला उत्तर ओ भूमिका अर्थपूर्ण भ' जाइत छल।

मूलत: कलाकार होबा कारणे प्रेम जीक कलापक्ष सौंदर्यबोधक पत्रिकीति थिक जे साहित्यक रूपमे सेहो प्रकट रहैत अछि आ से

खूब नीक जकाँ प्रकट होइत अछि जहिना दरभंगाक जखन- तखन हिनक दूटा पोथी एकहि संग प्रकाशित करैत अछि- ओ दिन, ओ पल(सम्बन्ध) आ एगो छलीह सिनेह(कथा संग्रह) । ओ पल, ओ दिन होउ वा एगो छलीह सिनेह दुनू पोथीक दूटा अलग विधा होएबाक बादो दुनूमे एकटा समानता देखल जा सकैत अछि। ओ समानता थिक कहबाक वाक्य शैली। सम्बन्ध पढ़ू वा कथा, लेखिकाक मूल तत्व छन्हि रोचकता आ कलात्मकता से दुनू पोथीमे देखल जा सकैत। हिनक सम्बन्ध सेहो कथे जकाँ अछि आ कथा सेहो सम्बन्धे जकाँ। पढ़बा काल पाठकक सामने सजीव चित्र उपस्थित करबाक एकमात्र लेखिकाक अभीष्ट। एनाम, कथाक अंत किछु होउ ओकर 'फिनिशिंग' कनि कम नाटकीयता हो से संभव मुदा ओकर प्रभाव चित्रमय होइत अछि ।उपरोक्त दुनू पोथी एकटा तत्कालीन मैथिल नारी समाजक जीवनक विविध चित्र उपस्थित करैत अछि। हिनक शोध ग्रंथ आधारित एकटा तेसर पोथी सेहो अछि- लेखन- प्रसंग। अइमे प्रमिला जी वरिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार सुधांशु शेखर चौधरीक व्यक्तित्व आ कृतित्व पर मूल्यांकन कएने छथि। सुधांशुजीक विपुल अवदान छन्हि। जहिना मैथिलीक विशिष्ट गद्यकार तहिना प्रसिद्ध पत्रकार सेहो। मैथिलीक संगहि ओ हिंदी मे सेहो खूब लिखलाह। जेनाकि प्रसिद्ध आलोचक मोहन भारद्वाज जी पोथीक भूमिकामे कहैत छथि-'एहन शोध ग्रंथ मे रचनात्मक विश्लेषणसँ बेसी ज्ञान ओकर ऐतिहासिकता आ प्रमाणिकता पर रहैत अछि' तहिना अइ पोथीमे सुधांशुजीक समस्त व्यक्तित्वक क्रमबद्ध उल्लेख रहैत अछि आ ई पोथी समीक्षाक नीक पोथी बनैत अछि।

कारा ओकरा छाड़ि - छथि प्रसादक ककरा नामी कलाकार बनबाक, साहित्यकार बनबाक बीजारोपण करैत अछि से ओँ बूझबाक अवश्य अछि त' हिनक यात्री सन पढ़बाक चाही। हिनक जीवन संघर्ष करैत मैथिल नारीलल प्रश्न स्रोत अछि आ ओँ हिनक यात्री ठाकुर आवश्यक अंग। हिनक यात्रीक साहित्यिक मूल्य जे होउ, ओकरा कलाकारक जीवन यात्राक परिचायक रूपम बस महत्व छैक।

- प्रदीप पुष्प, नवीन(मधुबनी) संपर्क- 7903496553

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३ अंकक अन्यान्य रचना

३.गद्य खण्ड

३.१.उमेश मण्डलक ५ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.२.उमेश मण्डलक ५ टा कथा- कथा-२ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.३.उमेश मण्डलक ५ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.४.उमेश मण्डलक ५ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.५.उमेश मण्डलक ५ टा कथा- कथा-५ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

३.६.कुमार मनोज कश्यप- १ टा लघुकथा- श्रद्धा-सम्मान

३.७.जगदीश प्रसाद मण्डल- अपन रचित रचना

३.८.जगदीश प्रसाद मण्डल- माड़पर (धारावाहिक उपन्यास)

३.९.राशन जनकपुरी- बुढ़िया आ मन्ताक खिस्सा

३.१०.प्रेमशंकर झा 'पवन'- जनकवि 'मैथिली पुत्र प्रदीप' (प्रेम शंकर झा 'पवन'क मैथिली पुत्र प्रदीपपर आबैवला निबन्ध मानाग्रन्थक अंश)

३.११.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- १४म खप

३.१२.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (भाग- ८)

३.१३.डा. विपिन कुमार झा- महाकवि भास प्रणीत कर्णभारम् मैथिली अनुवाद (भाग-५)

४.पद्य खण्ड

४.१.राज किशोर मिश्र- विआह-वर्णन

४.२.समता कुमारी- हम छी नारी

५.संस्कृत खण्ड

५.१.डा. दीपिका- चम्पूसाहित्यस्य विलासः (चतुर्थोल्लासः)

६. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

३.१.उमेश मण्डलक ७ टा कथा- कथा-१ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ एतऽ

विदेहक लेखकक आर्काइव रचना आ अध्ययन आर्काइव समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "मातिक वासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिनगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ऐ शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गणमान्य कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ७-७ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

𑓑.𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞

𑓒.𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓓.𑒩𑒰𑒧 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒯𑒳

𑓔.𑒩𑒰𑒖𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓕.𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒩𑒰𑒨

𑓖.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓗.𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓘.𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑒌 𑒁𑓀𑒏𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒏 𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰, 𑒖𑒏𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱। - 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏

𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒏𑒩 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰

𑒏𑒟𑒰 𑓑

𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒮𑒑𑒯𑒣𑒩

𑒯𑒰𑒢, 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒱𑒕𑒾𑒢𑒣𑒩 𑒏𑒧𑓂𑒧𑒪 𑒍𑒜𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒖𑒰𑒑𑒪, 𑒧𑒢𑒧𑒹 25 𑒠𑒱𑒮𑒧𑓂𑒥𑒩 𑒢𑒰𑒔𑒪। 𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲 𑒪𑒑𑒱𑒔𑒰𑒋𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒾𑓀? 𑒑𑒼𑒭𑓂𑒚𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒢 '𑒮𑒑𑒩 𑒩𑒰𑒞𑒱

दीप जनय'क 107म कथागोष्ठी। आइ 24 दिसम्बर भऽ गेल मुदा अखन एक कथा लिखैत होथि से लगलौं छन.! महान लेखक जकाँ ओकराबन मे अर्थात् ओकर स्वयम कथा लिखि कऽ होइतनला गँ नहियँ कएल होइत अछि.! बुझु जे चिन्हित जकाँ भऽ गेलौं।

राति थाकल ओवन भऽ गेल नहुए सुतैम। ओवनक मोन दुनू दिस होइए। मोन, भोरम 10 बजे रातिम सुतल विछौनपर चलि जाइ छी गेलम हँ 11 बाजि गेल, एकटा ओवन इ छव कएल। मुदा हँ 10 बजेक बदला नव बजेम सुतल चलि गेलौं गँ एकरा की कहबै? सबन कहबै, मुदा छल गँ इहो ओवन, मोन बनयन नहियँ छल।

खाएन ओवन-सवनम नहि यति हम अपन खिस्सा जे सुनबए चाहै छी से सुनल जाए। कहब कलौं लिखैसँ पूर्व चिन्हित जकाँ भऽ गेल नही। 'सगर राति दीप जरय'क मंचपर कथा पाठक अवसरि छएन अछि।

एकाएक गोष्ठीक मूल संयोजन नहीन गेल। कारका महान साहित्यकार लोकनि ओ मंचसँ बाजि चुकल छथि जे ओ गोष्ठीक परसादे नवनाकारकँ नव कथा लिखबाक संयोग बनै छैन।

वास्तवम अपनौं इ अनुभव छल अछि। अहो गोष्ठीक बदौलत किछु कथा अपना लिखि पलौं अछि। जहिना सर कथाकारकँ नव कथा लिखबाक निलम्हा भऽ जाइ छैन तहिना अपना छल। कालिएः गोष्ठी छी आ अखन धरि कथा नहि लिखलौं।

इच्छा छल जे अखनसँ लिखब शुरू करी। मुदा आलसैन लागि गेल कि की, कम्बल तनसँ निकलैक मन नहि छल। मुदा मना गँ असगर नहियँ अछि। मनोवैज्ञानिक लोकनि तीन प्रकारक मनक चर्च करैहि

छथि। एक मन कहलक जे कम्मल तरसँ अखन नइ निकलैक मन होइए तँ नहियेँ निकलू। मुदा दोसर मन कहलक, तखन काज कोना हएत?

ताहूसँ, कोनो क्रियाक निरोधसँ भाव बदलासँ निकलब तँ चाहबे करी, नहि तँ शान्ति कोना रहत।

निकलि ठाढ़ होइते दोसर मन कहलक- "लिखैक मन अखन नहि होइए तँ नहि लिखू मुदा लिखब की, अखन सएह विचारि लिअ, पछाइत लिखि लेब।"

मन-मन विचार तय कऽ लेलौं। ठीक छै अखन विषय-वस्तुएँ ठेकिया लइ छी। कोनो रचनाक मूल तत्व ओकर विषय-वस्तुए ने होइत अछि। कम्मल ओढ़ने पड़ल-पड़ल कथाक विषय-वस्तु आ उद्देश्यक पाछू मन चलए लागल।

मन तँ मन छी। मनकेँ विषयमे अही बीच, एकटा पोथीमे पढ़ने रही जे मनुक्खक मन हजारो बेर एक्के ओखनामे तरैए। मन पड़ि गेल राय साहेबक गप।

एकटा नव मित्रसँ काल्हिखन भावाइलयन गप-सप्प भेल छल। हुनका हम 'राय साहेब' कहै छियनि। भाषा आ साहित्यक विषयमे ओ बड्ड बात बाजल छला। जइमे एकटा बात ईहो बजला जे, जे भाषा एते मधुर अछि तइ भाषा-भाषीक व्यवहारिक पक्ष किए एना कमजोर अछि, भाव व्यवहारमे ओहने मधुरता किएक ने छइ? देखै छी बहेकालमे कहक नीक बाजि लैत अछि आ कनेकालमे ठीक ओकर उनटा करैत रहैत अछि। एना किए?

राय साहेबक विचार तँ विचारणीय बुझि पड़ल। तेँ अखनो धरि मनमे बन-बन उसक्का मारि-मारि कऽ ओठ रहल अछि। कनक

अस्थिर भऽ जखन विचारए लगलौं कि आगा अनका बापक संग अनका परिस्थिति नर्जैनिक सामने आबए लगल। मुदा तही बीचमे बुझि पड़ल जेना हमरा मन तोय नहल अछि।

ओह.! एना जँ मन तनियो नहत तखन कथा गेयान हएत? किन्नहुँ नहि कथा गेयान हएत.!

विछौनपर सँ उठि मुँह-कान धोइ चाह दिस बढ़लौं। पत्नी बुझि गेली। जाबए अपन कपड़ा पहीनिकऽ कम्प्यूटर □र करबाक लेल अग्रसर भेलौं, तेबीच पत्नी चाह नेने लगमे एली। मन भेल पहिने चाह पीब लिऐ छी, पछाइत खेनहुन मन अपन चाहक काज करब।

चाह पीलाक पछाइत मन खनहुन भेल। मुदा तेक खनखना गेल जे स्वरानिक तीनपर मन निर्णय कऽ लेलक जे आब तँ घूमै-फिरैक समय भऽ गेल। फिनसन भऽ गेल। अखुनका काज तँ घुमब-टहलबक छी। सर काजक समय होइए किने।

टहलैले बिदा भेलौं। विछौनपर जहिना कथाक विषय-वस्तुपर विचार करब पहिल काज साचि कम्प्रामाइज कऽ लेन नही तहिना पुनः मन बना आगू बढ़लौं। घरसँ निकैल कनीए आगू बढ़लौं कि एकटा वकील संग भऽ गेला। ओ हमर पड़ोसी छैथ। नाओं छियैन धनपति।

पुछलयैन- "की समाचार, धनपतिजी?"

ओ बजला-

"समाचार गड़बड़ अछि।"

हम अकचकाइत पुछलयैन-

"से की?"

हमर अकचकाएबसँ आकि की, ओ बजला-

"ऐ बीच हमर पएर-हाथ झुनझुनाए लागल अछि। मन व्याकुल भऽ गेल तँए काल्हि डाक्टर साहेब लग गेल छलौं।"

एतेक बाजि कऽ जेना ओ ठमकि गेला। पहिना आगू किछु किछु बजब न कलाह। पुछलयैन-

"तखन की भेल? मान की सभ कहलैन डाक्टर साहेब?"

"पहिने तँ पुछलैन जे नाभि-क कए बेर लगबै छिऐ। भूख-पियास करैत अछि, नीन्न होइए कि नहि। कहलयैन सभ किछु। पछाइत रंग-बिरंगक जाँच लिखि देला।"

धनपतिजी पुन: पहिलुक जकाँ आगू बाजब बन्न कऽ मुँह चूप कऽ लेला। अपना बुझि पड़ल जाँचक बादक बात सुनौता। मुदा से किछु नहि, एकदम सकदम्म रहला।

हम पुछलयैन-

"जाँच करा कऽ डाक्टर साहेबसँ देखौलिऐन की नहि?

"हँ, देखौलिऐन तँ.. मुदा..!"

"मुदा की?"

धनपतिजी जेना खूब चिन्तामे पड़ल रहैथ। अपना बुझि पड़ल जेना कोनो भारी बमारी धनपतिजीकेँ पकड़ लेलकैन अछि। एहेन बात लोक कोनो जल्दी बाजितो नहि अछि। मुदा अपने मन कहलक जे तेहेन कोनो बात रहैत तँ धनपति बजब करितैथ जे हम डाक्टरसँ देखलौं, जाँच करौलौं अछि।

हिम्मत कनि कऽ पुछलयैन-

"तखन की भेल?"

ओ बजला-

"यौ भाय, हमरा मुँहमे जाबी लागि गेल.! डाक्टर साहेब कहलैन

अहाँकेँ डायबिटीज भऽ गेल अछि।"
पुछलथिन-
"आब की सभ करबैन.?"
धनपतिजी बजला-
"पनरह-बीस दिन तक आलु-चीनी-चाउर बिलकुल बन्न करू। एकबेरमे तीनटा सोहारी आ छोटकी कटोरी भरि दालि खा सकै छी। तरकारी कनी बेसिए खाएब तँ कोनो बात नहि। बीस दिनक पछाति एकबेर फेर जाँच कराएब आ तकर बाद कनी-मनी भात खा सकब। सभ जाँच देखला बाद कहब। आलु-चीनी तँ सोझे बन्न कऽ दियौ।"
धनपतिजीक बात सुनि हमरा मन पड़ि गेल अपन मित्रक एकटा बात। हमर एकटा मित्र डॉक्टर छथि। ओ एकदिन हमरा बुझा कऽ कहने छला जे डायबिटीज दू प्रकारक होइत अछि। टाइप वन आ टाइप टू। वर्त्तमानमे जे डायबिटीज लोककेँ भऽ रहल छै ओ प्रायः टाइप-टू डायबिटीज छी। ई मे वितरणक समस्या होइ छै, उत्पादनक नहि।
हलाँकि ई बातकेँ एक बेरमे हम नीक जकाँ नहि बुझि सकल रही। तँए डाक्टर साहेबकेँ पुछने रहियैन-
"ई उत्पादन आ वितरण की..? नहि बुझलौं?"
तखन कहलैन-
"टाइप-वन डायबिटीजमे प्रायः इन्सुलिन बनैमे दिक्कत होइ छै आ टाइप-टू डायबिटीजमे इन्सुलिनक प्रसारणमे, माने वितरणमे समस्या अबै छै। माने टाइप-टू डायबिटीजमे शरीरक परक्रियाक ठीक रहल। खाली जीवन-शैलीकेँ, माने रहन-सहन, खान-पान आ

सार्वे-निवार्नेक गनीका ठीक कलासँ ॐी युना कष्ठाल रऽ जाऽ छै। ओहन नागीकँ वसी चिन्ता नहि कनक चाही। उाना, चिन्ता किनका नहि कनक चाही। चिन्तासँ आना समस्या वढिय जाऽ छै।"

हम धनयगिजीकँ कहलयैन-

"दुर्न.! काना चिन्ता नहि कनु। काज, राजन आ आनामक सहगकँ ओकनंग कनि लिअ, सर समस्याक अन्त रऽ जाओत।"

ई नवनायन अयन मंगब editorial.staff.videha@gmail.com पन यठाउ।

३.२.उमण मण्डलक ५ टा कथा- कथा-२ उ्ष्ष्यन सम्पादकीय समीजा अंग्रेजीम सम्पादकीय पृष्ठ यन

निदेहक लखकक आर्मत्रि नचना आ उ्ष्ष्यन आर्मत्रि समीऊकक समीजा सीनीज म अखन धनि अहाँ यढलौं-

१. कामिनीक यांच टा कनिता आ उ्ष्ष्यन मधुकान्त माक टियखी

Vi deha_01_09_2016

२. जगदानन्द मा "मनू"क "मारिक वासन"यन गजन्न Oाकूनक टियखी

VI DEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक माल" आ उ्ष्ष्यन गजन्न Oाकूनक टियखी

VI DEHA_354

उ शृंखलाम आगाँ समानान्तर धानाक किछु गधमान्य कथाकनसँ हुनका नजनिम हुनकन अयन सर्वश्रेष्ठ ५-५ टा कथा आर्मत्रि कएल गेल अछि। कथाकान लाकनि छथि:-

१.कयिलक्ष्मन नाउत

२.उमण मण्डल

३.नाम निलास साहु

४.नाजदन मण्डल

५.नन्द निलास नाय

६.जगदीश प्रसाद मण्डल

७.दुर्गानन्द मण्डल

८.नामानन्द मण्डल

ई अंकमे प्रस्तुत अछि उमेश मण्डलक ७ टा कथा, जकरा एखन समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक

उमेश मण्डलक पाँचटा कथा

कथा २

बाल-बोधक आगू सिक्की-मौनी

बाल-बोध, बाल-मन, किशोर-किशोरी इत्यादि शब्दक प्रयोग जिनगीक पहिल अवस्था शासन अवस्थाक श्रेणीबला लेल कएल जाइत अछि। अहिना गमन अवस्था बालिग अवस्थाक श्रेणीमे सेहो अनेको शब्दक सम्बोधन होइत अछि।

ठीक, एखन मानव वैज्ञानिक अध्ययन आधारित अछि। मुदा, अखन मनमे उठैत अछि जे बाल-बोध होअए कि बाल-मन, दुनूकेँ वैधानिक-वैज्ञानिक दुनू दृष्टिसँ देखल जा सकैए, जे सभ अवस्थामे सभ वर्गक लोक समाजमे छथि। बहुत बच्चा एहन छथि जे सियानक

कान काटै छैथ आ बहुत सियानक संग वृद्ध लोकैन सेहो ओहेन छथिन जे स्वच्छ बाल-मन सदृश अपन जीवनक धारमे प्रवाहित भऽ रहला अछि। आ ओ कोनो तेज धारा पाबि फूल जकाँ हल्लुक देखैमे ओत आ कोनो मंथन रहन हनियाउल नै देखबामे अबै छैथ, सेहो नहियेँ कहल जाएत। तहूमे मिथिलामे, जेठाम अनका धार दक्षिन मुहेँ प्रवाहित होइए अछि।

हँ! ई बात अलग जे कोनो धार बारहो मास बहैत, कोनो नअ मास बहैत, कोनो छहमासु अछि आ कोनो तीनमासुआ सेहो अछिए।

अखन, जेठाम अपना सभ छी, दू धारक बीचमे छी। पश्चिममे 'बलान' आ पूबमे 'तिलयुगा' अछि। दुनू धारक रूप-रेखा सेहो देखल छी, दू रंगक अछिए। तहिना जेँ कनी आगाँ पूब भऽ कोसीकेँ देखी वा कनीए पश्चिम भऽ कमलाकेँ देखब तँ तहू दुनूक क्रिया-कलाप दू रंगक देखब करत। मात्र कोसी धारक क्रिया-कलाप आ कमला धारक क्रिया-कलापमे अन्तर अछिए।

खाएर.., जे अछि ओ सबहक सामने अछि। नीको अछि अधला अछि। जहिना धार नीक-अधला दुनू अछि तहिना मनुक्खो अछिए। एहेन मनुक्ख अछि जे बीघाक-बीघा खेत रहितो चाउर बसाहिये कऽ खाइ छैथ आ एहेन मनुक्ख तँ छथिन जिनका कट्ठो भरि अपना खेत-पथार नहि, मुदा अपन उपजाएल अन्न खाइत जीवन-बसर कऽ रहला अछि। भलेँ ओहेन खेतिहरक गिनती सरकारक किसानक सूचीमे नै अछि। अनेरो जे होउ मुदा मिथिलामे तँ स नहियेँ अछि, ओठामक रचनाकारक सूचीमे हुनका 'बँटाइ-किसान' कहल जाइए।

ओना, रचनाकार सेहो धार जकाँ रहबनिया, पीनमसभआसँ लऽ कऽ बनहमसभआ-सबदिना बहैबला सेहो छथिए। मुदा ओ देखनिहारनयन निरेख करैत अछि। एहना देखनिहार छथि जे नाम-नाम देखै छथि आ एहना देखनिहर छथि जे क्रिया-कलापकेँ देखै छथि...। जे क्रिया-कलापकेँ देखैत देखै छथि, ओहन देखनिहारकेँ 'दृष्टि सम्पन्न' लोक मानल जाइत अछि।

हमरा गामक किसुन काका सेहो ओहन रचनाकार छथि जिनका 'दृष्टि सम्पन्न' बूझल जाइ छैन। किसुन काका आत्मनिरीक्षण संस्कृतिक एक-एक पहलूकेँ नीक जकाँ बुझैत अपन जीवनक अधिकांश समय लगा देलैन। जकर हला-हल लोकक नजरिमे जे होउ मुदा स्वयं ओ मजगूत दृष्टिबला लोक अपनाकेँ मानै छथि।

किसुन काका जीवनक उत्तरार्द्धमे आबि साहित्य रचना करब शुरू केलैन। ओना अपन जीवन प्रत्यक्ष पहलूकेँ जखन लिखब शुरू केलाह तँ हुनक ओतमानकेँ देख ओसनाएल विचारक रचनाकार, ओसनाएल विचारक रचनाकार ओ एला जनिक संसा-वावा आ कर्मधाम सम नइ छैन, ओ सभ हुनकासँ छाँह काटए लगला।

किसुन कक्काक एहन मानब शुरूए-सँ रहलैन जे जे करै छी, सएह बजबो करी आ सएह रचबो करी..।

आइक बदलैत समयमे एहन रहइय भेल अछि जे जिनका जेहन क्रिया अपन विचार पना कऽ प्रस्तुत करैए जे शब्दिक रूपेँ बहुसंख्यकेँ समीचिन लगिय जाइ छैन। ओना, शब्दक गहनाइकेँ बूझनिहार किसुन काका ओहन विचारक लोकक स्थान मात्र गप-सप्प रहिम देइ छथिन। चाहे ओ गोआँ होथि कि अनगोआँ...।

प्रसिद्ध रचनाकार बचन काका सेहो हमर ग्रामीणे छथिया। हुनका

𑒪𑒑 𑒯𑒧 𑒥𑒮𑒲 𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒻𑒮𑒻 𑒕𑒲। 𑒬𑒰𑒥𑓂𑒠𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒮𑒳𑒢 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒥𑒔𑒢 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰-𑒏𑒪𑒰𑒣𑒧𑒹 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒢।

𑒥𑒔𑒢 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒢𑒥𑒢𑒰𑒏𑒰𑒪 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒼, 𑒢𑒥𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒮𑒿 𑒥𑒮𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒥𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒻𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒢𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒢। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒧𑒠𑒢𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒢। 𑒋𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒏𑒼𑒣𑒰𑒩𑓂𑒖𑒢𑒏 𑒮𑒰𑒡𑒢 𑒥𑒢𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒰𑒢𑒼 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 𑒞𑒿 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒮𑒔𑒱𑒫𑒏 𑒣𑒠𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑓀𑒬 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒲𑒞𑒥𑒻 𑒕𑒟𑒱।

𑒥𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒪𑒑 𑒖𑒐𑒢-𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒥𑒻𑒮𑒪𑒾𑓀, 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒯𑒱𑒨𑒰-𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒥𑒔𑒢 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒰, 𑒞𑒿 𑒍 𑒠𑒳𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒣𑒯𑒱𑒪- 𑒖𑒯𑒢 𑒯𑒧 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒜𑓃𑒪 𑒥𑒲0 𑒋0। 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒟𑒱- 𑒣𑒰𑒃 𑒖𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒞 𑒞𑒿 𑒮𑒥 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒥 𑒏𑒩𑒞।

𑒥𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒔𑓂𑒔 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒲, 𑒥𑒔𑒢 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒯𑒧 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒾𑓀, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒰𑒃𑒥𑒪𑒰 𑒑𑒣 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒋।

𑒏𑒱𑒬𑒳𑒢 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒪𑒑 𑒥𑒻𑒮𑒻𑒏 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒥𑒮𑒲 𑒩𑒯𑒻𑒋। 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒲𑒝 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒏𑒼𑒣𑒰𑒩𑓂𑒖𑒢 𑒏𑒵𑒭𑒱, 𑒖𑒐𑒢 𑒧𑒢 𑒯𑒼𑒃 𑒖𑒰 𑒏𑓄 𑒑𑒻𑒿𑒚 𑒏𑒩𑒱 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒲। 𑒏𑒱𑒮𑒳𑒢 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒞𑒩𑓂𑒏-𑒫𑒱𑒞𑒩𑓂𑒏 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒹 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒙𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒕𑒻𑒢। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒾𑒿 𑒏𑒱𑒬𑒳𑒢 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰𑒏 𑒮𑒥 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒰 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲 𑒂 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒣𑒥𑒻 𑒕𑒲।

𑒥𑒔𑒢 𑒏𑒰𑒏𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒱𑒮𑒳𑒢 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒖𑒢𑒻 𑒕𑒟𑒱𑒢, 𑒍 𑒥𑒔𑒢 𑒮𑒦 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒰𑒃𑒨𑒹 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒩𑒯𑒻𑒋। 𑒞𑒰𑒢𑒰, 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒦 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒜𑓃𑒥 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞

रहल अछि जे जनु बचन कक्काक प्रसिद्धिक चलैत किसुन काकाकेँ पटरी नइ खाइ छैन। येह चलतीबला साहित्यकार बचन काका छथिए। खाएर...। कहिया काल जखन दुनू गोरमे गप-सप्प होनि तँ देखिऔन जे बकमक सन्न भऽ जाइन। बचन कक्काक करीब-करीब सभ विचारकेँ वैज्ञानिक कसौटीपर आनि दइत रहैन जइसँ स्वतः हुनक विचार कटि जाइत रहैन। मुदा से अपन तखन बुझि पाबी, जखन किसुन कक्काक संग बचन काकाकेँ तर्क-वितर्कक बीच संजोग बनइ छल।

बहुत दिन धरि अही उहापोहमे रही जे किसुन काका केना खट-द कोनो विचारकेँ खाइया छोड़ दइ छथिन..! ओ बीजकेँ बूझैक जिज्ञासा अखनो ओहिना अछि। खाएर...। किसुन काका लग ओक तँ अपन बनल अछि जे ओँ कोनो ओहो विचार बाट होइत निकलैए तँ तकरा सुधारि बूझा-सूझा कऽ सामना दइ छैथ।

मनमे सदैत ओ बीजकेँ बूझैक जिज्ञासा रहब करए जे आखिर बचन कक्काक संग किसुन कक्काक विचार-भेदक कारण की छैन?

संजोग, कथा गोष्ठी लगिचा गेल छल। कथा गोष्ठी लगिचन किसुन काका लखन कार्यसँ थोड़ेक निचन होइ छैथ। बूझल अछिए जे अखन तँ किछु पूछबैन तँ आरो खाइया छोड़ नीकसँ बूझा देता। अपन दरबज्जा आ किसुन कक्काक दरबज्जा सटल अछि। विदा भेलौं। दरबज्जापर पहुँचते दूरसँ बजलौं-

"गोड़ लगै छी काका..!"

बोली अकाइन, किसुन काका बजला-

"आबह-आबह रमेश, नीक हेबह।"

कक्काक लगमे जा बैसलौं। हुनकर मन खनहन देख बूझि पड़ल जे

अखन त किछु पूछबैन तँ सहजतासँ पानिवानिक रोगाम बूझा देता। पानिवानिक रोगक ओ गुणी डाक्टर छथि त ओ किनका विषयमे किछु बूझल बाइत तँ ओकर बकरी-बिमारक संग बूझाएल जाइए। किसुन काकासँ पूछलयैन-

"काका, बचन कक्काक विषयमे नीकसँ बूझल बाइत नहि, मुदा..?"

किसुन काका बजला-

"हँ, ओहुन-ओहुन लोककेँ बूझब सबहक लेल असान थोड़े अछि।"

किसुन कक्काक बातसँ बचन काकाकेँ चिन्हब आशा जबुतिया बूझि पड़ल। मन मानि गेल आइयो खालि कऽ नै किछु कहता। मुदा कक्काक बातकेँ बिरिया बजलौं-

"काका, तँए असान नहि अछि तँए ने अहाँसँ पूछलौं?"

किसुन काका बजला-

"काना बकरीक असली पहचान ओकर बनहानिक जीवनकेँ देखला पछाति सहज अछि। बातक दोहम तँ सह नीक बूझि पड़ाइ..! मुदा ओहो बूझनिहार-बूझनिहारयन निरैन अछि।"

प्रसिद्ध बचन कक्काक विषयमे बूझै-जानैक जिज्ञासा आइसँ नहि, गहुम डुनक मुँहक बिचारकेँ जखन-कखनो किसुन काका लग बजलौं तँ अपना आगा बात सामने आबि गेल ओझराएल रहलौं। अखनो ओझराएल रहल छी। मनमे एल, आइ किसुन काकाकेँ छोड़बैन नहि, बजलौं-

"काका, कनी स्पष्ट कऽ कहियौ ने?"

बजला-

"यहिना ओ करह त गोष्ठीमे चलबह किने?"

मूड़ी डोला 'हँ' कहि देलिऐन। हमरा 'हँ' सुनि काका अपन बातकेँ

जानी नखलैन-

"दखहक नमश, वचन सन चनित्रक लाक समाजम वसी अछि। वसी की अछि ज वड़ी-गुरकेला वसी लाक ढाहन अछि। हँ, दखवहक ज सिक्की-मौनीटा म मिथिलाक संस्कृति हुनका सरकेँ दखा पड़ै छैन।"

किसुन कक्काक बात कनी-मनी बुझबा कलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं। 'वड़ी-गुरकेला वसी लाक बचन काका सन छैथ।' ई तँ बुझलौं मुदा 'सिक्की-मौनी'म आबि ओझरा कऽ चूप नहि गेलौं।

हमर बुझीकेँ जनु काका आँखि ललाह, हुनका बुझि पड़लैन जेना नमश निरास भऽ गेल अछि। आस दैत किसुन काका बजला-

"गोष्ठीम जाइ-अबैत गेलह किन नमश, तँ सभ बात बुझि जेबहक।" θ

-

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.३.उमेश मण्डलक ७ टा कथा- कथा-३ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ एतऽ

विदेहक लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "मातिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिनगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ऐ शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गद्यमाध्य कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ७-७ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल
५.नन्द विलास राय
६.जगदीश प्रसाद मण्डल
७.दुर्गानन्द मण्डल
८.रामानन्द मण्डल

ऐ अंकमे प्रस्तुत अछि उमेश मण्डलक ५ टा कथा, जकर हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक


उमेश मण्डलक पाँचटा कथा

कथा १

जिनगीमे गुड़ाँ-रोगा आ मृत्युमे दुखा-रोगा..!
शिशिर ऋतु अबैत वसन्ती बयारसँ गाछबिरिछक बदलैत-बदलैत रूप्प स्पष्ट करबाक समए भऽ चुकल छल जे मौसम कतेक परिवर्तनशील होइत छै। गप निज औत्सुक्य रोकला छी, नहि-नहि! रोकला नहि..! विरसूनका। विरसूनका मान जखन टकैल-बुलि कऽ घरमुहाँ भऽ चाह पीबैत निर्धारित जगहपर पहुँच गेल नहि। हम बाबू रागक अबैत संगी सरक संग, मान विरसूनका संगी सबहक संग, कतीव-

𑒏𑒩𑒲𑒥 𑒢𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒋𑒏𑒥𑒹𑒩, 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒍𑒢𑒰, 𑒂𑒃 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒢𑒲 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒻𑒧𑒹। 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒖𑒑𑒯𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝𑒧𑒹 𑒑𑒩𑓂𑒧𑒣𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒃। 𑒧𑒾𑒮𑒧𑒲 𑒑𑒩𑓂𑒧𑒣𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲, 𑒍𑒢𑒰, 𑒍𑒯𑒼 𑒞𑒿 𑒩𑒯𑒥 𑒏𑒩𑒃, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱, 𑒋𑒚𑒰𑒧 𑒯𑒧 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣𑒏 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝-𑒋 𑒏𑒯𑒪𑒾𑓀 𑒁𑒕𑒱।

𑒂𑒃𑒏 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩𑒧𑒹, 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒹𑒮𑒲𑒋 𑒂𑒫𑒹𑒬𑒧𑒹 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒰 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒖𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒮𑒿 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒍𑒢𑒰, 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒬𑒻𑒪𑒲𑒋 𑒂𑒫𑒹𑒬𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒕𑒻𑒢, 𑒥𑒰𑒥𑒢𑒧𑒹 𑒍𑒯𑒲 𑒂𑒫𑒹𑒬 𑒖𑒪𑓂𑒠𑒲 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒻। 𑒐𑒰𑒋𑒩, 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒖𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒼 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒔𑒹𑒯𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒞𑒧𑒞𑒧𑒲 𑒮𑒢 𑒥𑒴𑒗𑒱𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒰। 𑒮𑒥𑒯𑒏-𑒮𑒦 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒞𑒥𑒰𑒯 𑒩𑒯𑒻𑒟।

𑒯𑒧𑒩 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒤𑒹𑒩𑒣𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪, 𑒏𑒯𑒪𑒱𑒌- "𑒤𑒹𑒩 𑒪𑒰𑒥𑒯 𑒋𑒏 𑒏𑒣 𑒔𑒰𑒯। 𑒂𑒃 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒢𑒲 𑒣𑒕𑒳𑒂 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒲।"

𑒤𑒹𑒩 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒏𑒣 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒠𑒻𑒞, 𑒤𑒳𑒮𑒤𑒳𑒮𑒰 𑒏𑓄 𑒏𑒯𑒪𑒏-

"𑒍𑒧𑓂𑒯𑒳𑒏𑒰 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣𑒧𑒹 𑒥𑒴𑒗𑒳 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮 𑒅𑒐𑒛𑓃𑒪 𑒁𑒕𑒱।"

𑒏𑒰𑒢 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒞𑒿 𑒩𑒯𑒥 𑒏𑒩𑒋। 𑒪𑒑𑒻𑒋 𑒞𑒹𑒿𑒋, 𑒠𑒳-𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒒𑒼𑓀𑒙 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒪𑒰 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒟𑒼𑒛𑓃-𑒟𑒼𑒛𑓃 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒮𑒿 𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮 𑒯𑒴𑒁 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒲।

𑒮𑒩𑒰𑒡𑒲 𑒩𑒼𑒖𑒏 𑒑𑒣 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒃। 𑒋𑒏 𑒣𑒝𑓂𑒛𑒏 𑒏𑒯𑒥 𑒩𑒯𑒃, '𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳 𑒦𑒼𑒖 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱।' 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒏 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒩𑒯𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒹 𑒁𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒍 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒖𑒹 '𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒏𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒔𑒱𑒞 𑒕𑒻 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢 𑒏𑒯𑒥?

"𑒋 𑒧𑒹 𑒏𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒔𑒱𑒞 𑒕𑒻.! 𑒮𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒢𑒻 𑒥𑒴𑒗𑒻 𑒕𑒱𑒌 𑒖𑒹 𑒢𑒱𑒩𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒡𑒢𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒞𑒱 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻। 𑒖𑒱𑒞𑒰𑒧 𑒑𑒳𑒛𑓃𑒰𑒿-𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒂 𑒧𑒳𑒃𑒪𑒰𑒧 𑒠𑒳𑒡𑒰-𑒐𑒰𑒢𑒰..!"

अपना जेना बुझि पड़ल, एक पड़ोसक कनीय-कनीय बात-बात लोक अपन बिनु चिन्हने कएल बातकेँ बाजि रहल अछि। मुदा बात तँ बनौल वातावरणक मजगूत रहस्यक लिखल रहिते अछि। वातावरणम लिखल छैक जे कोना बीजक गाछ-वृक्ष फुलि पड़ाइत रहैत अछि कियो। आइ काल्हि लोकेँ हमरा-सभहक बीच सामाजिक सम्बन्ध माटि भऽ रहल, मनुक्खक सामाजिकताक ह्रास भऽ रहल छै, अवसादसँ ग्रस्त मात्र बकीलो नहि, गाम-समाज सेहो भेल जा रहल अछि। की एहन स्थितिमे हमरा लोकनिक कर्त्तव्य किछु नहि? एखनो नहि जे एक-दोसराक बीच आपसी बैठ-उठ करा बढ़ाए, की हम सभ गप्पहुन किछु न सोची-विचारी। मुदा जे माहौल बनि गेल अछि ताहिमे अपनाकेँ सकदम नाखब उचित बुझि हम चुप रहलौं। कियो कनेक आय-ल माए-ल न वाय-ला।

एखनहि दोसर पड़ोसँ प्रश्न उठल-

"सनाधी रोजम जे धनक उत्ति होइ छै उ तँ सबहक नजरियर बरै छइ मुदा कर्मक नाउँयन जे गन-गन लाखाम हकाइ छै उ धनक उत्ति नहि न रोल? अहूठाम हमरा लोकनि किए न बजै छी- जिनाम गुरुँ-रोगा आ मुइलाम दुधा-रोगा..!"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.४.उमेश मण्डलक ५ टा कथा- कथा-४ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

<u>विदेहक लेखकक आर्काइव रचना आ अध्ययन आर्काइव समीक्षकक समीक्षा सीरीज</u>मे अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

<u>Videha_01_09_2016</u>

२. जगदानन्द झा "मनु"क "मातिक वासन"पर शम्भु सौरभक टिप्पणी

<u>VIDEHA_353</u>

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिनगीक मोल" आ अध्ययन शम्भु सौरभक टिप्पणी

<u>VIDEHA_354</u>

ऐ शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गणमान्य कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ५-५ टा कथा आर्काइव कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल

५.नन्द विलास राय

६.जगदीश प्रसाद मण्डल

१.दुर्गानन्द मण्डल

२.नागानन्द मण्डल

ई अंकमे प्रस्तुत अछि उमेश मण्डलक ६ टा कथा, जाहिपर हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक


उमेश मण्डलकर पाँचटा कथा

कथा ४

लोक बताह अछि

बुझिते छिऐ चाहक दोकानपर कोना गपकेँ मात्र चलै हरिक हरी नहिए। एक-पर-एक समीक्षक-आलोचक कि टिप्पणीकार, उपस्थित नहि छथि। जेना चाह अछि पानि न नहि अछिए।

चाहक दोकानपर किछु-ने-किछु समीक्षा-आलोचना होइते अछि। आइयो सएह भेल। उपस्थित की भेल से कहै छी, मुदा पहिनेँ अपन एक शुभचिन्तक कर बात सुना दैत छी।

शुभचिन्तक बेसी काल बजैत रहै छथि जे वर्तमानमे बेसी लोकक मानसिक स्थिति ठीक नहि अछि। तँ ओना करिकऽ देखब तँ बुझि पड़त पागल लोक बेसी अछि। हँ, पहिने पागल जकरा सामान्य

𑒍𑒩𑒣𑒢 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒍𑒏𑒩 𑒯𑒪𑒏𑒣𑒢 𑒢𑒱𑒠𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒪𑒱𑒁 𑒣𑒛𑓃𑒞।

𑒂𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒯𑒥 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒰𑒑𑒪𑒣𑒢 𑒢𑒱𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒥 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒟𑒼𑒛𑓃 𑒕𑒲, 𑒄 𑒩𑒰𑒿𑒔𑒲-𑒏𑒰𑒿𑒏𑒏 𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰𑒧 𑒁𑒕𑒱। 𑒢𑒯𑒱, 𑒞𑒿 𑒣𑒰𑒑𑒪𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒩𑒣𑒢 𑒢𑒱𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒥 𑒞𑒿 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒞 𑒖𑒹 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒖𑒢𑒞𑒰-𑒮𑒿-𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒡𑒩𑒱𑒏 𑒖𑒱𑒧𑓂𑒧𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒰𑒩 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒂 𑒖𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒣𑒢, 𑒍𑒯𑒳𑒧 𑒣𑒑𑒪𑒣𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒐𑒪 𑒣𑒮𑒻𑒢 𑒖𑒰𑒃𑒞।

𑒯𑒿, 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒁𑒕𑒱𑒋। 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿𑒋 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒱𑒩𑒠𑒰𑒢𑒲𑒣𑒢 𑒢𑒱𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒞। 𑒯𑒪𑒰𑒿𑒏𑒱 𑒁𑒢𑒏𑒰 𑒠𑒼𑒐𑒲 𑒥𑒢𑒰𑒋𑒥 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒪𑒹𑒪 𑒂𑒮𑒰𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒿𑒋 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒿𑒔𑒰𑒋𑒪 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒃𑒯𑒲 𑒏𑒯𑒱 𑒥𑒿𑒔𑒰 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒲 𑒖𑒹, 𑒖𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒪𑓂𑒪𑒰𑒿𑒏 𑒕𑒱𑒋 𑒍𑒣𑒢 𑒁𑒢𑒹𑒩 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒏𑒟𑒲-𑒪𑒹 𑒧𑒑𑒖𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒥। 𑒐𑒰𑒋𑒞 𑒖𑒹 𑒖𑒹 𑒏𑒩𑒲। 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒕𑒻𑒟।

𑒂𑒥 𑒂𑒅 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣𑒣𑒩। 𑒯𑒱𑒢𑒮𑒩 𑒖𑒐𑒢 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒲 𑒧𑒯𑒹𑒬𑒖𑒲 𑒂 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒯𑒼𑒙 𑒙𑒼𑒏 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒢।

𑒧𑒯𑒹𑒬𑒖𑒲𑒏 𑒏𑒯𑒢𑒰𑒧 𑒩𑒯𑒻𑒢, 𑒞𑒲𑒢 𑒏𑒱𑒪𑒼 𑒔𑒰𑒅𑒩 𑒂 𑒠𑒴 𑒏𑒱𑒪𑒼 𑒑𑒯𑒴𑒧 𑒖𑒹 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒤𑓂𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒂𑒏𑒱 𑒏𑒧 𑒠𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒠𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒹 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒰𑒯𑒱𑒪 𑒥𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒰𑒨, 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒏𑒧𑒰𑒋𑒪 𑒦𑒹𑒙𑒻, 𑒣𑒳𑒚𑒫𑒻𑒪 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒧𑒹𑒯𑒢𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒻, 𑒧𑒰𑒩 𑒣𑒹𑒙𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒔𑒻𑒢 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒋 𑒍 𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒏𑒩𑒞। 𑒖𑒐𑒢 𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒞 𑒞𑒿 𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒯𑒋𑒞?

𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒏𑒯𑒥 𑒩𑒯𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒏𑒼𑒜𑓃𑒱-𑒏𑒰𑒯𑒱𑒪 𑒥𑒢𑒥𑒋 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒰𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒮𑒪𑒧𑒹, 𑒁𑒢𑒰𑒖 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒢𑓂𑒡 𑒠𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒻, 𑒞𑒿𑒋 𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒿𑒙𑒱𑒋 𑒠𑒹𑒥 𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒴𑒗𑒪𑒏।

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒻𑒮𑒋 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒣𑒪𑒢 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒑𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒯𑒰𑒟𑒧 𑒡𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒣𑒲𑒥𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒾𑓀। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒢𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰𑒧 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏 𑒑𑒣 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒖𑒐𑒢 𑒠𑒮 𑒒𑒼𑓀𑒙 𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒪𑒾𑓀 𑒏𑒱 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪-

"𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒲𑒪 𑒡𑒰𑒢-𑒑𑒯𑒴𑒧𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒲। 𑒍𑒧𑓂𑒯𑒳𑒏𑒰 𑒧𑒾𑒮𑒧-𑒠𑒹 𑒮𑒳𑒩𑒥𑒰 𑒏𑒯𑒱𑒌 𑒖 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒐𑒢 𑒂𑒢𑓂𑒯𑒩-𑒥𑒱𑒯𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒁𑒥𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱।"

𑒧𑒯𑓀𑒟𑒖𑒲 𑒥𑒛𑓃-𑒑𑒳𑒛𑓃𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒟𑒱𑒋। 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒯𑒩𑓀𑒑। 𑒩𑒰𑒖𑒧 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢, 𑒖𑒧𑒲𑒢𑒠𑒰𑒩 𑒪𑒼𑒏, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒏𑒪𑒐𑒰𑒃𑒋 𑒮𑒦 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒏𑒰𑒮𑒲𑒧 𑒏𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒐𑒢 𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒟 𑒍 𑒯𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒣। 𑒧𑒯𑓀𑒟𑒖𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒧𑒾𑒮𑒧 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑𑒏 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒰𑒪𑓂𑒯𑒢𑒲 𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒋, 𑒞𑒏𑒞𑒢 𑒮𑒰𑒃𑒥𑒼।"

𑒞𑒰𑒿𑒏𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒂 𑒢 𑒞𑒰𑒏𑒢, '𑒞𑒰𑒏𑒞𑒢' 𑒥𑒖𑒪𑒰 𑒧𑒯𑓀𑒟𑒖𑒲। 𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒧𑒯𑓀𑒟𑒖𑒲𑒏 𑒧𑒢𑒧 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒲 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒍𑒮𑒢𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒢। 𑒍𑒢𑒰, 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏𑒿 𑒍𑒮𑒢𑒰-𑒍𑒮𑒢𑒰𑒏𑓄 𑒐𑒰𑒃𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒪𑒪 𑒍𑒮𑒰𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒋 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒯𑓀𑒟𑒖𑒲 𑒮𑒦 𑒞𑒰𑒿𑒏𑒢𑒏𑒿 '𑒞𑒰𑒏𑒞𑒢' 𑒧𑒰𑒢 𑒞𑒰𑒏𑒞𑒢 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱𑒢, 𑒋𑒏𑒢𑒳𑒣𑒰 𑒩𑒯𑒢 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒍𑒯𑒢 𑒏𑒟𑒲𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒥। 𑒧𑒯𑓀𑒟𑒖𑒲 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒂𑒢𑓂𑒯𑒩-𑒥𑒱𑒯𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒱 𑒣𑒰𑒢𑒱-𑒣𑒰𑒟𑒩 𑒂𑒏𑒱 𑒑𑒳𑒧𑒏𑒧-𑒁𑒢𑒞𑒰𑒪𑒢 𑒖 𑒁𑒥𑒻-𑒏 𑒯𑒾 𑒋𑒥 𑒏𑒩𑒢𑒰। 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒦𑒏𑒿 𑒕𑒰𑒛𑓃𑒴। 𑒁𑒐𑒻𑒢 𑒖 𑒑𑒣 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑒻𑒣𑒢 𑒂𑒍।"

"𑒏𑒲 𑒑𑒣 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱?" 𑒯𑒧 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒨𑒻𑒢।

𑒣𑒰𑒃 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒋𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱, 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒍𑓀 𑒏𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒥, 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰 𑒢 𑒕𑒪𑒱𑒌𑒢। 𑒍𑒢𑒰, 𑒍 𑒥𑒯𑒢𑒰-𑒧𑒰𑒯𑒢𑒰 𑒂 𑒪𑒧𑓂𑒣𑒰-𑒏𑒣𑒙𑒰𑒮𑒿 𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒮𑒠𑒵𑒬 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒖𑒯𑒢 𑒪𑒰𑒪 𑒙𑒳𑒯𑒙𑒳𑒯 𑒥𑒯𑒢𑒰 𑒣𑒯𑒢 𑒑𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰

गप्पसँ (थोड़ेक मधिम रंगक एकरंगा कपड़ा पहिरने रहैथ। ओ महात्माजी विश्राम बजबाक उपक्रम कलैन कि दुर्गाबाबू टोकैत अपन बात बाजए चाहला। ओ हमरा नीक नहि बुझि पड़ल। मना करैत दुर्गाबाबूकेँ कहलयैन-

"दुर्गाबाबू, महात्माजी जे बाजए चाहै छैथ से सुनि लिअ् तखन बाजब।"

महेशजीक चेहरा देखैत, मोन शान्त करैत महात्माजी खूब गम्भीर भऽ बजला-

"ओ जे कहि रहला हेन, अहाँ सभ कहि रहला हुँ। ओँह्ह पी, सरकारक घरम अनाज दुह्ह हेतै गँ हाऽ। देखै छी जे प्रत्येक थानाम लाखाक गाड़ी-घोड़ा सेहो रहल अछि। कहाँ एका नेताकेँ ममता छी। देशक धन माटि हऽ रहल अछि किने। असलम मनुक्खकेँ कहिल बनबैक पनियास छी अनाज हेबा। हाय, जखन बैसल-बैसल पेट हेतै गँ लोक काढ़ि हेब करत ना।"

आब अहाँ एना नहि सोचए लागब जे पेट हेतब मात्र मनुक्खक उद्देश्य थोड़े छी? नहि छी, मुदा ओहि ओहि फेनम पहुँचल जगह पनक गप हएत। अखन अपन सबहक बीचक बात रहल अछि। महेशजीक चेहरापर जेना खुशी छिटकए लगलैन। हुनका बुझि पड़लैन जे हमर विचार उपर रहल।

महात्माजीक विचारसँ स्पष्ट हएय गेल जे कहैत गरीब लोकक महात्मा छैथ। मन गँ रहल किछु कहि सकलैन। मुदा गप्प विश्राम एकागान, जनु हुनका महात्माजीक गप्पव नहि साहलैन, बाजए चाहला। महेशजी हुनका टोकए चाहलैन, मुदा गप्प विश्राम अपन महेशकेँ टोकैत बजलौं-

"𑒔𑒰𑒯 𑒣𑒲𑒥𑒻𑒏 𑒖𑒑𑒯 𑒕𑒲। 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒿 𑒍 𑒥𑒰𑒖𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒪𑒱𑒨𑒾𑒢।"

𑒍𑒃 𑒥𑒏𑒲𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒢𑒰 𑒂𑒑𑒰 𑒮𑒯 𑒩𑒙𑒪𑒻𑒢, 𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰𑒖𑒲 𑒠𑒱𑒮 𑒧𑒳𑒐𑒰𑒞𑒱𑒥 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰𑒖𑒲, 𑒏𑒼𑒢 𑒋𑒯𑒢 𑒣𑒢𑒱𑒥𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒼𑒢 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒣 𑒁𑒕𑒱 𑒖 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒥𑒙𑒰-𑒣𑒼𑒞𑒰 𑒪 𑒖𑒧𑒰 𑒏𑒩𑒱𑒏𑓄 𑒩𑒐𑒢 𑒢𑒃 𑒕𑒟𑒱 𑒂𑒏𑒱 𑒩𑒐𑒹𑒪 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒁𑒣𑒮𑒱𑒨𑒰𑒿𑒞 𑒢𑒃 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒯𑒰𑒿 𑒞𑒏 𑒏𑒱 𑒢𑒲𑒏-𑒥𑒖𑒰𑒋 𑒏𑒱 𑒥𑒖𑒰𑒋-𑒢𑒲𑒏, 𑒮𑒠𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒪 𑒥𑒳𑒡𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒞𑒹𑒚𑒰𑒧 𑒏𑒱𑒋 𑒢 𑒯𑒧 𑒮𑒯 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒣𑒥𑒻 𑒕𑒲 𑒖 𑒍𑒯𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒰𑒠𑒱𑒪 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒯𑒋𑒞?"

𑒯𑒧 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒧𑒲𑒔𑒲𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒳𑒩𑒳𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒢𑒱𑒥𑒰𑒢 𑒧𑒼𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒋 𑒪𑒑𑒪। 𑒔𑒰𑒯 𑒞𑒿 𑒏𑒐𑒢 𑒢 𑒐𑒞𑒧 𑒦𑓄 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒕𑒪।

𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰𑒖𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒰𑒪𑒱𑒨 𑒏𑒱 𑒧𑒯𑒹𑒬𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒂𑒏𑒱 𑒏𑒲 𑒮𑒰𑒃𑒥, 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒧𑒹 𑒬𑓂𑒪𑒼𑒏-𑒣𑒩-𑒬𑓂𑒪𑒼𑒏 𑒥𑒰𑒖𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰।

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒑𑒱𑒪𑒰𑒮𑒙𑒰 𑒩𑒯𑒋, 𑒏𑒯𑒥 𑒏𑒞𑒾𑓀 𑒔𑒰𑒯 𑒮𑒹𑒚 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒑𑒱𑒪𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒹𑓀𑒔𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒣𑒰𑒢 𑒠𑒱𑒮 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒾𑓀।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

३.७.उमेश मण्डलक ७ टा कथा- कथा-७ अध्ययन सम्पादकीय समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक आलोचना रचना आ अध्ययन आलोचना समीक्षकक समीक्षा सीरीजमे अखन धरि अहाँ पढ़लौं-

१. कामिनीक पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२. जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक

टिप्पणी

VIDEHA_353

३. मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओहिपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

ए शृंखलामे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गणमान्य कथाकारसँ हुनका नजरिमे हुनकर अपन सर्वश्रेष्ठ ५-५ टा कथा आमंत्रित कएल गेल अछि। कथाकार लोकनि छथि:-

१.कपिलेश्वर राउत

२.उमेश मण्डल

३.राम विलास साहु

४.राजदेव मण्डल

५.नन्द विलास राय

६.जगदीश प्रसाद मण्डल

७.दुर्गानन्द मण्डल

८.रामानन्द मण्डल

ए अंकमे प्रस्तुत अछि उमेश मण्डलक ५ टा कथा, जाहिपर हमर समीक्षा अंग्रेजीमे सम्पादकीय पृष्ठ पर अछि। - सम्पादक

𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒏𑒩 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰

𑒏𑒟𑒰 𑓑

𑒥𑒾𑒛𑓃𑒪 𑒠𑒩𑒥𑒰𑒩

𑒮𑒰𑒿𑒗𑒳 𑒣𑒯𑒩। 𑒙𑒯𑒪𑒻-𑒥𑒳𑒪𑒻𑒪 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪 𑒩𑒯𑒲। 𑒍𑒢𑒰, 𑒒𑒴𑒧𑒞𑒲𑒏 𑒥𑒹𑒩 𑒩𑒯𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒧𑒰𑒢 𑒙𑒯𑒻𑒪-𑒥𑒳𑒪𑒱 𑒏𑓄 𑒂𑒣𑒮 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒲। 𑒋𑒏𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒧𑒼𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒰𑒞𑒰 𑒩𑒯𑒋 𑒂 𑒠𑒰𑒯𑒱𑒢 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒧𑒼𑒥𑒰𑒃𑒪। 𑒯𑒪𑒰𑒿𑒏𑒱 𑒧𑒹𑒒 𑒋𑒏𑓂𑒏𑒼𑒥𑒹𑒩 𑒧𑒱𑒮𑒱𑒨𑒰𑒨𑒼 𑒢𑒻 𑒏𑒹𑒪𑒏। 𑒕𑒰𑒞𑒰 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒧𑒼𑒛𑓃𑒪 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒔𑒪𑒪 𑒩𑒯𑒲 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒧𑒼𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒪। 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒮𑒿 𑒠𑒰𑒯𑒱𑒢 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒯𑒹𑒛𑓃-𑒥𑒠𑒪 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒪𑒯𑒩𑒪 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒲। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒯𑒩𑒪 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒩𑒯𑒲 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒛𑓃𑒏𑒏 𑒏𑒰𑒞𑒏 𑒐𑒰𑒧 𑒙𑒢𑒙𑒢𑒰𑒃𑒞 𑒥𑓀𑒑𑒏 𑒥𑒰𑒪𑒲𑒏 𑒚𑒰𑒿𑒮 𑒪𑒰𑒐𑒰 𑒫𑒵𑒏𑓂𑒭 𑓐।𑓘 𑒏𑒃𑒨 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒂𑒐𑒱𑒩 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒾𑒏𑒰 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒕𑒻 𑒏𑒱𑒢𑒹, 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒰𑒣 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒩𑒐𑒻𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒲 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒻, 𑒕𑒥 𑒏𑒩𑒃। 𑒍𑒢𑒰, 𑒏𑒐𑒢𑒰𑒏𑒰𑒪 𑒙𑒢𑒙𑒢𑒲𑒏 𑒚𑒰𑒿𑒮 𑒁𑒢𑒮𑒰𑒯𑒰𑒿𑒞 𑒮𑒯𑒰 𑒪𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪।

𑒕𑒰𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒮𑒿 𑒠𑒰𑒯𑒱𑒢 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒲 𑒏𑒱 𑒣𑒐𑒩 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒅𑒚𑒪, 𑒁𑒩𑒩 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒯𑒰𑒟 𑒪𑒑𑒰 𑒠𑒱𑒫𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒾𑓀। 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒢𑒱, 𑒥𑓀𑒑𑒏 𑒙𑒢𑒙𑒢𑒲 𑒂𑒏𑒱 𑒁𑒖𑒫𑒰𑒃𑒪 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹𑒿, 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰-𑒣𑒯𑒩𑒲 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒦𑒹𑒪। 𑒧𑒢 𑒖𑒢𑒰 𑒛𑒼𑒪𑒰𑒋 𑒪𑒑𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒫𑒱𑒦𑓂𑒩𑒧 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒧𑒢 𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒚𑒹𑒩 𑒏𑒩𑒪𑒏-

"बिसरि गेलौं, कोना माथपर गहुमक मोटरीकेँ एक हाथे पकड़ने दोसर हाथमे छत्ता लऽ कऽ मिलपर पिसबैले जाइत रही..? एखन तँ मात्र साइ ग्रामक मोबाइल अछि।"

बाल्यपनमे, यएह बरसाती समय छलैक। रस्ता-पेरा बूझु चलै जोग नहि छल। थाल-कीच जे रहै से तँ रहबे करैक जे सड़कक कटाइन-खोंरा एक-दोसरकेँ काटि देने छल। मोन, कटल सड़क रहल एक-टोलक लोकसँ दोसर टोलक लोक प्राय: कटल-हटल रहै छल। एक टोलसँ दोसर टोल जाएब कठिन छलैक। मुदा खोंहिसा तँ एक्को रंगक होइत नहि अछि। जिनगीसँ जोड़ल खोंहिसकेँ कोना धरानी पूरबए पड़ैत छैक। आइ ने पीच सड़क बनल अछि...। मन सुड़कानि लेलक। असथिर भेल। चालिस गोटी आएल।

देस ठाम जखन आगू लहरलौं कि बूझि पड़ल किया दु बकरी अपनामे गप-सप्प करैत आगूए बढ़ि रहल अछि। आगू बढ़ब बूझि धियान हुनका सबहक गपपर केन्द्रित भेल। ठीना, लगल बालीसँ चिन्ह गेलिऐ जे धीनू आ सुन्दर छिया। अपन पाछू-पाछू रही, तँए टोकब उचित नहि बूझि सुनए लगलौं। सुन्दर बाजल-

"धीनू, जहियासँ गंगाक गाड़ी चलबए लगलौं तहियासँ बूझु जे...।"

सुन्दरकेँ टोकैत बिचहिमे धीनू बाजल-

"थम्ह, कनी लगही करए दे।"

सड़कक कातमे ठाढ़ भऽ धीनू पेशाब करए लगल। ओंगला गप सुनैक जिज्ञासामे कि की, हमहूँ अपन ठाम ठाढ़ कऽ लेलौं। अन्हार रहब करैक। मुदा अन्हराएल रहलौं नहि, मोबाइल टनटनाए लगल। मोबाइलकेँ सैलेन्ट कोना करिऐ, पहिलके स्थान छल। निसिरह करैत पुछलयेन-

"कहू।"

पत्नी बजली-

"स्टेनिंग नाक कहै छी कि नार्मल नाक?"

कहलयैन-

"आबिय गेल छी।"

कहब ठीक नहैन। अस्पताल बढ़ि गेल छल। ताबत सुनैना आ धीनू याछू घूमि आगुम ठाढ़ भेल। अस्पताल गेल दुनू सँ किया ने बूझि सकल छल जे हमहूँ याछूओ-याछू ठिले। मुदा मावाइलयन जे बजलौं गेल बालीकेँ अकानि दुनू लोक बूझि गेल जे नमस छी। कावा अस्पताल किओ ने गेलो मुदा देखैवलाकेँ ते देखल जाइओ किन। संयोगसँ दुनू लोक ऐंकी सुनम बाजल-

"नमस?"

बजलौं-

"हँ।"

धीनू बाजल-

"चलू धीनू लोक संग गप-सप्प करैत चली।"

पूछलिऐ-

"सुनैना की बजै छला?"

सुनैना अकचकाइत बाजल-

"नहि बूझलौं, राय साहेब।"

तैबीच धीनू मान याटि देलकै-

"कहै जे छलही, गंगवाक झाड़नी-दा।"

तहि विभ्रम कहलिऐ-

"हँ, हँ सुनैना। की कहै छलहक सेहो कहक आ चलवा कनहा।"

सुनन्द बाजल-

"नञि नमश राय, अहूँकेँ नै बूझल अछि किए त गंगा हैयाम आइ साल-आठ महिनासँ उनटनी करै छै। दिल्लीसँ आब गाम आबि गाड़ी चलबै छै। सएह धीनू रायकेँ कहै छलिऐन त दखियो गंगा कहलक हमि बनसाल गाड़ी नै चलत, ताब कोना दासन काज चलत ला।"

सुनन्दक बाप जहिना बुझ हs सुनै छलौं तहिना ख़ौतकाल आना बुझ नहि गेलौं। मनमे गंगाक बात सह त आएल से नै एब कएल मुदा सुनन्दक जिनगी सहो आगुएम छल। यएह बात छीड़ जञ्मे एाए-सँ गामक डाइ यान तक साल-आठटा कटाइन नहि छलै। आ तञ्मे सुनन्द हमि बनसाल माछ मानि गुजर करै छल। मुदा आब जहिना धीब बनल तहिना सुनन्द ञाइनन हs गेल अछि। बबाना न डाक युजिगन अछि आ न लुनिगन। लs दs कs खाली गाड़ी चलबs अबै छइ। गाड़ी-घाड़ाक लौंनाक हिसाब-किताब साधारण लोकक हिसाबसँ बनौल नहि अछि...। एकाएक मन तमतमाएल। राय! शहरमे न एक्काटा लुनिक बलेँ लोक जीब लौत अछि। मुदा से गाममे ख़ौत हएत। गाममे एक लुनिक बलेँ जीब कठिनाह अछि। गाम नै गाम छै। डठाम नै चौदहो हनान खलल जाइए।

मन हल सुनन्दकेँ कहिऐ- सुनन्द, हमना-तना सन लोक लल दु-तीन-चारि तनहक लुनिक खगता अछि। मुदा लगल दासन मन छीहो कहब कलक त- कोना नीका निबान समय याबिय कs कहलायन नीक हाइए, नहि नै 'प्रबचन' बनि कि कोना कम नीक-नीक निबान डंघनाएल अछि...। नैए, बुझ नहलौं। मुदा तञि विभ्रम सुनन्दक

मोबाइल टनटनेलै, गंगाक कॉल देख सुनन्द सर बागकेँ बिसैन बाजल-

"हँ गंगा। ऐया?"

"सुनन्द, आना गाँ रहि बनसाग मना कए देन छलियहु मुदा काल्हि काशी जाइक अछि, छुट्टी छहु गाँ चलहु।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.६.कुमार मनोज कश्यप- १ टा लघुकथा- श्रद्धा-सम्मान

कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

श्रद्धा-सम्मान

धनानंद मुंबईमे सी० ए० डी० एन० मिश्रा नाम सँ सुप्रतिष्ठित आ बस विह्वलतन...... चाहे ओ व्यावसायिक क्षेत्र हो, सामाजिक

सहयोग हो आ कि सांस्कृतिक मंच.... हुनकर उपस्थिति सदा एँ निश्चय बुझू। गामक लोक बाहरो मे रहितो.... आ ओ मुंबइ जा कऽ हुनका सँ बिनु भेंट-घाँट कने आपस आबि जाइ से नीक नहि.... बाहरो सऽ बैद्य बाबू जे अहुबाक एकानक बलाश बऽ छलाह हमरा। हाल सऽ पता बुझि सीधे मुंबई सऽ अंधेरी हुनकर ऑफिस पहुँचलहुँ। बड़ अन्दर-बाहर सुसज्जित ऑफिस। मुदा हमर ध्यान आकृष्ट कएलक सामने देबाल पर हुनकर पिता क मुस्कियाइत बैद्य फोटो पर लटकल माला! मोन धिया जकाँ नाचि गेल असाध्य कष्ट मे हुनकर कुहरि-कुहरि कऽ काटल अंत समय! .... बड सान!! .....दिन-राति दर्द सँ चिकरैत!!! घर बाहक गप्पाशप्प जे उम्हर हुलकिया देब कठिनाह। देख-रेख लै राखल नर्स अपन नाक-मुँह बान्हि निन्नक सुरतिया संकि कहुना अपन कर्तव्य पूरा करय। एकरा बाद थोड़बक काल शांत.... फेर वैह क्रम! सएह एतेक पर अंक बाप.... बूढ़ा लेल भगवानक घर मे जगह क अकाल पड़ि गेल छनि!...... एहन नारकीय कष्ट सऽ उठा लेथिन से नहि!! .... नहि जानि कोन जनमक पापक भोग भोगा रहल छथिन......!!!

" कक्का कोन ध्यान मे चलि गेलहुँ? बाबा सेहो रहल अछि! "

" नहि... नहि! बाबूक समाधल उलिका कने आँखि लागि गेल। "

" चलू उना पर स्नान-भोजन कऽ आराम करब। "

याङ्ख-याङ्ख विद्या ह्लाज्ञीन ह्रम ७क वन ह्रन उा ह्लाटा ञा उाह्रियन लटकल माला क दखन नही। मान थीन नहिं ऱs नह्रल ङ्कला।

-**कुमान मनाज कथ्य, सम्प्रति:** रान्ना सनकान क उय-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावन-4, टाज्ज्य-5, किदनज्ज्ञी नगन पूर्व (दिल्ली हाट क सामन), नज्ज्ञी दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ज्ज्ञी-मल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पन पठाउ।**

३.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- अपन नचित नचना



𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒔𑒱𑒏𑒰 𑒩𑒔𑒢𑒰

𑒥𑒔𑓂𑒔𑒹𑒮𑒿 𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒩𑒰𑒨𑒧𑒹 𑒂𑒢𑒮𑒿 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒑𑒳𑒝𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰 𑒩𑒯𑒪𑒻𑒢। 𑒍𑒢𑒰, 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒋 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒑𑒳𑒝 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒱𑒞 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨 𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳𑒋 𑒩𑒰𑒨𑒙𑒰 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒻𑒢 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒕𑒳-𑒢𑒹-𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒖𑒑𑒖𑒱𑒂𑒩 𑒢𑒃 𑒦𑓄 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒃 𑒚𑒰𑒿 𑒠𑒥-𑒠𑒥 𑒮𑒢 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒫𑒰 𑒁𑒡𑒏𑒔𑓂𑒔𑒳 𑒦𑓄 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒏𑒱𑒕𑒳𑒋 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒪𑒼𑒏 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻𑒟 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒾𑒢 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒤𑒳𑒪𑒰𑒢 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒮𑒰𑒪𑒼 𑒦𑒩𑒱 𑒤𑒳𑒪𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻 𑒕𑒻𑒢।

𑒥𑒔𑓂𑒔𑒹𑒮𑒿 𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒩𑒰𑒨𑒧𑒹, 𑒖𑒐𑒢 𑒣𑒰𑒿𑒔-𑒕𑒁 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒩𑒯𑒻𑒟, 𑒂𑒢 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒮𑒿 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒳𑒝 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒤𑒳𑒙𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒍 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒾𑒂 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒂𑒏𑒰𑒮𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒖 𑒮𑒳𑒢𑒱, 𑒂𑒏𑒰𑒮𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒖𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒠𑒴𑒢𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒪 𑒂𑒫𑒰𑒖, 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒢 𑒑𑒳𑒢𑒑𑒳𑒢𑒰𑒋 𑒪𑒑𑒻𑒋, 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒼𑒣𑒲𑒨𑒢 𑒏𑒪𑒧𑒮𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒋 𑒪𑒑𑒻𑒋, 𑒏𑒾𑒂 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒳𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒔𑒰𑒏𑒣𑒩 𑒑𑒜𑓃𑒪 𑒥𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒰𑒙𑒲-𑒑𑒱𑒪𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒑𑒢𑒠𑒰-𑒧𑒰𑒙𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒦𑒩𑒱 𑒑𑒜𑓃𑒢 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒻𑒋, 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒱𑒪𑒰𑒮𑒏 𑒁𑒏𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒜𑓃𑒋 𑒪𑒑𑒻𑒋 𑒂𑒠𑒱-𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒃 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒯𑒙𑒱 𑒖𑒐𑒢 𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒩𑒰𑒨 𑒣𑒰𑒿𑒔-𑒕𑒁 𑒥𑒩𑓂𑒐𑒏 𑒕𑒪𑒰, 𑒞𑒐𑒢 𑒕𑒼𑒙-𑒕𑒼𑒙 𑒑𑒰𑒕 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒻𑒏 𑒥𑒰𑒙 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒪𑒻𑒢।

𑒣𑓂𑒩𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒧𑒹𑒿 𑒑𑒖𑒥 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒼-𑒪𑒰𑒐𑒼 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒖𑒲𑒫-𑒖𑒢𑓂𑒞𑒳𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒑𑒰𑒕-𑒥𑒱𑒩𑒲𑒕 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒋𑒏-𑒠𑒼𑒮𑒩𑒮𑒿 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒮𑒦 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒋𑒏-𑒋𑒏 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒧𑒹 𑒮𑒦 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒼- 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒢𑒳𑒂 𑒂 𑒑𑒳𑒝 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒕𑒲, 𑒞𑒿𑒋 𑒠𑒱𑒮 𑒠𑒹𑒐𑒥 𑒧𑒹𑒿 𑒂𑒢 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒋𑒞। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒍𑒏𑒩 𑒬𑒏𑒪-𑒮𑒴𑒩𑒞𑒱 𑒠𑒱𑒮 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒾 𑒧𑒹𑒿 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒼 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒮𑒦 𑒯𑒋𑒞। 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒮𑒰𑒜𑒹 𑒂𑒚 𑒤𑒲𑒙𑒏 𑒪𑒧𑓂𑒥𑒰𑒃 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻 𑒧𑒹𑒿 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒤𑒲𑒙𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒧, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰-𑒥𑒱𑒪𑒰𑒃, 𑒑𑒰𑒋-𑒧𑒯𑒲𑓀𑒮 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒠𑒱𑒮 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻 𑒧𑒹𑒿 𑒮𑒦 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒢 𑒁𑒖𑒥 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐 𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒩𑒰𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒡𑒴𑒢 𑒮𑒫𑒰𑒩 𑒯𑒋𑒪𑒻𑒢।

𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒩𑒰𑒨 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒹𑒧 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒧𑒳𑒯𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰 𑒖𑒹 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒧𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐 𑒕𑒲, 𑒍 𑒁𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒪𑒃𑒋। 𑒍 𑒧𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒿𑒯𑒱-𑒥𑒪𑒏 𑒂𑒑𑒰𑒧 𑒥𑒜𑒻𑒋। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒪𑒃𑒋 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒢𑒱𑒩𑒧𑒥𑒻𑒞 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑒻𑒋। 𑒏𑒯𑒥 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒂 𑒁𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪? 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒦𑒹𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒱𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒥𑒢𑒰 𑒔𑒪𑒥 𑒂 𑒁𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒦𑒹𑒪, 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒣𑒩 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒥𑒱𑒞𑒰𑒋𑒥। 𑒖𑒢𑒰, 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲 𑒂 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒰 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲, 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒨 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒢।

𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒐𑒹𑒞𑒲-𑒣𑒟𑒰𑒩𑒲 𑒯𑒳𑒁 𑒏𑒱 𑒧𑒰𑒪-𑒖𑒰𑒪 𑒂𑒏𑒱 𑒑𑒰𑒕𑒲-𑒏𑒪𑒧, 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒥𑒻 𑒕𑒲, 𑒪𑒑𑒥𑒻 𑒕𑒲, 𑒮𑒹 𑒧𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒢 𑒍𑒏𑒩 𑒑𑒳𑒝-𑒠𑒼𑒭 𑒠𑒹𑒐 𑒏𑓄, 𑒧𑒰𑒢 𑒔𑒴𑒢𑒱-𑒔𑒴𑒢𑒱𑒏𑓄, 𑒥𑒴𑒗𑒱-𑒮𑒴𑒗𑒱𑒏𑓄। 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒵𑒞𑒱𑒧 𑒧𑒹𑒿 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒣𑒮𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒢𑒲𑒏-𑒥𑒹𑒖𑒰𑒋𑒮𑒿 𑒦𑒩𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒋, 𑒔𑒴𑒢𑒱-𑒔𑒴𑒢𑒱𑒏𑓄 𑒂𑒢𑒥 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒥𑒰𑒞 𑒧𑒹𑒿 𑒁𑒕𑒱𑒋 𑒖𑒹 𑒋𑒏-𑒠𑒱𑒮 𑒫𑒹𑒠𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝𑒏𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒔𑒰𑒩𑓂𑒫𑒰𑒏 𑒮𑒢 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒬𑒲 𑒮𑒦 𑒦𑒹𑒪𑒰।

दीनबन्धु राइक विषयमे बहुत तँ नइ बूझल अछि, मुदा ई बूझल अछि, मानि ई देखै छी ताइमे दीनबन्धु राय समाजमे असगर देख पड़ै छथि। ओना, दीनबन्धु राइक विषयमे बसी ओ दुआर बसी नइ बूझल अछि ई आइसँ पचास बरख पूर्वसँ ओ समाजक संग जुड़ल रहला। अपन तँ तीन साल पहिने कौलेज छोड़ि निकलब कलौं अछि, जेबीच खा-पथानक आतिकँ मात्र छलौं अछि। तँए करब ई माटिया छवि ललौं, सहा बात नहियेँ अछि। खा-पथानक तनमे माटि अछि किन ई रंग-रंगक गुप्ता आ नुया बनौनहि अछि। ओकना नएह न छवि सकैए ई खाम कुय खनि, यानि निकालि मनुआ बीआ पटा, मनुआक खरी बटाइ करैए आ काँटू-पूफी लऽ कऽ घर अबैए। यएह तँ भ्रमक दुर्गेत अछि। जकर गिनतिया मान मनुआक गिनती, अन्नमे नहि अछि। पैछला साल मारका अन्न मानल गेल अछि, तँए मनुआ सर अन्नसँ महिय किए न हुअए मुदा मारका अन्न करबैए..! यएह तँ दुनियाँक खेल छी, मारका मही अछि आ मडीका मार बनि गेल अछि।

ओना, दीनबन्धु राइक चर्च, आन-आनक मुहेँ ई सुनैत एलौं हेन ताइमे गाम हुनकर धाख मनमे पकैए नर अछि ई जखन हुनका लग जाएब तखन की पूछबैन, आगुमे प्रश्न बनि ठाढ़ रऽ जाइए। मुदा आइ, जहिना काना जिज्ञासाक मलक मनमे मलकैए आ तखन ई मनक उत्सुकता जगैए तहिना अपनामे एला। मन मनकेँ धिनकाए लगल ई मनुक्ख तँ मनुक्ख लग बैस दुनियाँ-जहानक निचान नहि करत तँ शासन क करत। ओहुम एहन धाखा नइ हुअए ई सरसँ ई नमहर जीव अछि स करए, तखन गदुल पंछी आ हाथी जानवर छोड़ि शासन कइय क सकैए। तइसँ थोड़ काज हएत।

..गन-गन मनकेँ समगम करैत निचान कनिकs दीनबन्धु राय उOाम लिदा रहलौं। ७का७क मनम उOल ज अयन ग़ऽऽस वर्खक उमन अछि आ उ मान दीनबन्धु राय आऽऽसँ गीस साल यहिन कौलज छाउला यछाऽऽग गामम किसानीकेँ अंगीकान करैत अयन माननीय मूल्यक निर्वहन करैत जीवन-यायन कs नहला अछि। कखना कs मन याछुउ ससैन जा७ आ कखना कs आगुउ ससन७ लग७।
मन रहलैँ आगु याछु ससनल मूदा जहिना आगु मुहेँ निचान चलि नहल छल गहिना उगे। संग-संग चलल। दीनबन्धु राऽऽक दनवज्ञासँ जखन कनी याछु७ नही कि नजैन आगु वढि दीनबन्धु रायगन यउ गेल। दीनबन्धु राय अयन दनवज्ञाक आगुम सिंगहान-हूलक गाछकेँ दख नहल छला। दखलयैन ज गाछकेँ राय दखवा करैत छैथ आ (Oान विजका-विजका गुनगुनाकs वजवा करैथ, 'हाय ने प्रकृति, ककना रानम हूलवै७ आ ककना साँसम। ककना वानह वज दिनक टहटहौआ नौदम गेँ ककना वानह वज गुय-गुय अन्हान नाति.! हूलक गाछयन सँ ७का७क दीनबन्धु राऽऽक नजैन हमनायन यउलैन। उ Oकमकला। Oकमकाऽऽक कानध छलैन मनकेँ मानि जा७व ज रनिसक ऽऽी अयन गामक अछि, गेँ७ गौं७ रहला। मूदा नीक जकाँ चीह्न नहि नहलिउ हना। अयन मन ऽऽीहा कहैन ज गखन गौंआँ कना रहल? गौंआँ गेँ उ रहल ज संग मिलि चल७। दनवज्ञाक आगुम दीनबन्धु राय लग यहुँच वजलौं-
"राय साहैव, गोउ लगै छी।"
गोउ लागवकेँ अयना निचान अयन वूमि नहल छलौं ज अयना सरहक ज यानिवानिक-सामाजिक ववहान अछि गऽऽ अनुकूल वजलौं। मूदा दीनबन्धु राय अयना मन वूमि नहल छला ज गोउ लगैक

मात्र एहन संग-संग चलब। मनमे एलैँ जे दीनबन्धु रायकेँ उत्तर दैथ् मुदा वैवाहिक यज्ञ मजगुत छैक। आसिनवाद तइसँ पहिने बजला-
"पहिने बेटीयन बैसह। पछाति सभ किछु होइ।"
ओना, मनमे एल जे कहितैन, राय, आब तँ दुनियाँक चलैन भऽ गेल अछि, बेटीक प्रथा तँ पुरान पड़ि गेल। मुदा लगले अपन मन बाकलक जे ओहना तँ सम्बन्ध हेबाक सकैत जे बकरी-बकरीक दुनियाँ, मात्र सामाजिक, साम्प्रदायिक, जातीय इत्यादि, लगभग बैस विचार-विमर्श करी। तँए बुझि नहि नीक बुझलौं। तैबीच मनमे ओकरा विचार अपन उठैक गेल। उठल इहो जे जखन नय-सम्यक काम शुरू होएत तखन तेहन प्रश्न रायक आगुमे नहि रहैन, जकरा पूरबे आ कते मास दिनसँ बसी समय लगतैन। अपना तँ कनियेँ कालक पछाति, जखन बजैसँ मन अकछैतैन तँ बजब कहता जे 'दासन दिन ल नहि देहक', अपना न सम्बन्ध-सूत्र बनि जाएत। जइसँ आनाजाहीक दुआर खुजि जाएत।
बैसल दीनबन्धु राय बजला-
"बौआ, अनविद्वान तँ नहि मुदा अर्धविद्वान तँ जरूर छी, तँए पहिने अपन परिचय दऽ दाए।"
तैबीच आँगनसँ कुसुमांगिनी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचल बेटीयन चाह नाखि आगुमे राखि दऽ गेलैन। पछातिक राखल दीनबन्धु राय देखलैन जरूर मुदा तैयो आगू बजला-
"बौआ, अपना सभक जे नैतिक यज्ञ अछि, ओ जे नूतन अछि जे ताना चाह पीआएब हमरा बनजित कनक चाही, मुदा परिवेश ओहन बनि गेल अछि जे ओ अपमानजनक मानल जाएत।"
दीनबन्धु रायक विचार जना ओहि-द कयानमे लागल पहिना मन

मनमना गेल। अपन किछु ई दुआरि नञि बाजी जे आगुम एला पछाति ई बाजब जे चाह नञि पीबै छी, से तँ सरासर झूठ हएत। तँए, पहिने दीनबन्धु रायकेँ चाह हाथमे लिअ देलिऐन, पछाति अपन लेलौं। दीनबन्धु राय बजला-

"अप्पन परिचय पहिने दिअ, बौआ।"

परिचय दितिऐन, मुदा की परिचय दितिऐन..! अग-दिगम पड़ि गेलौं। अपन मनकेँ सक्कत कए विचारलौं जे जहिना कौलेजमे शिक्षकक आगू कोना प्रश्ने रखै छलौं आकि उत्तर दइ छलिऐन तहिना पुछबो करबैन आ उत्तरो देबैन। बजलौं-

"राय साहेब, तीन साल पहिने बी.ए. पास कए कौलेज छोड़लौं। कौलेज छोड़ैत-छोड़ैत मनमे उठि गेल जे नोकरी जीवन बान्हल जीवन होइए। जे जीवन शुरू करब ओहो जीवन अन्त तक बनल रहत। मुदा मनक मालिक मनुक्ख तँ से नहि छी, कखनो अपन रूप बदैल जीवन बदैल सकैए। तखन तँ जीवनक संग मनक मगता हएत। मनक मगताक रगताक राग दए थोड़ उठि सकैए, ओ तँ तन-तन गलि जाएत। तँए गाममे रहि स्वनिर्मित रचना अपन जकाँ करए चाहै छी।"

हमर बात सुनि दीनबन्धु रायक मन ओहिना अलिसा गेलैन जेना कोनो सागक पात आकि फूल-पत्ती, गाछसँ हटला पछाति अलिसा जाइए। किछु पुछैसँ पहिने दीनबन्धु राय हियासि-हियासि हमर चेहरा दिस देखए लगला। तैबीच अपन मन कहि देलक जे जखन अखन तकक जीवनमे दीनबन्धु रायसँ कोनो सम्बन्ध-सरोकार नञि रहल अछि, तखन तँ जहिना हमरा प्रति ओ निर्मल-निश्छल छैथ तहिना तँ हमहूँ छीहे। तँइसँ जीवनक भूमि सहिट अछिए। अपन

चिन्ताकेँ ओहिना बनौने रहलौं जेना कौलेजमे शिक्षकक आगू बनौने रहैत छलौं।

मध्ययुगीन कवि जकाँ नख-सिख रूप सदा देखलौं आ सिख-नख रूप सदा देखब कएलौं, तेँ जीवनक सिख-नख आकि नख-सिख परख पेलौं वा नहि। मुदा दीनबन्धु राय से नहि, ओ वर्तमानक वर्तमान रूप देखलैन। दीनबन्धु राय बजला-

"बौआ, अपने जकाँ की कहलहक?"

नीक जकाँ किछु बूझल रहैत तखन ने, से तँ नीक जकाँ किछु बूझल छल नहि, कहुना माँकेँ बजलौं-

"राय साहेब, अपनेसँ हटि कनेक इएह कारण अछि।"

सब बात सुनि दीनबन्धु राय बजला-

"बौआ, हरि अनन्त हरि कथा जकाँ दुनियाँ अनन्त अछि। दुनियाँमे सात अरब मनुक्खक शकल-टा नहि, सात अरब रंगक बुद्धि-विवेक सेहो छैक। एहन अथाह दुनियाँमे के कते अपनाकेँ थाहि सकत, इएह भेल मनुक्खक बुद्धिक बुद्धिमता।"

दीनबन्धु रायक विचार सुनि जेना मनक भाव भूमि बढ़ए लगल। संक्रमित होइत भाव-भूमि देख मन चहकि उठल-

"राय साहेब, अपने रचना?"

दीनबन्धु राय बजला-

"बचपनमे की देखै छलिऐक, मनमे कोना कथा-पिहानीक चित्र छल, आ समाजमे ओहिसँ विचित्र रूप देखै छलिऐक, एहन परिस्थितिमे अपन मन ने स्वनिर्मित रास्ता बनौत।"

नशा-पान केलाक पछाति जेना मनक विचार उगडुम कएने घूमए लगैए तहिना अपनो मनमे भेल। दीनबन्धु रायक विचारकेँ

अंगीकार करैत बजलौं-

"मुद्दा?"

दीनबन्धु राय बजला-

"मनुक्ख स्वतंत्र प्राणी छी। तँए स्वतंत्र जीवन बना दुनियाँमे किछु करब अछि। बस, एतबा।"

(07 अगस्त 2022)

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाई 1947 ईस्वीमे भेलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क अहर्ता पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ रुचि पूर्वक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासमे हिनका बाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पुरजोर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे बीतए लगलाह। 2001 ईस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्रममे एला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हिनक रचना प्रकाशित हुअए लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यिक मौलिक विधामे हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता ओ रचना धर्मिताक

लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत कएल गेल अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी' व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर अवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साउथ दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योगदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल समिति द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु ग्राम्या-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य आ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022'

रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु,

11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कनिता संग्रह। 13. यंवनटी- एकांकी संवयन। 14. मिथिलाक वटी, 15. कम्प्रामाइज, 16. ममलिया विआह, 17. नम्राकन उकौग, 18. स्वयंनन- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उठान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीनन-मनध, 23. जीनन संघर्ष, 24. नै धाउ, 25. वटकी वहिन, 26. शादनक आO अह्वान, 27. सधवा-विधवा, 28. QO गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत वँचलौं, 30. लहसन, 31. यंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुविता, 34. माटयन, 35. संकल्प, 36. अन्तिम उध, 37. कुष्ठा- उयन्यास। 38. ययस्विनी- प्रवन्ध-निवन्ध-समालावना। 39. कल्याधी, 40. सगमाउ, 41. समभौता, 42. तामक तमघैल, 43. वीनांगना- एकांकी। 44. तनगन, 45. वजन्धा-वुसन्धा- वीहन कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. नटनी खठ- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सगरैया यारवैन, 51. गामक शकल-सूनत, 52. अयन मन अयन धन, 53. समनथाइक रूग, 54. अयुयन-वीनान, 55. वाल गोयाल, 56. रकमाउ, 57. उलवा चाउन, 58. यगमाउ, 59. गद्दनगन हाथ, 60. लजविजी, 61. उकटू समय, 62. मधुमाछी, 63. यसनाक धनम, 64. गुठ- खुद्दीक नाटी, 65. हलहान, 66. खसौन गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुरविन्धक, 69. गाछयन सँ खसला, 70. उरियाएल गाम, 71. गुलती दास, 72. मुठियाएल घन, 73. वीनांगना, 74. स्मृति शघ, 75. वटीक यैनूख, 76. क्रान्तियाग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. यैंतीस साल यछुआ गेलौं, 79. दाहनी हाक, 80. सुरिमानी जिनगी, 81. दखल दिन, 82. गयक यियाहुल लाक, 83. दिनालीक दीय, 84. अयन गाम, 85. खिलताउ रूमि, 86. चितनक शिकान,

87. चौनस खणक चौनस उयज, 88. समयसँ यह्नि चण किसान, 89. रौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. यसनाक माल, 92. कृषियाग, 93. हानल वरुना जीणल नुय, 94. नहे जाकन यनिनान, 95. कणकि नंग कर्मकि संग, 96. गामक सूनण वदेल गेल, 97. अन्हिम यनीजा, 98. घनक खर्च, 99. नीक Oकान Oकलौं, 100. जीननक कर्म जीननक मर्म, 101. संचनध, 102. रनि मन काज, 103. आउल आशा चलि गेल, 104. जीनन दान णथा 105. अयन साणी- लघु कथा संग्रह।

उनवनायन अयन

मंगब editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउ।**

३.८.जगदीश प्रसाद मण्डल- मा७यन (धानानाह्कि उयन्यास)



जगदीश प्रसाद मण्डल

माएपन (धारावाहिक उपन्यास)

दोसर पतन

मौसी ठाम कुशेसर नुकला नहि। सय-सय कोसक पछातिए मान मौसासँ विदा लेला पछाति, कुशेसर जहिना गेल छला तहिना लगले अपन गाम घूमियाँ गेला। ठाम छी नहि बुझब जे कुशेसरकेँ मौस कि मौसीए आबि देलनि, नइ ते नहि कहलकैन। सर कहलकैन, मुदा काइल लोकक जीवन काजम पना झलि बह्रा जाइए जे अपन सुधि-बुधि सर बिसैन काजक संग दौड़ए लगैए। चारि-पाँच सालक कलकत्ता प्रवासक अनुभवी जीवन कुशेसरकेँ पना सिखा देने छलैन जे बुझि गेला जे मनुख सैकड़ा बहुतसँ बह्राएल अछि, मुदा गाए-महींस जकाँ ताती गनबैनम नहि लगल छै। कुशेसर नीक जकाँ बुझए लगल छैथ जे सङ्ख्या कि हजारो बाढ़ि-छकम मनुख बाढ़ल अछि मुदा ता अछि जीवनक क्रिया, बेवहार आ विचारमे। मुदा से अखन नहि, अखन एतब जे कुशेसर कौतुक हानि समय देख मान बीतक एक दिन, अपना गैयानीक संग परिवार-समाजसँ हँट कनैत, अपन अनुपस्थितिक हानि परिवार-समाजपर हेला पछाति

गाम छोड़ि बाहर जा।

बीच बजारमे, मात्र दसटा टोलक बजारक बीचमे, जखन कुशेसर पहुँचला तखन दसटाक कलकत्ता देखि-देखि अकानय लगलनि। लगलनि जाइत बुझि पड़लनि जे जहिना काठीमे चाउर भरल रहैत सुखल-दुखल अपाटन ना कोनो अपाटन किछु ने देखबामे आबैत मुदा तहिना कि धनबेसाक मुँह जहिना दोसरा मलीन बनौने रहैत तहिना कुशेसरक मनमे सेहो उठलनि। मनमे उठलनि जे जखन कमासुत बनि जन्म लेने छी तखन काजक कमी दुनियाँमे अछि। काजक कमी तँ ओकरा लेल अछि जे जीवनक भूख आकि भन्छलाहि स्त्रीगण जकाँ काजक टिप्पी दैत रहैत। मुदा जे काजक कोनो अपनाकेँ बूझैत, ओ अपन जीवनमे देख मानवक भूख देखैत। जखन मानवीय दृष्टिसँ दुनियाँ दिस तकैत तखन सौंस दुनियाँ एक रंग ने देखबामे आबैत लगै छथि।

कुशेसरक मनमे जहिना-जहिना एका-एकी प्रश्न सभ उठैत लगलनि तहिना खण्डन-मण्डन करैत जवाब सभ मनमे बिचरैत लगलनि जहिसँ गामक बजारक देखान ने भेलनि जे कते बजार करि गेल मात्र टपि गेलौं आ कते बाँकी अछि। देखक प्रति पहिल प्रश्न कुशेसरक मनमे उठलनि जे एकटा ओहन मनुक्खक स्थान कहियन बढ़ि भेल अछि जकरा ने नाम-गाम लिखल अबै छै आ ने साथ पक गेलल रहै छै। मनमे जहिना कुशेसरकेँ विस्मय भेलनि तहिना अपन जीवन-दशायन ग्लानियाँ भेल करैन मुदा अपन मन कहलकनि जे पहाड़ी छलाकाम गदहा-सवारी पाथर टूकड़ाक स्थान लादि जखन अपन कर्तव्य बिनु परिश्रमक निमाहि सकैत तखन देखन किछु छी तँ मनुक्खक बच्चा छी किने। मनुक्ख ने मानुक परम सुखद सन

स्मानी युनुष वनला। गैOाम दबन किछु छी गँ मनुख छी किना। ज ज दखग गकना सिखबैग चलबै ज स्लाँ-स्लाँ छी आ ओकन काज स्लाँ Oाम स्तै छै, जखन यनिवय आ याग दुनु संग दैग चलबै गखन न दबना दबग जकाँ बनैग जाओग.! कुशेसनक मन मानि गेलैन ज दबन जहिना दह धूनैल गैयान स्ल अछि गहिना कवीन वावा जकाँ गहन धूनियाँ वना दब ज विन् तन्त्रिय-गनाह्म सौंस दुनियाँक गैलैग नहगा। कवीन वावायन नजैन यहुँच कुशेसनक मन विहुसलैना। लगल दासन प्रश्न कुशेसनक मनम उOलैन ज दबनकँ कान काज कनैक जागान लगाओब? अखन गँ साह्मअना अनाउीओ अछि। काज गँ ढना यसनल छी। जहिना अयन गौंडा आ यडासिया किया छागी यनक निक्षा चलबैओ, उOाम विन् कलकग्गा नहनिहान वुझिग छैथ ज अयना उOाम गीन यहिया साइकिल निक्षा स्तैओ गइसँ स्त्रि कलकग्गाम अछि, अयना उOामक जहिना घाडा गाउी, टमटम, स्तैओ ज घाडाक संग गाउी चलैओ गहिना कलकग्गाम मनुख निक्षा अछि। ज छागी वलँ खीचैओ। गँ किया उन-उन, मान यनिवान-यनिवानम सीक-यटैयन टीनम यानि स्नि उघि-उघि गीन मँजिला मकान गक यहुँचबै छैथ। गँ किया दाकान-दौउीम गँ किया ग्राइबट गोदाम गँ किया सनकानी गोदामम वाना उघै छैथ। किछु ओहना लाक गँ छथिओ ज हिह्व माटन कानखानासँ लऽ कऽ ओननजी वैटनी-कानखाना गकक विमनीसँ लऽ कऽ [illegible]हिसक हिसाब-वानी कनैक काज सहा कनिग छैथ। गैसंग ओहना लाक गँ छथिय ज यइवां-उधान कनि कऽ अयन स्नाँप्र कामावानी छैथ। नंग-विनंगक काज कलकग्गाम यसनल अछि। यओह न हओग ज आम कीनैकाल ना काना खवाक नम्फ् कीनै काल सुआदक अहुआ। स्लायन यहिन लाक उकना खा

कऽ जहिना पहिने लोक तहिना नै हएत। अपन इलाकाक लोक सभ काज करै छैथ। जँ सम्भव हएत तँ पहिने काजक रंग-ढंग देखनकेँ बूझा देबै जँ मन मानि जेतै तँ शासन दिस संग लगा काजपर पहुँचा देबै। शुरूमे जहिना सभकेँ किछु समय, किछु मेहनति आ किछु खर्च बेसी होइ छै तहिना नै देखनाकेँ हएत। अपन जे काज अछि, सरकारी अन्नक गोदाममे मटियागिरी, ई गामक हिसाबसँ थोड़ेक अवैज्ञानिक अछि, किए तँ गाममे बोझ (वजनदार बस्तु) उठबैक बलेँ माथ आ कन्हापर लऽ कऽ चलैक अछि। नाना-थानक बोझ आ जारना-काठीक बोझ लोक माथपर लऽ कऽ चलै छैथ। तैसंग लकड़ी वा बाँस आकि काठ आन वस्तु कान्हपर उठै छैथ, मुदा अन्नक गोदामक काज तँ पीठपर बोरा उठा। उठबैक अछि...।
उनटा-पुनटा कुशेसरक मन अपन काजपर थलैन तँ भान भेलैन जे अपना तँ ईहिना छलौं जहिना अखन देखन अछि। जहिना अपना देहमे ताकत अछि तहिना नै देखनाक देहमे छै, तखन किए नै काज कऽ सकैए।
जखन देखनक काज करै दिस कुशेसरक नजैर बढ़लैन कि ढलानपर जहिना गाड़ीक गति तेज होइ जाइ छै तहिना होलैन। होलैन ई जे गोदामक काजक मजूरी काना कि समयपर बाँटल अछि जे एता घण्टा काज करू तकर बदला एते मजूरी देब। गोदामक काज तँ ठेका अछि जेकरा बानाक हिसाबसँ, माल उतरबामे शासन ठीक करैक, मजूरी होइ छै। जखन कमाइक बढ़ोत्तरी देखत तखन नै ठेके दिस मन बढ़तै, किए तँ अखन तक जे जीवन देखनक रहल अछि ई कम आमदनीवला परिवारक रहल अछि। जेकरा समयक संग परिवारकेँ चलेब सेहो कि हजारो गीतक-गाँठ अछि जकरा

खालब कि पातर कनी रीनहगन अछिए...। निर्णय करैत कृषाणक मनमे जहिना अन्हार-बादलमे पहुँचला पछाड़ल कारी उपयोगी नक्षत्र देखन मनमे हर्षपर जागि जाइए तहिना कृषाणकेँ जगलैन। जइसँ कृषाणक मन मानि गेलैन जे देवन किछु छी तँ मनुक्खक बझा छी किने। मनुख जहिना पहाड़पर बहैए आ पाथरा ताउए, तहिना ने जलमग्न समुद्र उपेक्षित अछि।! पहाड़-समुद्रक बीच अबिते कृषाणक मन हलैस कऽ नव मूर्ति जकाँ कलशलैन- 'जखन अपन तपन छी तखन तँ हल अपन जकाँ देवनकेँ तपन बनाएब।' कृषाणक मनक निदान आगा आगू निर्णय करैत बढ़लैन जे जखन काजक उनियान हुअ जाएत तखन बाँकी नहत खाइ-पीबै आ नहैक उनियान। खाइ-पीबैपर नजैर पहुँचत कृषाणक मनमे उठल जे कलकत्ता कलपन OIC अछि, उकर कलकेँ पकैड़ अपन कलाकारी करब। जहिना अपन सुपक्ष समय हलापन मान काज करैक अनुकूल समय हुन काजो करै छी आ उकडू समयमे मान प्रतिकूल समयमे, अनामो करै छी तहिना देवनाकेँ सिखा देब। सिखा की देब जे संग मिलि करैत-करैत अपन अपस्य बनि जाएत। मुदा से तँ हएत तखन जखन अपन काजक संग नहत। आन काजक तँ आन नुपा आ बनहाना तँ अछिए। हल तँ एतब ने जे देवनकेँ काजक प्रति आकर्षित करैत कहबै, 'बौआ, जखन गामसँ संगे कलकत्ता अबैकाल मौसा जहिना साल्हअना पाहन हान हमना सुमसा देलैन तहिना ने अपना आ पाना निमाहैक छह। जहिना अपन उमना अछि आ शरीरक काँइा अछि तहिना ने पाना छह, तखन एक नंग काज किए ने दुनू हाँइ कऽ सकै छी। एत तँ गोदामक काजमे अछिए जे जहिना गोदामक मैनजर साहैब सहमलु छैथ तहिना

𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒏𑒧𑒲 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒹𑒮𑓀𑒑 𑒥𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒑𑒱𑒢𑒞𑒲𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞, 𑒯𑒼𑒙𑒪 𑒂𑒏𑒱 𑒏𑒰𑒙𑒪 𑒥𑒰𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒖𑒹 𑒁𑒢𑓂𑒢 𑒐𑒮𑒻 𑒕𑒻 𑒍 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒩𑒏𑒿 𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞। 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒃𑒞 𑒞𑒿 𑒯𑒥 𑒏𑒩𑒞 𑒖𑒹 𑒐𑒰𑒃𑒏 𑒍𑒢𑒱𑒨𑒰𑒢 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞। 𑒁𑒦𑒰𑒫𑒧 𑒣𑒪𑒻𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏𑒿 𑒖𑒐𑒢 𑒣𑒙𑒏 𑒦𑒴𑒐 𑒧𑒩𑒰𑒃𑒏 𑒥𑒢𑒯𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒞𑒐𑒢 𑒢 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒢𑒧 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏𑒿 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒯𑒼𑒃𑒏 𑒂𑒬𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒖𑒑𑒻 𑒕𑒻। 𑒂𑒬𑒹 𑒢 𑒂𑒮 𑒪𑒑𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒧𑒴𑒪𑒰𑒿𑒏 𑒏𑒠𑒧-𑒏𑒠𑒧 𑒏𑒠𑒧𑒏 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒞𑒰𑒢𑒱𑒧 𑒧𑒴𑒪𑒥𑒃 𑒪𑒑𑒻𑒃।

..𑒢𑒱𑒥𑒙𑒻𑒞 𑒏𑒳𑒬𑒹𑒮𑒢𑒏 𑒧𑒢𑒧 𑒅𑒚𑒪 𑒖𑒹 𑒖𑒰𑒥 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒰𑒮𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒑𑒞 𑒞𑒰𑒡𑒹𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒬𑒰𑒮𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒰 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒞? 𑒖𑒰𑒡𑒹𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒬𑒰𑒮𑒱𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒞𑒰𑒡𑒹𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒴𑒗𑒞 𑒂 𑒖𑒰𑒥 𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒿 𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒢𑒧𑓂𑒯𑒰𑒨𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒢𑒞 𑒞𑒰𑒡𑒹𑒢 𑒢𑒻𑒞𑒱𑒏 𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒢𑒞 𑒂 𑒖𑒰𑒥 𑒢𑒻𑒞𑒱𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒢𑒞 𑒞𑒰𑒡𑒹𑒢 𑒢𑒲𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒴𑒗𑒞? 𑒏𑒳𑒬𑒹𑒮𑒢𑒏 𑒧𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒢𑒱 𑒣𑒻𑒢𑒥𑒪𑒰 𑒣𑒬𑒳 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰, 𑒖𑒹 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒬𑒳𑒩𑒴𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒁𑒐𑒢𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒐𑒢 𑒏𑒱 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏𑒿 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒧 𑒞𑒞𑓂𑒫 (𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡𑒱𑒏) 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻, 𑒞𑒐𑒢 𑒖𑒥 𑒃𑒞 𑒁𑒢𑒳𑒬𑒰𑒮𑒱𑒞 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒿 𑒥𑒢𑒰 𑒩𑒐𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒞, (𑒍𑒚𑒰𑒧 𑒁𑒢𑒢𑒳𑒂 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒞 𑒂𑒢𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱) 𑒞𑒐𑒢 𑒞𑒿 𑒧𑒢𑒳𑒐 𑒧𑒢𑒳𑒐 𑒕𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒱𑒢, 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒮𑒦 𑒞𑒞𑓂𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒕𑒻𑒢..! 𑒍𑒢𑒰, 𑒧𑒢𑒳𑒏𑓂𑒐𑒏 𑒠𑒳-𑒠𑒱𑒬𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒞𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒰𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒰 𑒢𑒱𑒔𑒰𑒢𑒏𑒿 𑒮𑒲𑒐-𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒔𑒪𑒥, 𑒂 𑒠𑒰𑒮𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒑𑒞𑒱𑒏𑒿 𑒁𑒿𑒏𑒻𑒞 𑒍𑒯𑒢 𑒢𑒰𑒧𑓂𑒯𑒰 𑒞𑒏𑒹𑒪 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒢, 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧 𑒦𑒿𑒙 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒢। 𑒖𑒐𑒢 𑒃𑒯𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧 𑒅𑒚𑒻𑒞 𑒞𑒐𑒢 𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒣𑒾𑒢𑒱𑒯𑒰𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒢𑓂𑒡𑒰𑒞𑒰 𑒥𑒢𑒱 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒢𑓂𑒡𑒰𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒙 𑒣𑒏𑒛𑒻 𑒕𑒻𑒟। 𑒏𑒳𑒬𑒹𑒮𑒢𑒏 𑒧𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒖𑒹 𑒠𑒥𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏

जिज्ञासासँ कलकत्ता जाइक संगी बनैल गेयान छल ओ जनुन संगे-संग जीवनक पथक पथिक बनि पथे-पथ चलब कएल। जखन हुनक ओतऽ बरद जकाँ मनुक्खा संग मिल चलब शुरु कएल तखन हालत हुनीक जीवनमे हरियरपन ऐब कएल। ..कुशेसरक मनक बिसवास जना खिल उठलैन। खिलल जीवनक गरियर दृष्टि पड़लैन। दृष्टि पड़िते जीवन ले रोजगारक महत्व बुझलैन।

रोजगारपर दृष्टि पड़िते कुशेसरक मनमे दुनूक रोजगार ऐलैन। कुशेसरक अपन मन देखल दृष्टिक अनुकूल मानि गेलैन जे कलकत्ता कलकत्ता छी, ओ मुम्बई आकि दिल्ली नहि छी। ओना, कहैल जहिना कलकत्ता महानगर छी तहिना मुम्बई आ दिल्ली सेहो छीहे, मुदा रोजगारक जे सुविधा कलकत्तामे अछि ओ थोड़े मुम्बई आकि दिल्लीमे अछि। जेँ समयमे अपन रोजगार बनाएब तेँ समयक उपयोग जेँ काजमे करब तेँ रोजगारक संग किछु आमदनीओ बढ़त। रोजगारक जे सन्धी कलकत्तामे अछि ओ आन महानगरमे नहियेँ अछि। कुशेसरक मनमे उठलैन जे जहिना अपन दिनक रोजगार दोकान-दौड़ीमे करै छी तहिना दुनूकेँ करैत रहब। रहब की, जखन संग मिलि दुनू काज करत तखन ने जहिना जीवनी बरदक संग सीखल अनाड़िया बरद ओहिना काज करए लगैए जेना हुनक बरद करैए। जहिना अपन अपन हाथ-पैरक कमाइसँ अपना आ परिवारकेँ सीमायन आनि ठाढ़ करैत तहिना ने दुनू अपन परिवारो आ अपनाकेँ सीमायन ठाढ़ करत।

रोजगारपर, दुनूक रोजगारपर आबि कुशेसर अपन जीवन-चर्याक उपयोग बुझि दुनूक जीवनक उपयोगकेँ ओरिआब नीक बुझलैन। मात्र एते जे दिनुका रोजगार दोकान-दौड़ीमे आ रातुका जहिना अपन देखा

मोटिया उकठामे बेस बरा करबा करै छी आ खबा करै छी तहिना देहनाक रहै छै। एल तँ दोसरोँ उगानदे रहुआ। राजनक बड़ यान-मान जीवनक नाव यान रहै छै कुशेसनक मन रहैक कऽ आनासयन उलैन। आनासयन अविग मनमे उठलैन ज कग गोन राड़-किनाया दऽ नहि छैथ तँ कग गोन अपन छाट-माट मुड्डी-मायठी बरा सहा नहिग छैथ मुदा अपन दुनूक अनुकूल डाहुन डाकाहूग नहि अछि। तहुमे जखन बड़ बाजारमे अपन दनरंगिया धर्मशाला अछिए तखन कहुना-न-कहुना देहनाक अँटाबस रहैय जाइत। एल तँ बनखा-यानि आ शीत-गौदसँ अपन नजा करब अछि। जहिना गरमी मासमे गरमीसँ बँचैल छाहैनिक खगता रहै छै तहिना यानि-बुन्नी आ जाड़-ठाढ़क सहा अछि।

उठामे दनरंगिया धर्मशालाक चर्च अछि। बड़ बजारक महल्लावला सब अपन दसगरदा काज करैल उकटा धर्मशाला बनौन छला। जहिमे करीब साए आदमी सुति-बैस सकै छी। जाबे तक धर्मशालाक मुँह-कान चिक्कन रहल मान जाबे तक धर्मशाला दसगरदा काज करै-जोकर रहल, ताबे तक महल्लाक लोक अपन उपयोग कलैन। दसगरदा काज तँ सब दिन नहियेँ रहै छै तैँ बाँकी दिन खालीए रहै छला। मिथिलांचलक लोक जखन कलकत्ता जाइ छला आ बड़ बाजारमे उद्या काज करै छला, तखन खाली बूमि डाही धर्मशालामे रहै छला। डाहीमे जहिना रहैक सुविधा तहिना राजन बनबैक संग पानियाँ-पैखानाक सुविधा छलैहे। धर्मशाला तँ बनल मुदा डौसुका जकाँ साए बर्खक डौरुदा लऽ कऽ जन्म नहि रन छल, तैँ किछु दिनक पछाइत मकानमे (धर्मशालामे) टाट-टूट, टूटब-फूटब शुरू एल जहिसँ महल्लावला अपन काज (पैघ काज) मे धर्मशालाक उपयोग

कम करैत गेला। तेँसंग होइत रहल जे बाजारक चलती नहल महल्लावला सभ दालमा-गलमा धर्मशाला बना लेलनि आ ओहो धर्मशालाकेँ साह्यअना छोड़ि देलनि, तँए धर्मशाला दहरंगिया धर्मशाला छी। अपना ढ़ंगक जे उदा काज करैवला लोक छथि ओ ओहो धर्मशालामे रहबो करै छथि काजो करै छथि आ भजन-कीर्तनक संग अपन गामा-घरक गप-सप्प करिते छथि। ताबे नहि, तेँसंग सौनाउ सभा जकाँ ओहो धर्मशालासँ साल-साल साउ-पचास कथा-कुटुमैती सेहो होइत रहल अछि।

अपन गामक सीमायन पहुँचैत-पहुँचैत कुशेसरक मन मानि गेलनि जे देवनकेँ कलकत्ता लऽ गेल छोड़ि तँ अपना लाएक हुब करत जे उकटा खेगल पनिबानक मान अपन अंगक पनिबानक, जिनगी उगला बाढ़ पकैत लगा। गाममे काज करैछान तँ अछि मुदा काज नहि छइ। ओना, जँ समुचित ढंगक जीवन रहत तँ काजक कमी सेहो नहियेँ रहत। तहुमे मिथिलांचलमे। ढ़ाम सालक तीन मौसम स्पष्ट रूपसँ अपन चारि-चारि मासक विभाजन कएने अछि। किछु रौलाबूड़ आ अन्ना-गौमन, अधिक दिनक खती होइत तँ किछु कमी दिनक होइत अछि। जहिसँ चारि मासक बीच सउँपा तंगक अन्ना, हुला-हुला आ तीमना-तरकारीक खती अछि, जइसँ उपजसँ धनमण्डल रहइ सकैत। ओना, मौसमकेँ प्रतिकूल बनबैक सेहो अनेको कारण अछि जे मौसमकेँ कम-बेसी सेहो कएने देने। जेना अधिक पानि-बुन्नी रहत बाढ़ि अबैत तहिना कम रहत वा नहि रहत रौदी सेहो होइत अछि, जइसँ सुप्रबन्ध खतीक सुगमा सेहो विखण्डित होइत अछि। तहिना अधिक जाड़क ओछ-पाला खसल रहलक (उपजक) क्षति सेहो होइत अछि जइसँ किसानी जीवन क्षतिग्रस्त

होइत अछि। खाइत त अछि, एना नै अछिए जे मनुख नै मनुख
छथिया जिनका अपन बुधिक संग विवेक आ कर्मक संग हाथ-
पएर छैन्ह, नैए कोना-ने-कोना गुजर अपन जीवन यापन करैत रहै-
छथि, नैए करब त नोकसान (हानि) नहि होइ छैन सेहो बात
नहियेँ अछि, सेहो होइत छैन। मुदा सभ कथुक बावजूद
मिथिलांचलक गामा आ गामक आबादिया अखनो ओहिना अछि
जहिना अपनेसँ चलिया आबि रहल अछि आ अपन जीवनधाराक
परिचय सेहो दैत अछि।

कुशेसरक नवीन दरबारसँ हटि अपन गाम-समाजक संग
दुनियाँ-दारी दिस बढ़लैन। दुनियाँक बीच मध्य अपन गाम-
समाजकेँ देख कुशेसरक मन विहुँसि गेलैन। विहुँसि एहि गेलैन जे
जहिना मनुख तहिना ने गामा समाज दुनियाँक बीच विषुवत रेखा
जकाँ बीचमे ०८ अछि। जहिना विषुवत रेखाकेँ उत्तर वा दक्षिण
रहने, पूब-पश्चिम विषुवता रेखा आ कर्का-मकर अछिए, ओहिना
दुनियाँक जिनगीमे बदलाव अबिते अछि। ओना, बदलाव सौंसे
दुनियाँक मान पुन दुनियाँक होइए मुदा से होइए दुनू दिशामे।
जहिना आधाक उत्थान होइए तहिना आधाक पतन सेहो होइत
अछि। बहकीगर जीवनमे आ गाम-समाजक जीवनमे सेहो होइए।
मान एहि रहल जे बहकीगर जीवनमे जहिना स्थान रहन अस्थान
भटाइए, निर्दय रहन रहय भटाइए, सुचरित्र वा सुविचार बनन
कुचरित्र वा कुविचार भटाइए तहिना ने गामा-समाजमे, जे धनीक-
गरीबक बीच बँटल अछि, ताहूमे एकरूपता एन जहिना एकटाकेँ
ऊपर होइए नैँ दोसर अऊपर सेहो बनिग अछि..!

एकाएक कुशेसरक नवीन दरबारक जीवनक रानयन पहुँचलैन।

जीवनक मूल्य अपन वनौलासँ न वनैछ। जना कागज कागज छी। मुदा उऽऽयन शील-माहन लगिग उ नुयेआ वनि जाऽऽछ। दुनियाँ मानछ वा नहि मानछ मुदा अपन अपन्दनक मन गँ मानियँ लऽऽछ। यछहि मन न दुनियाँक मनक एक अंश-मन छी। समुहक नुयम निश्चयन हल आ वकतीगत नुयम वकतीयन हल ज निश्चमनक अंश हव कछल किन। यछहि मानव न अपन मानव मनक सीमा छी, जकना जानि-यहचानि जीवन धानछ कनैत वलैक अछि।

कुशेसनकँ गेला यछाऽऽत मान अपन मौसी-मौसा उOामसँ, जलसनी यति लग आवि चुयचाय O।८ हऽ गेली। जलसनीकँ, मान धनूषधानीक यत्नीकँ, हनक लगलैन ज दवन कलकत्ता जाछत, गामम नहि नहत। हनक मान हल उछन्दी सुनव, मुहाँ-मुहीं गय-सय्य नहि हल नहल।

यति लग O।८ जलसनीक मनम अनका साग-यीछाक जाल यसनल छलैह। जऽऽसँ शाक निवादसँ वाम्हिल छली। अनका नंगक लिवान, सौनक वनखा-यानिक वूलवूला जकाँ जलसनीक मनम कखना उOन आ कखना यानिक मटकासँ गँ कखना अपन जीवनक मटकासँ जहिना हूटछ गहिना हूटवा कनैत। गाऽऽयक आगु वा काना आन यालतु जानवनक वच्चाकँ आगुसँ लऽ गेन वा चलि गेन जहिना आँखिसँ नान खसवैत माछ तिनिआछ लगैछ गहिना जलसनीक मन सहा दवनकँ लगसँ हटैक वात सुनि तिनिआऽऽत नहैत। मुदा मुँह खालि जलसनीकँ तिनिछवाम (मान वजवाम) असाकर्ज हाऽऽत नहैत। असाकर्ज ऽऽी हाऽऽत नहैत ज जहिना अपन यति हला गहिना दवना आ कुशेसना न हल, गीनु वायुत युनखा-युनखी लिवान कलैन गऽऽम किछु वाजव उचित नहि हछत।

जखनी थोड़ बूझै छैथ जे जीवन की छी, दुनियाँ की छी, जइ दुनियाँमे जन्म भेल तही दुनियाँमे न जीवनक विकास अछि। साढ़े तीन हाथक अनका मनुक्खक दुनियाँ अनका नंगक अछिए। मातृ जौन पितृक बीचमे खाधि अछिए। बच्चाकेँ बन-बन भूख-पियास ल अन्न-पानि चाही। ओ तँ माइयसँ भेटैए, आ माइयाक मन बच्चाक जीवनक भोजन भरि समटा जाइ छैन, जइसँ बाहरी जीवन आ बाहरी दुनियाँ दिस नजैर बढ़ैत न छैन। आन-क माए जकाँ जखनियाक मनमे उठैन जे बच्चा (दादा) कलकत्ता जाएत, खाएत की? ओ थोड़ बूझै छली जे खाइयक जोगाड़मे दादा कलकत्ता जाएत। पत्नीकेँ आगूमे ठाढ़ देख धनुषधारी बजला-

"मन मानि किए आगूमे ठाढ़ छी।"

तइ समय धनुषधारी दादाक प्रवासक जिनगीपर विचार कऽ रहल छला जे गाममे दादा अपना लग रहैत, तँ मुहाँसँ कहि आ हाथो पकैड़ काजक लूरि-बुधि मात्र कलाक संग कलाकारी सिखबै छैत। कलकत्ता पलायन करा सीखत..? लगल अपन मन उत्तर देलकैन जे कुशेसरा तँ दादा जकाँ छल, पाँच साल कलकत्ता रहला भेलैए, कहुना सुन्दर घर बना लेलक, बहिनक विआह सम्हारि लेलक। आगू दिस बढ़ैत मात्र विचारक आगू, अपन मन धनुषधारीक उत्साहित भऽ गेलैन जे दादा कहुना भेल तँ उन्नैस-बीस बर्खक नौजवान भेल। आब दुधमुँहाँ बच्चा थोड़ रहल जे कतौ हेरा जाएत। तहूमे की कलकत्ताक लोक नहि बूझता जे मैथिली भाषी दादा छी तँए मिथिलांचलक बासन मैथिलसँ हँटि करा गाम-घरक हाँज लगबैत लग तक पहुँचा देताइ। जवान भेल, एकनाम तँ एत शक्ति अखन भेल छै जे देशक सीमाक संग दुनियाँक सीमाक भान सम्हारि सकैए,

अपना ले अपन की रहल। फूल सन हल्लुक जीवन रहल आ परिवारो सँ दूर कएल। बीचहि जलसनी बजली-

"जखनसँ एकटा बात सुनलौं तखनसँ मनमे उठा-बिठा लागि गेल अछि सएह पूछए एलौं हम।"

धनुषधारी बजला-

"की सुनलौं?"

जलसनी बजली-

"बौआ कलकत्ता जाएत।"

धनुषधारी बजला-

"हँ। अपन मन छै जे कलकत्ता कमाइ ले जाएब सँ हम थोड़े रोकबै। गामक लोक सभकेँ देखै छिऐ जे अमेरिका, इंग्लैंड, कहाँ-कहाँ ने कमाइ ले जाइ छैथ, तहिठाम कलकत्ता सँ सहज अपन घर रहल। जहियासँ बंगाल-बिहारक विभाजन रहल मात्र 1912 ईस्वीसँ, तहियासँ ओ शासन मात्र रहल। तइसँ पहिने सभ एक राजक वासी ने छलौं। सेहो ने बोलिया-बानी, चालिया-ढालि आ लीख-लिखिया सभ एकरंगाह अछि।"

पहीकाल दुनू सभ कुशेसनकेँ विदा करैत बापस पहुँचला। जहिना एकटा अढ़न सीखलासँ जे मनमे खुशी होइ छै तहिना दुनूक मनमे कलकत्ता प्रवासक खुशी छलइ। कलकत्ताक कते बात कुशेसनक मुहसँ बराबर सुनि चुकल छला। ईहो सुनि चुकल छल जे आजादीक समय मात्र 1947 ईस्वीमे कतेक गाम एहन बाँकी अछि, जइ गामक लोक कलकत्ता नइ जाइ छला सेहो गामा-गामक आ अपन बकरिगरा कुटुम-परिवारक लोक सभ रहैत करै छैथ..!

दुनूकेँ देखते अपन मनक बातकेँ कम करैत धनुषधारी बजला-

"बौआ, कहू कि जाइक विचार कहलहुँ। कलकत्ता जाइत पाहुन मन खुशी देखै छी आ माइयक मन खसल देखै छथिन तँए किए ने दुनू माए-बेटा मूँह-मिलानी करैत रहल।"

पहिनेकेँ बीचसँ हठात मान दिनक कलकत्ता जाइक विचारसँ, जलसनी थकथकली। थकथकली ऐ जे हम किछु लेलौं तँ माइय लेलौं किन मुदा पिता तँ बड़ छथिन। बड़ संग न अपन पत्नीना आ अपन कुल-मर्यादाकेँ जीआ कऽ नरखा.!

दिनक मनमे खुशीक लहरि छलैह। माएकेँ बौसैत बजला-

"माए, मन लागत तँ नहुँ नहुँ तँ चलि आएब। पहिल अपन न साग-पात करै छी। बूझिहेँ जे काल्हि कूटम जखनहि पाँच दिन ल गेल छलौं।"

दिनक वर्तेक कानमे छल जे जाहिना बच्चा लगसँ हटला पढ़ाइमे गाए ना आन पशुकेँ हाँकै छै आ कानि-खीज बिसैर पुनः अपन जीवन अनुकूल बना लइए पहिना माइयाकेँ रऽ जाएत।

बेटाक मूँहक हल्लुक मान साधारणे बात छै कि हानी, मुदा छै कि साँच, माइक मन एक कसौटीपर कसि एक नीक विसवास करै छथि..। जखन ऐ बूझब जे काल्हि बेटाकेँ दुकान लगौल जाइए स नहि। पहिना जँ बेटा माता-पिताक प्रति विसवासी छथि तँ किए आइक परिवेशमे जे माता-पिता खेतक बाप जकाँ बान-सात, गाछी-बिरछीमे रहैत-छिटैत नहि छथि? ई बीचमे एकटा आन प्रश्न अछि, ओ अछि समयानुसार परिवर्तनक, जाहिसँ विचार आ व्यवहारमे किछु बदलाव एबक चाही। समाजमे अखनो अन्धविश्वासमे पड़ल बहुसंख्य लोक छथि, मुदा जखन अन्धविश्वास विसवासमे बदलि जाइत तखन ने जीवनमे स्थानक संग परिवर्तन सेहो होइत अछि।

गप-सप्पक विचार, मात पिता-पुत्रक गप-सप्पक विचार, सुनि जलसनी हलास उठल पानि जकाँ असथिर ठाढ़-ठाढ़ भीन भऽ गेली।

धनुषधारी देवनकेँ पुछलैन- "बौआ, अखन तक अपन गाम आ अपना घरमे रहलहुँ, मुदा आब आन गाम आ आनक घर रहैत जाइ छह, तेँ करा अँटावस करबह से नीक जकाँ मनमे बिचारैत रहिहह।"

सादा कागज जकाँ देवनक मन छलैन। तहूमे कुशेसरक मुहसँ जे कलकत्ताक सम्बन्ध सुनने छल तइसँ मन आरो मारिते रहैत गेल छलै जइसँ उधकी धइत नन छल। बाजल-

"जना-जना कुशेसर भैया कहता आ करता तहिना-तहिना देख-देख हमहूँ करब।"

उमेर छोट नहि बुझब जे, अखना गाम समाजमे एहेन प्रान्ति पसरल अछि जे आन जे कहैथ से करी, मुदा हुनकर करैत काजक देखौंस नहि करी। अही प्रान्तिमे पड़ल धनुषधारी बजला-

"कुशेसर जे करैत कहताह से ठीक हएत मुदा देखसी करब तँ..!"

पिताक साव-विचारसँ देवनकेँ कान महलब छलैन, महलब अपन मनक छलैन, बजला-

"जखन काज करैत जाएब तखन जहिना-जहिना कुशेसर भैयाकेँ करैत देखबैन तहिना-तहिना अपना करब। जँ कतौ कारा गड़बड़ हएत तँ पुछिया लेबैन आ अपना सामर्थ्य रहत, देखबा तँ करब करता।"

देवनक विचार सुनि धनुषधारीक मनमे विसवास जगलैन जे जे ठाकुरक प्रति मात कुशेसरक प्रति, समर्पण देवनकेँ मनमे जगल अछि, जँ ओ समर्पणकेँ समर्पित रूपसँ करैत रहत तँ जीवनमे नीक

छाड़ि अधला नइ होइ। जीवनक ओगला मात्र पतिनारक ओगला, काज दिस धियान जगबैत धनुषधारी बजला-

"बौआ, मनुखक जीवन एहन जीवन छी जइमे लोक किछु कऽ सकैए। जहिना नीकसँ नीकगर कऽ सकैए तहिना अधलासँ अधलाह तँ कइये सकैए। आन जीवन जे अछि, मात्र मनुक्खसँ इतर आन देहधारी जीवक, ओकरामे एहेन शक्ति नइ छै, तँए असंखा-संखा जीवनमे मनुक्खक सबसँ श्रेष्ठ जीवन अछि।"

पिताक विचार देवन नीक जकाँ ने सुनलक आ ने बुझलक। किए तँ कलकत्ता जेबाक खुशी मनमे तेना माइर बला देने छलै जे घिरनी जकाँ मन घुमि रहल छलइ। देवन बाजल-

"बाबू, गाममे काज नइ अछि मुदा ओइठाम तते काज अछि जते लोक करए चाहत। जखन पाँच बर्खक कमाइमे कुशेसर रैया एतेक कलैन तँ हम की ओइसँ कम करब। आइ ऊ पीनियाँ-बानि साल पहिने गेल रहितौं तँ कुशेसर रैया जकाँ ने हमहूँ भऽ गेल रहितौं। जेना ओ बहिनक बिआहमे खर्च कलैन तहिना हम खेत कीन लइतौं।"

'खेत' सुनि जहिना धनुषधारीक मनमे उठलैन जे अपन ऊ घन-घनाठी आ बास-बास मात्र जीवैक साधन भऽ जाए आ ओइ बीच ऊ अपन स्वतंत्र जीवनक रूप धारण करत समयक अनुकूल बनैत जीवन बिताबी, एहेन ने स्वतंत्र देशक परम स्वतंत्र जीवन हएत। जकर खगता मनुख जीवनकेँ अछि। ..धनुषधारी बजला-

"पनसु गाठी पकैतक विचार कुशेसर करैत छल, तँ कालिह साँझुपहर कुशेसर ओतए चलि जइहह।"

देवनक मनमे होइ जे अखन चलि जाइ जे दु दिनमे रस्ता-पतासँ

लऽ कऽ कलकत्ता धनिक गप-सप्प सुनैत रहै, मुदा कनी जाइसँ पहिल मास जत दिनक हिसाबसँ जा रहल छी, तइ बीचक ई सामाजिक समाधान अछि, उकरा गँ सुप्रबन्ध करए पड़त छइ। रतन बाजल-

"कुशेसरा रैया सउरु कहलैन ई काल्हि साँझु पहुन चलि अबिहरु, हुनु साँइ घरसँ संग निकलब।"

-

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाइ 1947 ईस्वीमे भेलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क अहर्ता पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ रुचि पूर्वक समाज सेवाम लागि गेला। समाजमे व्याप्त रुढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवस्था सामाजिक विकासमे हुनका बाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पुरजोर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे बीतल कलाह। 2001 ईस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्रममे एला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हुनक रचना प्रकाशित हुअए लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हुनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान

अविस्मरणीय छैक। हिनी अपन सतत क्रियाशीलता आ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर अवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साओन दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्‍मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योगदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल सर्विसेज द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु ग्राम्या-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य आ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022'

रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक

जाऽऽ0, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम झूठ, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाए, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहनि कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखरि, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. भकमोड़, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़निगन हाथ, 60. लजबिजी, 61. उकडू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डरियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. बीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पैरूख, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दाहिनी हाथ, 80. स्वाभिमानी जिनगी, 81. देखल दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक

दीय, 84. अथन गाम, 85. खिलाउ तुमि, 86. विनानक भिकान, 87. चौनस खणक चौनस उयज, 88. समयसँ यहिन चा किसान, 89. सौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. यसनाक माल, 92. कृषियाग, 93. हानल वहना जीनल नुय, 94. नहे जाकन यनिवान, 95. कर्नाक नंग कर्मक संग, 96. गामक सूनाा वदेल गेल, 97. अन्तिम यनीजा, 98. घनक खर्च, 99. नीक Oकान Oकलौं, 100. जीननक कर्म जीननक मर्म, 101. संवनध, 102. रनि मन काज, 103. आउल आशा वलि गेल, 104. जीनन दान तथा 105. अथन सानी- लघु कथा संग्रह।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

३.९.नाशन जनकयूनी- वृढिया आ मन्ताक खिस्सा

**नाशन जनकयूनी**

वृढिया आ मन्ताक खिस्सा

जाठ मासम शहीद दिवस ।

दिनरञ्जन राषध रीषध। शहीद ञ्ञी कयलक, शहीद उा कयलक । शहीद महान । 'आञ्ञ ज ञ्ञी दश अञ्ञ, उाही शहीदसवक वलिदान अञ्ञ ।' ....की ....की...की...की....!

स्वान्त्रा आ समृद्धिक सयना । नााजीक महानाा । गाउी आ

कार्यकर्ताक जुलूस । सड़कसभ गुँजैत रहल दिनभरि, मन्त्रीजी, जे नेता छथि, हुनक जयजयकार आ संगसंग शहीदसभक नारा स ।
एखन मञ्चपर विराजमान मन्त्रीजी, निच्चाम बैसल लोकसभ दिस ताकैत मुस्किया रहल छलाह, निरन्तर । मञ्चक निच्चाम बैसलसभक लगै छलै जे हमरे देख क' मुस्किया रहल छथि मन्त्रीजी, आ सभ हुनका अपना अपना ढंग स अभिवादन, सलाम आ प्रणाम क' रहल छल । मञ्चपर बैस'क ओकर देखा न छै, जे अहाँ कम्हरा ताकैत हाउ, निच्चावलाक बुझाइछै, अहाँ ओकरे दिस ताकि रहल छी । भीड़म बैसल मन्त्रीजीक स्थानीय कार्यकर्तासभ बीचम नारा लगा रहल छल - "...मन्त्रीजी जिन्दाबाद ।" आ उत्साहित भीड़ दोहरबैत छल - "जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद !!"
दिनभरि चलल कार्यक्रम । चौराहापर मन्त्रीजी विशाल झण्डा फहरौलैन । ठार हावाक झोंका स झण्डा फहरफहरा उठल - 'फहरफहर फहरफहर' । सभहक मुँह ठारयल गर्वक भाव । मन्त्री स सन्तरीतक झण्डाक सलामी देलक -'सावधान, विश्राम, सलामी द !'
देश जिन्दाबाद । शहीद अमर रहथु ! मन्त्रीजी जिन्दाबाद !
तगमा बँटाएल । मिठाइ बँटाएल ।
भीड़ स किछु दूर हटि क' एकटा बुढ़िया गौर स झण्डाक निहारैत रहल छल । विशाल आकारक, जेना घर झाँपय लेल, तहन झण्डा । ठार हावा स झमैत फहरफहराइत झण्डाक देखैत, ठाढ़ बुढ़ियाक आँखिम एकटा खुशी छल । तखन कोनो ठाकुरक हाथम एकटा लठ्ठ ध'देलकै -"लीउ बुढ़ीमाइ लठ्ठ !"
ई सड़कछाप बुढ़िया खाली बुढ़ि न छै हारल अछि । ओहन राष्ट्रीय दिवसक दिन सरकार, मन्त्री, घनेरो नेता आ ठाकुर

कार्यकर्तासभक बड़प्पन आ सहृदयता देखाबक साधन सेहो होइत अछि । एहन दिनमे अइ सड़कछाप बूढ़-युवानक मन्त्री आ नेतासंगेक फोटो सेहो छपै छै पत्रिका आ टीवीमे । अइ स मन्त्रीजी बड़ दयावान, सुहृदय आ जनप्रिय छैथ से जनतामे प्रचार पबै छै ।

मन्त्रीजीक धूँआधार भाषणक बीचमे सूरूज पच्छिममे डूबि गेल । शहीद दिवस खतम भ'गेलै । लोकसभ अपन अपन गाम लौटिगेल । चौराहा क्रमशः शान्त होइत गेल । आब बढ़ैत राइतसंगे जाड़ सेहो बढ़ैत जा रहल छल ।

कखनोकाल निस्तब्धता भंग करैत दौड़ैत गाड़ी । नइँ त, निस्तब्ध चौराहा, हाड़क शीतलहरक थरथर'बैत जाड़, ओ बूढ़िया आ कनकन आवाज करैत सन्ना मात्र छल ओतह ।

बूढ़ियाक चौराहाक पूर्वी कातक पाखैरक शीतयर बरल बरसातीमे रहैत छल । गर्मीमे त अइ बरसातीमे कय गोटे सुतैत छल, जाड़मे प्रायः ओ असगर भ'जाइत छल । अइबेर जाड़ बेसी छल । बूढ़ियाक जाड़ स सकून नइँ भ' रहल छल । ओ एम्हर ओम्हर स किछु प्लास्टिक, किछु कूट आ किछु जारैन जमा कयलक । ताँतम स सलाइ निकालि क' बारलक । धधरा भेलै । ओकरा कने सकून भेलै । समयक मारिन स पातर गेल फाटल गदल्ला आधा बिछा क' आधा ओढ़ि क' बरसातीमे ओ पसैर गेल । धारक आसमे एकटा कुत्ता सेहो ससैर क' ओकरा लग बैसल अयलै ।

ई आगि बेसीकाल नइँ टिकत, ओ जनैत छल । ओ उठल । मधुआइत धाहसंगे जाड़ कने ओकरा भगस' लागल छलै ।

सड़कपर ओ एम्हर ओम्हर तकलक। दुनूकात दूराक कतौ कओ नहिँ छल। ओ बौनारायण पहुँचल। चक्कू स मन्नाक गरी काटि देलक। मन्ना निद्रा खसि पड़लै। ओ मन्ना खाटिल क' ल' आयल।
तीन दाबन कयलाक बाद नम्हर छलै मन्ना। बुढ़िया ओहिम गदल्ला लपटलक आ ओहिठलक। आब आगि कतकाल रहतौ, तकर ओकरा मतलब नहिँ छलै। जाड़ अएलाक बाद आइ पहिलबेर ओ गर्मा क' सूतल। गदल्ला आ मन्ना मिला क' जे ओकरा गर्माहट भेट रहल छल, से अपूर्व आनन्दमय छल। बुढ़िया आइ जहिना घाठ बच क' सूति रहल।

....

भोर बौनारायण हंगामा। मन्ना गायब।
नाकक तिउटीवला हवलदार बाजल - "सला, हमर नोकरी गेलौ! सार, बाज! रहितौ त सारक दाह नहिँ बनैली त हेन की!"
'काना 'आतंकवादी' अहिँ की!' 'काना 'पृथकतावादी' अहिँ की!'
चारूदिस हल्ला खऽखऽय लागल। बीच बौनाह स मन्ना गायब कोना भेल? नियार्ट निद्रा स उठ्यर गेल। तत्काल उठ्यर स निद्रा तक आदेश जारी भेल। 'जेना होइ तेना खाजल जाय मन्ना। मन्ना चोरयर नाशाङ्करक मुकदमा चलायल जाय। ककर लायनवाही छल? ओकरा नहिँ छोड़ल जाय!'
हवलदार पुलिसक तनियपलक -"सार गाँ कप छल? आब गेलौ तारा आ हमरा जागीर।"
पुलिसक दाब एतेक रहै जे ओ जाड़क कारणे सामनवला महिनाम ओँगेठ गेल आ ओँघाइत सूतल रहल छल।
कि तखन कओ कहलकै -"मन्ना ओहिठ क' त एक गोट बनसातीम

सूतल छथि !"

हवलदार, पुलिस आ लोकसभ बनसाती दिस दौड़ल। ठीक !

हवलदार ठेयाँ स टोहकारलक - "हय बूढ़ ! क सुतल छें ? "

बहुत दिनक बाद गर्मी क' ओहन गहींर निन्न सुतल छल बूढ़िया।

तीनबेर टोहकारलाक बाद उठल। मूँह उघारलक त चारू दिस पुलिस आ लोकसभक देखलक।

मन्ना गन म स बूढ़ियाक निकलैत देख हवलदारक 'दाहा' बनाब' क मनसूबा पर पानि पड़ि गेलै। ओ क्रोध स सतक पर लाठी बजारलक - "उठ सारिक !" आब ओह बूढ़ियाक कोना 'दाहा' बनाओत ! गेया कड़ेक क' बाजल -"मन्ना ओढ़ैत काल तोरा नहिं देखैलौ ? मारियो बाझैन तैया ?"

"बड़ जाड़ नहि हवलदार साहेब !" - बूढ़िया बाजल।

हवलदारक हालत देखबला छल। ओ अपन माथ नोंचा कि करत सोचैत। उपर नियार कयलक। पकैन क' हाजिर करबाक आदेश देलै।

सीतिया ओसरीक आगू हाजिर कयलगेल बूढ़िया।

"मन्ना खाली काल तोरा नहिं देलौ बूढ़िया ?" - सीतिया पूछलकै।

"जाड़ बड़ छलै हजूर ! ओहि मन्नाक करत बड़ मारि नहि ! आ हमरा त कोनो मारका करत नहिं हय ! घना नहिं हय !.....सतकपर बड़ जाड़ हाइ ठिठुर हजुर !"- बूढ़िया नम्र जबाब देलकै।

"त तों मन्नु खाहल क' उठैलब ?"- सीतिया पिनायलसन बाजल।

"कथी करू त ! जाड़ स सबून नहिं देल हजुर !"- बूढ़िया मजबूरी

ब्यक्त कयलक।

"राष्ट्रीय सत्ताक सम्मान कयल जाइछै, से पता बुझल नइँ छौ ? कानून लगैछै !" - सीतिया किचकिचा क' बाजल।

"जाउ बउ नहि हएत !"- बुढ़िया समझाब'क कोसिस कयलक।

"ई अयउ, गँवार की जनौ सम्मान आ कानून ! छोड़ !" - ओसरी बुधियानी दखबैत सीतिया स कहलक -"ओहन बुढ़क सजाय कथी हवे !"

बुढ़ियाक मन हलै ज कउ पुछैत -'घर कथिला नइँ छौ ? सत्कयत कथिला नहिछ ? कना सत्कयत अयल ?' लेकिन सीतिया ओसरीक ओहन प्रश्नसब स काना काम ! उ सब त कानूनक नखवान अइ। नखवानी कनैत अइछ। कउ नइँ पुछलकै। आ तयँ बुढ़िया नइँ किछु कहलकै।

बुढ़ियाक छाइन हलगेलै। लेकिन उकना स सत्ता छीन ललगेलै। दयावान सीतिया उकना ओकरा उठना हलकै, अयन याइ स कीनल। लेकिन ई उठना सत्ता स छाट छलै। सत्ता बउका छलै। दावनाइया क' उइउ सकैछी। बुढ़ियाक दुःख छलै ज उकन सत्ता छिनागेलै। अइ सत्ताम ज गहल्ला लयटालइ छलै, त बउ गनम छलै। उकना बउ दुख हलै मन म।

....

दासन साल। हन जाउ अयलै। हन शहीददिवस मनलै। हन मन्त्रीजीक राषध्रीषध्र हलै। जयजयकान हलै। मिठाई बँटलै। सत्ता हनहनयलै।

बुढ़िया अहुवन चौनाहयन ठाउ छल। उ ठान हनाम हनहनाइत सत्ताक अहुवन दख नहलछल। हाउ कँयवैत जाउ स उकना अहु

बन सबुन नहिँ र'नहल छल। लेकिन अहाँकेँ मन्ता देखि क' उकना आँखिम काना राव आ अपना नहिँ छल। ऊ बुझम गेल छल, जे ओ मन्ता ठान हनाम हनहनाइ, थपउा सहेन, चिथनी चिथनी उड़ा सकैय, लेकिन ककना गर्मा नहिँ सकैय। जाड़ स नाहन नहिँ द' सकैय। बुढ़िया आब किछु दासन साँझव नहल छल। ओहन, जखम लपटा क' ऊ गर्मा क' निश्चिन्त र' सकैय। बुढ़िया मनमन साँचलक -'ओहा काना मन्ता! मन्ता र ऊ, जे उाड़ क' गर्मायल जा सक आ हनहनायल जा सक।'

-०११ पूस २७

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.१०.प्रेमशंकर झा 'पवन'- जनकवि 'मैथिली पुत्र प्रदीप' (प्रेम शंकर झा 'पवन'क मैथिली पुत्र प्रदीपपर आवेवला निबन्ध मालाश्रृंखला अंश)



प्रेमशंकर झा "पवन"

जनकवि "मैथिली पुत्र प्रदीप" (प्रेम शंकर झा "पवन"क मैथिली पुत्र प्रदीपपर आवेवला निबन्ध मालाश्रृंखला अंश)

एहि धरती पर माँ जगदम्बाक अनुकम्पा सँ कखनो-कखनो एहन व्यक्तिक जन्म होइत छनि जे अपन कृतित्वसँ समाजमे सदाक लेल आदर्श बनि जाइत छथि। ओहिमेसँ एक छथि प्रभु नारायण झा "प्रदीप", जिनका "मैथिली पुत्र प्रदीप" साहित्यिक नाम सँ सम्पूर्ण मिथिलाँचलमे जानल जाइत छनि। प्रसिद्ध कवि, लेखक आ रचनाकार मैथिली पुत्र प्रदीप कँ पूरा नाम प्रभु नारायण झा "प्रदीप" छलनि।

मुदा हुनका लोक त' ओ छोटका बाबा रहथि। "छोटका बाबा" एहि नाम सँ हम सभ परिवारक लोक सम्बोधित करैत छलियनि हुनका। एहि बातक बोध त' बादमे भेल जे, बाबाक छोट भाइ रहथि ताहि छोटका बाबा भेलथि। मैथिली पुत्र प्रदीप जीक जन्म दरभंगा जिलाक तारडीह प्रखंडक कैथवार गाम मे ३० अप्रिल १९३६ मे भेल छलनि। पिता स्व. स्वरूप नारायण झा, एकटा साधारण किसान रहबाक कारणे, छात्र जीवन सँ संघर्ष कय क अपन पढ़ाइ-लिखाइ पूरा कयलनि। माता स्व. सीता देवी बाल्यावस्था मे हिनका छोड़ि स्वर्गवासी भय गेलखिन। मुदा श्रेष्ठ भ्राता स्व. देवनारायण झा जे दसकासी मे अपन स्वच्छ छवि आ मखौलिया स्वभावक कारणे जानल जाइत रहथि, हुनक ध्यान-दुलार आ प्रोत्साहन हिनका भेटैत रहलनि। जाहि कारणसँ ई अपन पढ़ाइ निरंतर जारी रखैत दु विषय सँ ओहि समय मे एम. ए. कैने रहथि जहिया अपना समाज मे बहुत कम लोक आर्थिक तंगी के कारणे उच्च शिक्षा प्राप्त करैत छलथि। हिनक बाल सखा संग हृदय मित्र नारायण झा सँ हिनका बचपनक बारे मे जे जानकारी भेटल ताहिमे, बचपनसँ कर्तव्यनिष्ठ, धार्मिक आ सादा जीवन रहनि मुदा विचार हरदम उच्च रहलनि। बहुत कम बाजब आ अनुचित त' कखनो नहि बाजथि जाहि कारणे टोल परोस मे हिनका "महोदय जी" सेहो कहल जाइत छलनि।

बिहार सरकार मे शिक्षकक नौकरी करैत मिथिला-मैथिलीक लेल हेरायल लोक रहलाह। हिनकर इच्छा छलनि जे दरभंगा आकाशवाणी सँ नित्य दिन मैथिलीमे कविता पाठक समय अलगसँ होइत आ मैथिली कार्यक्रम के समय बढ़ाओल जाय। दरभंगा।

मिथिलाकेँ सांस्कृतिक केंद्र रहितो, दरभंगा आकाशवाणीमे मैथिली उपेक्षित रहल, जाहि कारणसँ मैथिली पुत्र प्रदीप दरभंगा आकाशवाणीकेँ त्यागि देने रहथि। हिनकर विचार रहनि जे मैथिल बच्चाकेँ मैथिलीमे शुरुआती शिक्षा होएत त' ओ जल्दी बुझत आ ओकर बौद्धिक विकास जल्दी होयत। मुदा बहुत अनबन आ तत्कालीन सरकारकेँ मैथिलीक प्रति उदासीन रहबाक कारण, ई संभव नहि भय सकल। तकर बाद ओ मिथिला मैथिली के लेल समर्पित रहलाह आ हुनकर समर्पण अविस्मरणीय अछि।

कविता आ गीत लिखनाइ ओ छात्र जीवन सँ शुरू कय देने रहथि, हुनकर पहिल पुस्तक "गुलाब के बहार" १९७७ मे प्रकाशित भेल छलनि। "जगदम्ब अहि अवलंब हमर" केँ प्रकाशन १९७८ मे भेल छलनि। जाहिमे भगवती गीतकेँ संग्रह केने रहथि। "जगदम्ब अहि अवलंब हमर हे माय अहाँ बिनु आस ककर" निश्चायति के "जय जय भैरवी" केँ बाद सबसँ लोकप्रिय भगवती गीत, मैथिली पुत्र प्रदीप जीक कालजयी रचना छनि। मिथिलाँचल नहि दुनियाँकेँ हर कोनमे जतय मैथिल रहैत छथि, ई गीत कोनो शुभ कार्य मे गायल आ सुनल जाइत अछि। शुरुआती दिनक हिनक लिखल किछु गीत जे सुज पन हनमाइस होइत छल आ गायकक मुँहसँ सुनलाक बाद पता चलल जे, ई हुनकेँ रचना छियनि। जाहिमे खओना सँ खओनय छँ पात लब लब लबकौ कमनिया, आ पहिने लाल साड़ी उठाबय खसानी प्रमुख छल। "टूनी दाइकेँ सोहाग" पोथीमे छपल एकटा प्रसिद्ध गीत जे महाप्राणकी मे हास-परिहास मे गायल जाइत छल, चलौ चलू बहिना हकार पूरै ले टूनी दाइक बर एलनि टीमी दाके ले" वउ चर्चित रहनि। एहि किताब लगाकेँ

मैथिली पुत्र प्रदीप जीकेँ लिखल कुल उन्नीस गो पुस्तक प्रकाशित भेल छनि, जाहिमे गीत प्रदीप, एक घाट तीन बाट, नाम हृदय, श्रीमद्भगवद्गीता आ दुर्गा सप्तशतीक मैथिली अनुवाद प्रमुख अछि। एकर अलावा किछु अप्रकाशित सेहो छनि आ दुटा प्रेस प्रतिक्षारत अछि।

शिक्षकसँ अवकाश प्राप्त केलाक बाद मैथिली पुत्र प्रदीप, समाज कल्याणक लेल मिथिलाँचलमे घूमि-घूमि यज्ञ आ सप्ताहिक धार्मिक अनुष्ठानमे अपन जीवन लगा देने रहथि। धार्मिक अनुष्ठानकेँ माध्यमसँ बहुत गरीब ब्राह्मण बच्चाकेँ बिना कोनो खर्च यज्ञ मंडप पर उपनयन संस्कार सेहो करैत छलाह। एहि कार्य मे श्री नामशंकर झा हिनका तन मनसँ सहयोग करैत रहलखिन। अपना जीवन केँ अंतिम समयमे द्वारका बाबा मैथिली पुत्र प्रदीप एकटा साधककेँ जीवन व्यतीत करय लगलाह। नहि बाजब (मौन व्रत), नहि खायब, फलहार कयकेँ नहि जायब, ई हिनकर दिनचर्या बनि गेल छलनि। जाहि कारण हिनका लोक संत कहि सेहो कहैत छलनि आ अखनो हजारोकेँ संख्यामे हिनकर बनायल शिष्य हिनकर गुणगान करैत छनि।

३० मई 2020 केँ मैथिली पुत्र प्रदीप अपन आवास स्वयं प्रभा निकुंज, स्वयं प्रभा नगर, दनरंगा मे अंतिम साँस लेलनि। हुनकर अंतिम संस्कार पैतृक गाम कैथवानमे हनुमान पुस्तकालयकेँ प्रांगण मे भेलनि। हनुमान पुस्तकालय सेहो मैथिली पुत्र प्रदीप द्वारा स्थापित समाजक लेल एकटा उपलब्धि अछि। जाहिमे हिनकर द्वारा लिखल किताबक अलावा बहुत रास दुर्लभ पोथी सेहो संरक्षित अछि, जकर लिस्ट हम आइ सँ तकरीबन तीस बरख पहिने तैयार कने रही।

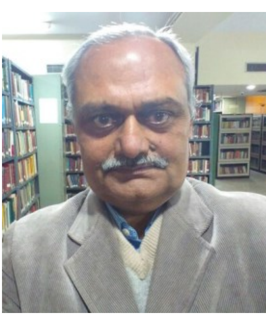
ई मनोरम जगह कैथिनियाँ सबसँ दक्षिण विदेश्वर-घनश्यामपुर सड़कक कात, गणेश मंदिरकेँ बगलमे अवस्थित अछि। ७ जून २०22 केँ हिनक प्रतिमाकेँ अनावरण, हिनकर समाधि स्थल (कैथिनियाँ) हनुमान पुस्तकालयकेँ प्रांगण मे भेलनि।
मैथिली पुत्र प्रदीप केँ हुनकर रचना आ मिथिला-मैथिलीक हेतु कयल गेल योगदान लेल, अनेक सम्मानसँ सम्मानित कयल गेल छलनि। जाहिमे मिथिला रत्न, मिथिला शिरोमणि, सुमन साहित्य सम्मान, मिथिला गौरव, राजेन्द्र झा सम्मान आ वैदेही सम्मान मुख्य अछि। एकर अलावा हुनका वरिष्ठ रचनाकार, सरस्वती पुत्र, संस्कृत शिरोमणि आ मिथिला पुत्र आदि अनेक सम्मान सँ सम्मानित कयल गेल छलनि। महान पुरुषक जीवनी हमरा यादि करबैत अछि जे हुनकर बतायल रस्ता पर चलि हमहु समाजकेँ कोनो ने कोनो नूतन उपकार कय सकैत छी। आइ हम जे किछु छी तहिमे "छोटका बाबा", मैथिली पुत्र प्रदीप जीकेँ बहुत बेसी योगदान छनि। हमही नै परिवार आ समाजक बहुत लोक हिनका सँ उपकृत भेल छथि। बहुत लोककेँ अपन ज्ञान-पहचान आ सूझबूझ सँ नौकरी लगौने छथि, जे अखनो हुनकर गुणगान करैत छनि।

-प्रेम शंकर झा "पवन"- कैथिनियाँ, मनीगाछी, दरभंगा।

-

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓓.𑓑𑓑.𑒢𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑓑𑓔𑒧 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑒢𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩

𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑓑𑓔𑒧 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓑𑓔

जहिना-जहिना जयन्तक आँखिक आगि बाहर आबि रहल छल, तहिना-तहिना हुनका पाठशालाक काज आगू करबाक चिंता जान पकड़ने जा रहल छल। कहबी ठीक जे मनुक्ख सोचैत अछि किछु आ विधाता करैत छथि किछु। से नहि होइतैक तँ भगवान राम सन महान व्यक्तिकेँ दुर्गति किएक होइतनि? कालि भेने हुनका राजगद्दी हेबाक छल, ओ चक्रवर्ती राजा होइतथि। मुदा होनी प्रबल। कहाँसँ कैकयीकेँ कुबुद्धि सवार भेलनि आ सभटा खिस्सा पलटि गेल। राजगद्दीक बदला हुनका चौदह बरखक बनवास जाए पड़ल।

आचार्यजीकेँ चलि गेलाक बाद आइ जयन्तक मोन उदास छलनि। सोचलनि जे पाठशालाक काजमे लागि जाएब तँ मोन हल्लुक भए जाएत। अस्तु, एहि बातकेँ कार्यान्वयन करबाक हेतु ओ सौंस गामक लोकसभकेँ बैसार कएलाह। बैसारमे ओ किछु कहितथि ताहिसँ पहिने हुनकर पितिऔत सुधाकर चिचिआ उठलाह-

"काए कहाँसँ एक दिनपर गाम घुरलाह। आब तरह-तरहक फदकासभ पढ़ि रहल छथि। अहाँसभ हिनकर बात पर नहि जाउ।"

सुधाकर बड़ मार-सार कदकाठीक व्यक्ति छलाह। ओँ एकबेर ककरो एक चमेटा मारि दैथि तँ उठि कए पानि पीबाक होस नहि रहैनि। हुनका संग चारिटा लठैत सदिखन रहैत छल। लग-पासमे जकरा ककरो कोनो फसाद करबाक होइक तँ सुधाकर लग पहुँचैत छल। हुनकर लठैत सदिखन तैयार रहैत छल। सुधाकरक एना चमकैत देखि गौँआ सर्द भए गेलाह। सभ एक-दोसरक मुँह ताकि रहल छलाह। कओ किछु नहि बाजए। होनि कए बैद

मधुकान्त बजलाह-

"तूँ की कहए चाहैत छह?"

"अहाँ अनेर टपर -टपर नहि करू। अहाँ अपन घर सम्हारि लिअ् सएह समाजक बड़का उपकार होएत।" सुधाकर ई स बजैत रहलाह आ कड़ा हुनका किछु नहि कहि सकल। बैदजी किछु बजबाक साहस केलाह ने हुनक पाछु पड़ि गेल।

"बिना बात बूझने ताना एना बाजब उचित नहि अछि। जयन्त निर्दोष छथि आ पाठशालाक माध्यमसँ समाज सेवा करए चाहैत छथि। एहिमे गामसबाक कोन बात होइक?"

"जाबत बुद्धि अछि, ताबत बाजू। ई बैदगिनी नहि थिकैक जे कोना लय लगा देबैक आ घाव ठीक भए जेतैक। आखिर पाठशाला बनतैक कोना? एहिमे स ने हतोत्साह?"-सुधाकर माछपर ताव दैत बजलाह।

एतेक बजितहि सुधाकर इसारा केलथि। ओ बाबू चारू लठैत बैद मधुकान्तकेँ घेर लेलकनि। ओहिमे सँ एकटा हुनकर गट्टा पकड़लक, दोसर टाँगक धोती खोलक, तेसर हाँथ बहैत चोली देबए लागल-

"चुप रहबह की......"

"ई सभ करबाक कोनो काज नहि छैक। बैदजी बुधिआर लोक छथि। तूँ सभ कात भए जाह।"-सुधाकरक बात सुनि लठैतसभ बैदजीकेँ छोड़ि देलक। मुदा माहौल तेहेन गरमा गेल छल जे जयन्त स्वयं उठि बैसारसँ उठि गेलाह। सभा बिना कोनो निर्णयकेँ स्थगित भए गेल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.१२.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (भाग- ८)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम्ए, नैहर - खराजपुर,दरभङ्गा, सासुर - गाढ़ियारी (बलहा), वर्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (भाग- ८)

"राजा पुरुरवाक तपस्या पूर्ण भs गेल, ओ अपरिमित शक्ति सs संपन्न भए गेलाह एवं भगवान विष्णुक वरदान सs युक्त अद्भुत श्री शोभा पाबि रहल छथि" - ई समाचार प्रतिष्ठान पुर मे विद्युत तरंग सन व्याप्त भए गेल। नृपति पुरुरवा क स्वागत करबा हेतु प्रधान आमात्य राज पुरुष एवं सैनिकक संग नगर सs बाहर उपस्थित छलाह। नृपति पुरुरवा अद्भुत रथ जे भगवान विष्णु क द्वारा हुनका उपहार स्वरूप भेटल छलैन्ह, ओहि पर चढ़ल आबि

रहल छलाह । पुरुरवाक ओ रथ आकाश मे निर्विघ्न उड़ि सकैत छल । भूमि पर रथ आ वायुमंडल मे विमानक रूप ग्रहण करैत छल ओ दिव्य रथ ।
पहिल त पुरुरवाक रथ क देखि प्रधान आमात्य आश्चर्यचकित रहि गेलाह परंच निकट अयला पर ओ नृपति क चीन्हि गेल । नगर क कन्या एखन युवति सब राजाक मार्ग मे पुष्प बिछबैत छलीह । मार्ग भाँति-भाँति क पुष्प सऽ आच्छादित छल । सुन्दरि युक्त पवन स्वागत मे मंद-मंद मकरंद बहबैत छल । स्वर्ग सऽ पुष्प वृष्टि दिव्य विमान द्वारा कएल जाइत छल । सब दिस प्रसन्नता पसरल छल । सम्पूर्ण नगर आनंद सागर मे सराबोर भेल छल । प्रसन्नताक एहि अवसर पर मुक्त हस्त सऽ सोना आ चांदी क सिक्का लुटायल जाइत छल,परंच ओ सिक्का लेबऽ बला कओ नहि छल । ओ तऽ बस मार्गक शोभा वृद्धि करैत छल ।
राजप्रासाद मे राजाक अभ्यर्थना कएल गेल,तत्पश्चात अनेक वाद्य बाजय लागल । सम्पूर्ण प्रजा एहि आनंद उत्सव मे भाग रत छल । संगीत आ नृत्य क एहि विशाल आयोजन क शुरू रूप देखबा हेतु स्वयं देव गण आयल छलाह,परंच पुरुरवा अपन राज्य कक्ष मे प्रस्थान कऽ गेल छलाह । हुनका एहि सब मे कनिको रुचि नहि छलैह ।

***

दोसर दिन राजा क दानव राज केशिक गर्व-पूर्ण चुनौती भरल पत्र प्राप्त भेलैह । राजा क्रोध सऽ उद्दीप्त होमय लगलाह । ओ प्रधान

आमात्य क अपन कक्ष मे बजौलैह। गंभीर मुद्रा मे प्रधान आमात्य आबि कऽ अपन आसन पर बैसि गेलाह। पुरुरवा हुनका सँ पुछलैथ -

"अखनि धरि हम कतेक अश्वमेध यज्ञ कएलहुँ अछि"?

"नृपवर अखनि धरि 107 अश्वमेध यज्ञ श्रीमान् संपन्न कएल थिकहुँ "।

"हम पुनः अश्वमेध यज्ञ करऽ चाहैत छी। इन्द्र हमर अंतिम अश्वमेध यज्ञ होयत। ओहि अश्वमेधक ब्याज सँ दानव राज बलि सँ युद्ध होयत। ओ बेरि-बेरि हमरा चुनौती दैत रहैत अछि। ओ इन्द्र क पराक्रम सँ डरल अछि,ओहि गर्व सँ गर्वित भय ओ हमरा ललकारि रहल अछि। परंच आब हम सामान्य सम्राट नहि नहि गेलहुँ,भगवान विष्णु क कृपा हमरा पर अछि, हुनकर कृपा सँ हम बलि क अवश्य पराक्रम करब। गोमेदक द्वीप,पुष्कर द्वीप और शाल्मल द्वीप पर हमर आधिपत्य नहि भऽ पायल अछि। हम ओहि सातों द्वीप पर अपन एकाधिपत्य चाहैत छी। हमरा संपूर्ण भूमंडलक अधिपति होयबाक अछि। ओहि सँ हम अपनेक उचित परामर्शक अभ्यर्थी थिकहुँ"।

प्रधान आ मात्य नृपति पुरुरवा क महत्वाकांक्षा सँ अत्यन्त प्रभावित भेलथि। ओ राजाक स्वप्न क साकार करबा हेतु उचित परामर्श दैत रहलाह,आ राजा हुनक परामर्श पर युद्धक भावी योजना बनबैत रहलाह। तत्पश्चात अन्य अश्वमेध यज्ञक अपेक्षा ओहि यज्ञ क वृहद ढंग सँ करबा हेतु महर्षि अगस्त्य सँ उचित परामर्श लेबय हेतु जाइ क तैयारी करऽ लगलाह राजा।

***

राजा पुरुरवा के आगमनक समाचार सुनि कऽ महर्षि अगस्त्य हर्षोल्लसित होइत हुनक स्वागत करबाक लेल स्वयं अयलाह। महर्षि के देखि कऽ राजा नतमस्तक भय सादर चरण स्पर्श कएलनि हुनक चरण धूलि के अपन मस्तक पर राखि हुनका सँ पूछलाह - "गुरुदेव अहाँ आश्रम के नाना प्रकारक विघ्न-बाधा तँ नहि होइत अछि?

"नहि पुत्र तोहरा सन् न्याय प्रिय आ धर्म परायण शासक के अंतर्गत हम ऋषि-मुनि सभ के कनिको कोनो कष्ट नहि अछि"|

"सब कुशल मंगल सँ तँ छथिन वन मे"?

" सब सकुशल अछि। तों अपन कहऽ,शिकार खेलबाक उद्देश्य सँ अयलह छह"?

"नहि गुरुदेव,हम शिकार नहि खेलाइत छी। राजकार्य मे तेक ने व्यस्तता रहैत अछि कि आन कोनो व्यर्थ के काजक लेल समय नहि रहैत अछि। ओहुना हमरा शिकार खेलबा मे कनिको रुचि नहि अछि"|

"ओह,अच्छा ! आबह राजन् एतह आसन पर बैसह"|

"गुरुदेव हम विशेष प्रयोजन सँ आइ अपनेक सेवा मे उपस्थित भेलहुँ अछि" - आसन पर बैसला उपरान्त नृप कहलथि।

"कहू वत्स अवश्य कहू एहन कोन विशेष प्रयोजन आबि गेलह तोहर जाहि लेल एतेक दूर आबऽ पड़लह"?

"गुरुदेव हम एक सौ आठम अश्वमेध यज्ञ करऽ चाहैत छी। इ अश्वमेध यज्ञ पूर्व के अन्य अश्वमेध यज्ञ सँ किछु भिन्न करबाक

इच्छा अछि । कृपया एहि के बारे उचित मार्गदर्शन करल जाय"|
" आइ तक कथा सम्राट एक दु टा अश्वमेध यज्ञ सऽ बेसी नहि कऽ पौलक परंच गाँ एखनि धरि अपक अश्वमेध कऽ चुकल छथि । हमर विचार सऽ आब अश्वमेधक बारे एक परगान हायरक व्यवस्था उचित नहि छथि । आब करक भाँति धरथि, एहि के अतिरिक्त आब गाँ विवाह कऽ गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश करथि । एक उम्र धरि कथा राजा अविवाहित नहि रहल अछि"|
"नहि गुरुदेव ! हमरा कृपया ब्रह्मचर्य व्रत के पालन करबा मे बाधा नहि आबय दिय । हम ब्रह्मचर्य व्रत के पालन करऽ चाहैत छी । गृहस्थी के जाल मे हमरा नहि बान्हू "।
राजा दुनु हाथ जोऽडि विनती करलाह एल
"ठीक थिकहु,आब जेहन राउर मान होउक"।
एकर बाद दुनु गोटे मौन रऽ गेलाह । उपरान्त राजाक उचित आदर सत्कार रल । तत्पश्चात अगस्त्य मुनि यज्ञक बारे आवश्यक निर्देश देमय लगलाह । हुनका अश्वमेध यज्ञ आयोजनक निमित्त आवश्यक परामर्श देलथि । ध्यान पूर्वक राजा सब निर्देश सुनि रहल छलाह । प्रधान आमात्य किछु-किछु लिखैत छलाह बीच बीच मे ।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

𑓓.𑓑𑓓.𑒛𑒰. 𑒫𑒱𑒣𑒱𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰- 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒦𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒲𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒝𑒦𑒰𑒩𑒧𑓂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 (𑒦𑒰𑒑-𑓕)

𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒦𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒲𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒝𑒦𑒰𑒩𑒧𑓂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠
(𑒣𑒘𑓂𑒔𑒧 𑒦𑒰𑒑)



𑒛𑒰. 𑒫𑒱𑒣𑒱𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰
(𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒏 𑒂 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏- 𑒖𑒰𑒯𑓂𑒢𑒫𑒲 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒄-𑒬𑒼𑒡𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰)

𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒦𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒲𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒝𑒦𑒰𑒩𑒧𑓂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠

(पञ्चम भाग)

(एहि सँ पूर्व महाकवि भास कृत लिखल कर्णभारम् आ कर्णक मनोव्यथा पर लिखल गेल प्राचीनतम एकांकी अछि, संस्कृत मे लिखल एहि ग्रन्थक काव्यप्रयोग धरि मैथिली अनुवाद पढ़ने रही अहाँ सब, आऽ एहि सं आगू)

स्वस्त्यस्तु गोब्राह्मणानाम्। स्वस्त्यस्तु पतिव्रतानाम्। स्वस्त्यस्तु रणेष्वपरावर्तिनां योधपुरुषाणाम्। स्वस्त्यस्तु मम प्राणकालस्य। एष भोः प्रसन्नोऽस्मि।

गौ आ ब्राह्मण क कल्याण हो, पतिव्रता स्त्री क कल्याण हो, युद्ध मे विमुख नै होऽ वला योद्धा क कल्याण हो एहि शुभावसर प्राप्त करयवला क कल्याण हो। आब हम प्रसन्न छी।

समरमुखमसह्यं पाण्डवानां प्रविश्य

प्रथितगुणगणाढ्यं धर्मराजं च बद्ध्वा।

मम शरवरवेगैरर्जुनं पातयित्वा

वनमिव हतसिंहं सुप्रवेशं करोमि ।। 14 ।।

पाण्डव क सेना क अग्रभाग मे सब क समान प्रवेश करय गुण समूह स प्रसिद्धि प्राप्त करय वला युधिष्ठिर क बान्हि क संगहि अपन तीव्र

एखन बाघ स अर्जुन के युद्धभूमि मे खसाय कँ स्यालक सिंह के मारि गेलाक उपरान्त निनादित वन के समान समस्त युद्धभूमि के सुगम बना देब।

शल्यराज! यावद्रथमारोहावः।

शल्यराज! तावत् रथ पर चढै छी।

शल्यः- बाढम्। (उभौ रथारोहणं नाटयतः।)

शल्य- ठीक दुनू चढबाक अभिनय करै छथि

कर्णः- शल्यराज! यत्रासावर्जुनस्तत्रैव चोद्यतां मम रथः।

कर्ण- जतय ओ अर्जुन छथि ओतय रथ लय चलू।

(नेपथ्ये)

नेपथ्य मे

हे कर्ण! महत्तरं भिक्षां याचमि। (भोः कर्ण! महत्तरां भिक्षां याचे।)

𑒯𑒹 𑒏𑒩𑓂𑒝 𑒣𑒻𑒒 𑒦𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒨𑒰𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲

𑒏𑒩𑓂𑒝𑓁- (𑒂𑒏𑒩𑓂𑒝𑓂𑒨) 𑒁𑒨𑒹 𑒫𑒲𑒩𑓂𑒨𑒫𑒰𑒢𑓂 𑒬𑒥𑓂𑒠𑓁।

𑒏𑒩𑓂𑒝 (𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒏) 𑒁𑒩𑒹 𑒃 𑒞 𑒧𑒯𑒢𑒲𑒨 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱

𑒬𑓂𑒩𑒲𑒧𑒰𑒢𑒹𑒭 𑒢 𑒏𑒹𑒫𑒪𑓀 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒖𑒫𑒩𑒼 𑒨𑒮𑓂𑒧𑒰𑒞𑓂𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒼 𑒧𑒯𑒰-

𑒢𑒰𑒏𑒩𑓂𑒝𑓂𑒨 𑒮𑓂𑒫𑒢𑒧𑒮𑓂𑒨 𑒡𑒲𑒩𑒢𑒱𑒢𑒠𑓀 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞𑒰𑒓𑓂𑒑𑒰 𑒃𑒫।

𑒅𑒞𑓂𑒏𑒩𑓂𑒝𑒻𑒮𑓂𑒞𑒱𑒧𑒱𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒑𑒰𑒜𑒪𑒪𑒱𑒞𑒑𑓂𑒩𑒲𑒫𑒰𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞𑒰𑒑𑓂𑒩𑒰𑒢𑒢𑒰-

𑒮𑓂𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒢𑓂𑒞𑓂𑒨𑒬𑓂𑒫𑒑𑒝𑒰𑒓𑓂𑒑𑒨𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒮𑒯𑒮𑒰 𑒨𑒰𑒢𑓂𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒧𑒨𑒻𑒞𑒹 𑒯𑒨𑒰𑓁 ।। 15 ।।

𑒃 𑒏𑒹𑒫𑒪 𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒌𑒬𑓂𑒫𑒩𑓂𑒨 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒞 𑒋𑒫 𑒃 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒕𑒻𑒏 𑒋𑒏𑒩 𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩 𑒒𑒼𑒭 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒏 𑒯𑒧𑒩 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒋𑒯𑒱 𑒒𑒼𑒛𑒰 𑒏𑒰𑒢 𑒚𑒰𑒜 𑒏𑒨 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒢𑒱𑒧𑒹𑒭 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒮𑓀 𑒑𑒩𑓂𑒠𑒢𑒱 𑒙𑒹𑒜 𑒏𑒨 𑒧𑒳𑒐 𑒏 𑒂𑒑𑒳 𑒏𑒨 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒫𑒞𑓂 𑒦𑒨 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒬𑒩𑒲𑒩 𑒣𑒩 𑒢𑒨𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒢𑒻 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒮 𑒫𑒱𑒫𑒬 𑒦𑒨 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒂𑒯𑒴𑒨𑒞𑒰𑓀 𑒮 𑒫𑒱𑒣𑓂𑒩𑓁। 𑒢 𑒢। 𑒁𑒯𑒧𑒹𑒫𑒰𑒯𑓂𑒫𑒨𑒰𑒧𑒱। 𑒦𑒑𑒫𑒢𑓂𑒢𑒱𑒞 𑒃𑒞𑓁।

𑒥𑒖𑒰𑒅𑒪 𑒖𑒰𑒅 𑒍𑒯𑒱 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒏... 𑒢𑒻 𑒢𑒻 𑒯𑒧𑒯𑒲 𑒥𑒖𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒲।

(ततः प्रविशति ब्राह्मणरूपेण शक्रः।)

ओकर बाद ब्राह्मण रूप मे इन्द्र प्रवेश करैत छथि।

शक्रः- भो मेघाः। सूर्यमेव निवर्त्य गच्छन्तु भवन्तः। (कर्णमुपगम्य) भो कर्ण! महत्तरां भिक्षां याचामि। (भोः कर्ण! महत्तरां भिक्षां याचे।)

इन्द्र- हे मेघ सूर्य संगे निवर्तित भय जाउ अहाँ, कर्ण लग जा कय हे कर्ण महत्तर भिक्षा मँगै छी।

कर्णः- दृढं प्रीतोऽस्मि भगवन्!

कर्ण हम प्रसन्न छी।

यातः कृतार्थगणनामहमद्य लोके

राजेन्द्रमौलिमणिरञ्जितपादपद्मः।

विप्रेन्द्रपादरजसा तु पवित्रमौलिः

कर्णो भवन्तमहमेष नमस्करोमि ।। 16।।

अनेक प्रतापी राजा क मुकुटमणि सँ जिनक चरणकमल शोभित अछि से कृतकृत्यता प्राप्त करय बला राजा क श्रेणी मे छथि,

ब्राह्मणक वचनामृत स पुनीत माथ बला ई कर्ण अहाँ के प्रणाम करैत अछि।

शक्रः- (आत्मगतम्) किं नु खलु मया वक्तव्यं, यदि दीर्घायुर्भवेति वक्ष्ये दीर्घायुर्भविष्यति। यदि न वक्ष्ये मूढ इति मां परिभवति। तस्मादुभयं परिहृत्य किं नु खलु वक्ष्यामि। भवतु, दृष्टम्। (प्रकाशम्) भो कर्ण! सूर्य इव, चन्द्र इव, हिमवन्त इव, सागर इव, तिष्ठतु ते यशः।

(भोः कर्ण! सूर्य इव चन्द्र इव हिमवान् इव सागर इव तिष्ठतु ते यशः।)

इन्द्र (मन मे) हमरा की कहबाक चाही, यदि दीर्घायु होउ ई कहबै त दीर्घायु होयत। यदि नै कहब त मूर्ख बूझत। त दुनू छोडि ई कहैत छी चलू देखैत छी (सस्वर सामने) हे कर्ण! सूर्य जकाँ चन्द्र जकाँ हिमालय जकाँ सागर जकाँ अहाँक यश रहय।

क्रमशः...

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓔.𑒭𑒭𑓂𑒚 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓔.𑓑.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒫𑒱𑒂𑒯-𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢

𑓔.𑓒.𑒮𑒧𑒞𑒰 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒲- 𑒯𑒧 𑒕𑒲 𑒢𑒰𑒩𑒲

४.१.राज किशोर मिश्र- विआह-वर्णन



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (ब्रिज), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,ग्राम- अरेर डीह, पो. अरेर हाट, मधुबनी

विआह-वर्णन

हमर अछि छी एक 'बेटी' क
वि आहक शुरु -दि न नि श्चित भेल,
हमहूँ त' लकि त छलहूँ बा ट,
आमंत्रण हमरा देल गेल।

पहुँचि गेलहुँ हम उचि त समय पर,
सपरि वा र, वि वा ह-स्थल,
झमि रहल छला ह आगा गे ट,
रहथि , उत्सव म ना रहल।

दुनहि सँ छलै चमकि रहल
मुख्य द्वा आर क मस्तक,
सजल वि झली बल्ब सब
बा ट रौके, सूर्य अस्तक।

नृषा का न, नर्गुला का न
म ना वि नहल छल कृत्रि म ञ्ञा न,
छा ट वह्व सरु नि नि ध नंग म,
जना , दैग छल यस्रा -नउाँ ।

रुह्य गा नग दा आन लगैग छल,
यनसि नहल हा स्ना गग -रा न,
सिं ह-हा न क' छा रा सन,
उा दखा नहल छल नि ज यस्रा न,

स्नस्कि -वि ह्वि न मंगल -घट
स्थि न दा आनक दुनु का न,
भि ष्टगा सँ लि वल दुञ्ञ -जन
जना लगै स्ना गन् ,सा उा न् ।

दुन -दुन धनि कृसी -टवूल
सजि -धजि याँ गि लगउान छल,
या हून -यनक, सृनि धा नृकुल,
नि ज -नि ज आसन यञउान छल।

ऊँव मंव छलै स्था यि न,
ला गल आसन ,नधू-ननक हगु,
स्नजन -यनि जन सँ वाँ वल नहि

छल, जगह नि ला धनक हगु।

गा कु जयन ,अका स नहि ,
यंता ल सजल छल वृहदा का न,
कनका र -मंति ग मुमन सर
चमकि नहल, कगका ग्रका न।

जगह या वि हम वँसि गेलहुँ,
वा नि क सर घुमथि वा नम्रा न,
अयना नृचि सँ लैथ ला क सर,
वटा ऽऽग नहअ ज स्वल्या हा न।

नमधी य छल ना गा ननध,
आमंत्रि ग या हृनक री अ छल,
नंग -नि नंग यनि धा न यहि नि ,
यनि चि ग सँ मि लअ अधी न छल।

कि छअ का ल वा द, संगी गक
गुमुल -ध्वनि सँ उठल अनधा ल,
नन -वनि आगी आवि गेला ह,
वँत -वा जा क, ऽऽअह छल वा ला।

की नृत्य कनेग छलैथ वनि आगी ?
आनह्व वनसि नहल छल,

न्ना म ह्र्षक शुरु -गी ग -स्नन,
मां गल्थ यनसि नह्ल छला

स्ना गग म, कथ्या गग ला कनि
कनअ लगला ह्र मंगल -ना द,
आव, ना नी गध्न सह्ा शुनू
कअदलखि ह्र ननन -यनि छनि -संना द।

वेंसि (गला ह्र नन, ऊब्वा सन यन,
अअलि ह्र कथ्या , लन ऊयमा ल,
ऊयघा ष स्लै, ऊयमा ल यह्रि नि
स' (गलथि य्रध्नय सँ दुनू नह्रा ला।

अणि थि ला कनि क ह्रगु आअल,
ळूी आनश्यक सूवना ,
रा ऊन ह्रगु य्रस्था न कनथि ,
ळूब्वा रनि खा थि , अयना ऊना ।

छलै वृह्र ब्यनस्था , रा ऊन क,
अयन सँ यनसि -यनसि सर खा ऊथ,
नंग -नि नंगक रा ऊन ला गल,
ऊन्मन रा नगी य, ना सा ऊथ।

राँ गि -राँ गि क मि ०। ळूी सर,

कोका गनहक छलै व्यंजन,
का न खा ॅॅ आ का न छा ि दी ,
ओहि सँ हो ॅॅ छल मन -गि ॐना।

यँति ग जी या नष्ट कलहि ,
कथा दा नक प्रकाश,
वडल वि धि आ संग हो ॅॅग गेल
वँदि क मंत्रा द्वा नश।

अग्नि -श्पथ लऽ जि म्मा ललहि ,
कनि आँ -वन, दा म्पत्य जी वनक,
सुख -दुः ख म, संग नि वा हऽ क,
गा कव उया य सर नि घ्नक।

र' नहल छल प्रश्रय गी ग
उरोग छल रा व -गनंग,
ला गि नहल छल प्रम -नंग,
यनि वशक अंगे -अंग।

ओहि अनमा ल वंधन क
नि वा हक अटूट प्रश्न छल,
जी वन -नश कँ जी गय क,
प्रीगि स्था , गन -मन-धन छल।

वन -कनि ऑँ कँ (श्रष्ठ ला कनि ,
रनि -रनि क' दलखि ह्व आभी र्वा द,
नि दा रला ह अनि थि गध्न द 'द',
आनि (थय क ध्यवा दा

ॐ मंगलमय वा ना वनध ,
छल दय नहल आभी ष,
'अहि वा न अखंत नहे सदा ,
वन दथि जगत् क ॐभा '

दञ क' आभी र्वचन, हमहूँ
चललहूँ सयनि वा न,
शुरु अवसन छल, रनल ,मा न म
सूखक या ना वा ना

अयन मंगद्य editorial.staff.videha@gmail.com**यन यणउ।**

४.२.समता कुमारी- हम छी नारी



समता कुमारी

हम छी नारी

हम छी नारी, हमरा अपन पहचान चाही।

माय बहिन पुतहु कनियाँ बनी,

अइ स अलग अपन एकटा नाम चाही,

पुरुखक ई समाज मं, हमरा उचित स्थान चाही।।

पूजहि छथि देवी क नौराता रूप, लेकिन घर मे ने नारी क मान।।

ओ बाहर मे नारी शक्ति पर, बड़का बड़का भाषण देहि छथि।

हुनका आब नहि सूझबाक ख्याल, हुनकर घरक नारी क हाल।।

हम कोमल छी पर अबला नहि, हम कमजोर नहि हम भवानी नहि।

कोना आब सहल नहि अछि, जहां सम्मान पहुँच नहि।।

जौं कोइ अत्याचार करत, ओकरा लेल हम दुर्गा छी।

त्यागक मूर्ति सीता त, प्रियतमा रूप मे राधा छी।।

जौं लोक मान देत त, हुनका लेल प्रेमक आहुति दे देब।

लेकिन जे अपमान करत, हुनका लेल काली रूप लेब।।

बस अछि विनती की हमर, सम्मान मान चाही।

हम छी नारी, हमरा अपन पहचान चाही।।

-समता कुमारी, शिक्षिका,समस्तीपुर , बिहार।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.संस्कृत खण्ड

३.१.आ. दीपिका- चम्पूसाहित्यस्य विलासः (चतुर्थोल्लासः)



डा. दीपिका

(संस्कृतलेखिका बदली-महाविद्यालयस्य प्राक्तनप्राध्यापिका च)

(द्वितीय उच्छ्वास अस्मिन् ग्रन्थे यानि अनेकानि वैशिष्ट्यानि दृष्टिगोचरीभवन्ति मया तेषां विवरणं प्रदत्तम्। प्रकृते उच्छ्वास वर्णनवैचित्र्यस्य नैषधदृशा तुलनात्मकं विवरणं प्रस्तूयते।)

सामान्येन नलचम्पूग्रन्थे नैषधदृशा क्वचित्साम्यं तु क्वचित् वैषम्यं धारयति।

साम्यम्

*नैषधे नलदमयन्त्योः प्रणयवर्णनम् अस्ति तथैव नलचम्पूग्रन्थे नलदमयन्त्योः प्रणयवर्णनम् अस्ति

*निषधदेशस्य[1] वर्णनम् उभयत्र वर्तते

*हंसवर्णन[2] वर्णनम् उभयत्र वर्तते

नैषधम्

*नैषधे नलदमयन्त्योः प्रणयवर्णनम् उभयत्र अस्ति विवरणम् अत्यन्तं भिन्नं दृश्यते।

*नैषधीयचरिते नलः एकान्तवासाय उपवनं याति[3] अत्र नलः शूकरवधार्थं[4] गच्छति निषधदेशस्य निषधानगर्याः[5] वर्णनं केवलं अत्रैव वर्तते न तु नैषधीयचरिते प्राप्यते

*हंसवर्णन[6] वर्णनम् उभयत्र वर्तते किन्तु नैषधीयचरिते हंसविलापा[7] दृश्यते किन्तु अत्र आकाशवाणी भवति यत् अयं हंसः एव दमयन्तीं प्रति तव सहायकः भवति।

*एवमेव नलचम्पूग्रन्थे हंसिनी नलं धिक्करोति।

*नैषधीयचरिते प्राकृतिकवस्तूनां पदे-पदे वैलक्षण्येन वैचित्र्यवर्णनं वर्तते[8] किन्तु नलचम्पूग्रन्थे वर्षर्तुनामवदं[9] वर्णनम्

इत्थं चम्पूकाव्यस्य विशिष्य नलचम्पूवर्णनं नैषधदृशा अस्माभिः दृष्टम्। विस्तृतविवरणार्थं ग्रन्थद्वयावलोकनमेव वरमिति शम् ।

---

[1] नलस्य पृष्टा निषधागता गुणान्मिषेण दूतद्विजवन्दिचारणाः ।
निपीय तत्कीर्तिकथामथानया चिराय तस्थे विमनायमानया ॥ १.३१ ॥

[2] न वासयोग्या वसुधेयमीदृशस्त्वमङ्ग यस्याः पतिरुज्झितस्थितिः ।
इति प्रहाय क्षितिमाश्रिता नभः खगास्तमाचुक्रुशुरारवैः खलु ॥ १.१२८ ॥

[3] अकारि तेन श्रवणातिथिर्गुणः क्षमाभुजा भीमनृपात्मजालयः ।
तदुच्चधैर्यव्ययसंहितेषुणा स्मरेण च स्वात्मशरासनाश्रयः ॥ १.४४ ॥

[4] किं स्यादङ्गनयनैः स्फटिकयाद्विनद्धं दधदीर्घयाः।

[5] तस्य विषयस्य मध्ये निषधा नामास्ति जनपदः प्रथितः।

[6] यथाधिलक्ष्मीमुषि कलियल्लल निनंसुहंसीकलनादसादनम् ।
स तत्र चित्रं विचरन्तमन्तिके हिरण्मयं हंसमबोधि नैषधः ॥ १.११७ ॥

[7] मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी ।
गतिस्तयोरेष जनस्तमर्दयन्नहो विधे त्वां करुणा रुणद्धि न ॥ १.१३७ ॥

[8] ततो लता गन्धवहेन चुम्बिता करम्बिताङ्गी मकरन्दशीकरैः ।
दृशा नृपेण स्मितशोभिकुड्मला दरादराभ्यां दरकम्पिनी पपे ॥
१.८५ ॥

[9] अथ कदाचिदुन्नमय्याधनान्दन्....

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।



८. विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

सूचना

१

"विदेहक लोकप्रिय साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"

आगामी दू टा विशेषांक लेल जनक सुझाव आयल उत्तम सँ "प्रेमलता मिश्र प्रेम" आ "शरदिन्दु चौधरी" ई दू नामक चयन भेल। हिनका दुनू गोटे पर दुनू विशेषांक विदेहक अलग-अलग अंकमे रहत। दुनू विशेषांक कार्तिक धवल त्रयोदशी धरि ई-प्रकाशित करबाक विचार अछि मुदा से निर्णय करत जँ न्यूनतम आलेख संख्या भेट जाय संगहि ओहि स्तरक हाउसक टाइप कएल रचना जनक बेसी रहत तखन जखनि ई दुनू विशेषांक ई-प्रकाशित भ' सकत। विदेह मासमे दू बेर (१ आ १५ तिथिकेँ) ई-प्रकाशित होइत अछि।
विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक डेटा-आर्काइव/ थीम-आधारित डेटा-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ई सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकर डेटा-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ई सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ई सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु।
अहाँसँ आग्रह जे जनक जखनि हृदय "प्रेमलता मिश्र प्रेम" आ "शरदिन्दु चौधरी" दुनू गोटेक काज, रचना-संपादन, संस्मरण आ अन्य रचनात्मक कार्यपर सभ प्रकारक रचना (संस्मरण, आलोचना, समालोचना, समीक्षा आदि) editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

घोषणा: प्रेमलता मिश्र प्रेम पर विशेषांक विदेहक ३५७म अंक मास ०१ नवम्बर २०२२ आ शरदिन्दु चौधरी पर विशेषांक विदेहक

३५८म अंक मास १५ नवम्बर २०२२ कें बहार हएत। १५ नवम्बर २०२२ क लगाति आगामी नव विशेषांकयन निर्णय हएत। अहाँसँ ओ लेल सुझाव सादर आमंत्रित अछि।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह साक्षात्कार" शृंखला

विदेह अपन जीवित रचनाकार पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर आ (६) केदार नाथ चौधरी विशेषांक निकालने अछि।

अही सन्दर्भमे छबो साहित्यकार पर "विदेह साक्षात्कार" शृंखला अन्तर्गत "साक्षात्कार" आमंत्रित कयल जा रहल अछि।

"विदेह साक्षात्कार" शृंखलाक विवरण निम्न प्रकार अछि:

(१) इच्छुक लेखक उपरोक्त कोनो एक रचनाकार पर अपन साक्षात्कार लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छथि। साक्षात्कार लिखबाक अवधि सामान्यतः एक मास रहत।

(२) विदेह छह रचनाकारपर छह लेखकक नाम साक्षात्कार लिखबाक लेल चयनित कऽ ओकर सार्वजनिक घोषणा करत।

"विदेह पुरस्कार" देबाक नियम:

(१) पुरस्कार पूर्ण रूपेँ रचनाकारपर केन्द्रित हुअए। साहित्य अकादमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत रूपेँ देल पुरस्कार/ सम्मानमे लेखक सम्बन्धी आ व्यक्तिगत प्रसंग जाति कए रचनाकारक बदला अपन-आत्म-प्रशंसा लिखैत छथि। "विदेह पुरस्कार" फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल सन रहत। फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल एहन एकमात्र टूर्नामेंट अछि जाहि काल "ओपनिंग" वा "क्लोजिंग" सेरेमनी नै होइत छै आ एकर कारण छै जे "ओपनिंग" वा "क्लोजिंग" मे टूर्नामेंटमे नै खेला रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि होइत छथि आ खेलाड़ी सँ दूर चलि जाइत अछि। फीफा मात्र आ मात्र फुटबाल खेलाड़ीपर केन्द्रित रहैत अछि से ओकर टूर्नामेंट "ओपनिंग सेरेमनी" नै बरन् सोझे "ओपनिंग मैच" सँ आरम्भ होइत अछि आ ओकर समापन "क्लोजिंग सेरेमनी"सँ नै बरन् "फाइनल मैच आ पुरस्कार"सँ खतम होइत अछि आ ओकर मात्र आ मात्र खेलाड़ी रहैत छथि। तहिना "विदेह पुरस्कार" मात्र आ मात्र ओ "छवा रचनाकार"पर केन्द्रित रहत आ कोनो सम्बन्धी आदि जाति कऽ ओकर रचनाकारसँ अपनापन केन्द्रित करबाक अनुमति नै रहत।

(२) पुरस्कार लेल "विदेह पटल"मे उपलब्ध सामग्रीक सङ्गे सहित उपयोग कएल जा सकैए।

(३) विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' ई-पत्रिकामे प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-

प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ई ई-पत्रिकामे रचना रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै।

(४) "विदेह भाषापाक"क फॉर्मेट: रचनाकारक परिचय (रचनाकारक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवरण सहित) आ रचनावली (समीक्षा सहित)।

घोषणा: "विदेह भाषापाक" शृंखला अन्तर्गत (१) राजनन्दन लाल दास जी पर भाषापाक निर्मला कर्ण, (२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर पर मुन्नी कामत आ (३) केदार नाथ चौधरी पर प्रेम शंकर मिश्र द्वारा लिखल जायत। मैथिली पुत्र प्रदीप पर "विदेह भाषापाक" लिखताह प्रेमशंकर झा "पवन"।

शेष ३ गोटपर निर्णय शीघ्र कएल जायत।

घोषणा २: ओना तँ मैथिली पुत्र प्रदीप पर विदेह विशेषांक नै निकालल अछि, मुदा हुनकर अवदान कँ देखैत प्रेमशंकर झा "पवन"क हुनका ऊपर "विदेह भाषापाक" लिखबाक विचार आयल तँ ओकरा स्वीकार कयल गेल।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

विदेह पॉडकास्ट लिस्ट

विदेह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लेल अपन whatsapp नम्बर हमर whatsapp no +919560960721 पर पठाउ, अहाँक प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत।

४

विदेहक "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि।

१.साहित्य, कला आ सरकारी अकादमी:-

(क) पुरस्कारक राजनीति

(ख) सरकारी अकादमीमे पैसबाक गएर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सभागुट आ अकादमी कर काज करबाक तरीका

घ) सरकारी सभाक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानान्तर सभाक कार्यपद्धति

ङ) अकादमी पुरस्कारमे पाइ रैकेट: मिथक वा यथार्थ

२.व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

३.प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण

५.स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, नियम, मंच-माला-माल्लक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा

७.लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी कोन चुनाव , कीर्त्तनकार आ तकरा पाछूक राजनीति

८.दलित एवं लेखिका सबहक संग द्वेष-भाव आ ठाकुर गोष्ठीक विविध टीका

९. कोनो आन विषय।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA



